SHRI SATISH AGARWAL: No, Madam. It has to be taken up because tomorrow is the deadline.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Okay.

SHRI N.K.P. SALVE (Maharashtra): Madam, I must submit that we have no objection whatsoever to the discussion on the statutory resolution on the Jammu and Kashmir being taken up immediately because tomorrow is the last date. But, then the debate on the hike in the prices of petrol and other petroleum products is equally important. Therefore, I submit that it must be taken up tomorrow because the day after again we have a Calling Attention.

SHRI SATISH AGARWAL: We will take it up tomorrow.

SHRI N.K.P. SALVE: So, I submit let there be a ruling that it will be taken up tomorrow....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): About what?

SHRI N.K.P. SALVE: About the price-hike of the petrol and other petroleum products. This is a very important matter.

SHRI SATISH AGARWAL: I have no objection to it.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): If you don't have any objection and Mr. Agarwal agrees to your suggestion, then the Chair also does not have any objection. We will take it up tomorrow. Now, we will continue the discussion on the statutory resolution for approving the continuance in force of the proclamation under article 356 in relation to the State of Jammu and Kashmir. Shri Md. Salim.

STATUTORY RESOLUTION APPROVING THE CONTINUANCE IN FORCE OF THE PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 IN RELATION TO THE STATE OF JAMMU AND KASHMIR—Contd.

श्री मोहम्मद सलीम (पश्चिम बंगाल): मैडम, वाइस चेयरमेन, मैं कल इस सिलसिले में अपनी बात रख ही रहा था कि होम मिनिस्टर साहब को अपनी स्टेटमेंट देनी थी और जिसकी वजह से मुझे अपनी बात को इनकम्पलीट रखना पड़ा।

मैडम, मैं कल टुरिज्म के बारे में कह रहा था, क्योंकि जेना साहब यहां थे, तो टुरिज्म के बारे में कश्मीर की मैं कुछ मिसाल दे रहा था कि किस तरह से वहां बदहाली है। सिर्फ टेरारिज्म की वजह से नहीं, मिलिटेन्सी की वजह से नहीं, सरकारी जो अफसरान हैं वहां पर वह भी बदहाली के लिए जिम्मेदार हैं और जो काम होना चाहिए इस सरकारी डिपार्टमेंट में वह सही ढंग से नहीं हुआ। चूंकि आज जेना साहब यहां नहीं हैं, इसलिए मैं टुरिज्म पर नहीं बोलता।

मैडम, मैं फिर वापस आ रहा हूं जो मैक्सिमम आटोनोमी का सवाल किया गया है। मैं इस बात को फिर दोहरा रहा हूं कि सी०एम०पी० में जो कमिटमेंट है और प्रधानमंत्री ने भी जो बात रखी है, उसके लिए हुकूमत को चाहिए कि उसका खुलासा करे और चुनाव से पहले ही करे। इसमें किसी ऐसे शख्स को, ऐसे कोई स्टेटमेंट नहीं करने चाहिएं, जो सरकार की तरफ से हो, जिससे कि कनफ्यूजन बढ़े। जम्मू कश्मीर की बदनसीबी यह है, हमारे मुल्क की बदनसीबी यह है, कि पिछले कई सालों से एक तरफ तो जो लोग वहां के हालात को बिगाड़ना चाहते हैं वह तो बिगाड़ते ही रहते हैं और वहां अगर कुछ ऐसा माहौल बनता है तो उस वक्त हालात को बिगाड़ने के लिए न सिर्फ सरहद के पार के लोग बल्कि सरहद के अंदर के लोग भी, जो कुछ ऐसे लोग हैं, कुछ ऐसा मंतर तैयार करते है, कुछ ऐसा सवाल आ खड़ा हो जाता है कि वहां के लोग फिर से शक के शिकार हो जाते है कि हमें कहां तक इंसाफ मिलने वाला है, कहां तक हमें जम्हूरियत मिलने वाली है। इसलिए ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिए। अभी एक शख्स हुकूमत की तरफ से जो हैं, उन्होंने कह दिया कि क्या है, कैसे है। ऐसा नहीं कहना चाहिए। जब आप मैक्सिमम आटोनोमी कह रहे हैं, तो उसका आपको थोड़ा खुलासा कर देना चाहिए। हमारी यह मांग है कि हुकूमत इस बात का खुलासा करे असेम्बली चुनाव से पहले ताकि एक

सिक्योरिटी माहौल तैयार हो, बहस का मुद्दा तैयार हो और उसके बाद लोग जो है इसमें थोड़ा ज्यादा से ज्यादा हिस्सा ले सकें।

मैडम, दूसरी तरफ फ्लड की वजह से, वहां जो बाढ़ आई है, उससे लोगों को परेशानी का शिकार होना पड़ा है। मैं इस बात को सराहता हूं कि हुकूमत की तरफ रिलीफ के लिए काम किया गया। प्राइम मिनिस्टर भी गए, लेकिन वह काफी नहीं है। हर जगह, फ्लड कहीं भी होती है तो सेंट्रल टीम जाती है असेस करने के लिए। प्राइम मिनिस्टर साहब जब गए तो उनके साथ बहुत से आफीसर भी गए, मंत्री भी गए, लेकिन एक प्रोपर टीम भेजी जानी चाहिए, जो वहां असेस कर सके नुकसान का, जिससे सही मायनों में कुछ ऐसे एकदामात उठा सकें कि किस तरह से वहां के लोगों को राहत मिले।

अभी मंत्री जी ने रेल बजट रखा। रेलवे मंत्री जी ने कहा कि ऊधमपुर तक, ऊधमपुर से श्रीनगर, बारामूला तक का रेल का जो मामला है उसको तवज्जुह देंगे। उसको थोड़ा ठीक से करना चाहिए। मैं उसकी तफसील में अभी नहीं जाता, जब रेलवे बजट के बारे में चर्चा चलेगी तब उस समय हम लोग इस पर बात करेंगे। लेकिन सही मायनों पर बहुत सी शिकायत है इस रेल के काम को और भी आगे बढ़ाने के मामले में। दूसरी बात यह है कि कश्मीर के लोग, अभी जो पाक आकूपाइड कश्मीर है वहां जिस तरह से रिग हुआ चुनाव, वहां के लोग जो उम्मीद लगाए हुए बैठे थे, पाकिस्तान की तरफ देख रहे थे, उनको थोड़ी मायूसी हुई है। तो दिस इज़ दि प्रॉपर टाइम जब हम उनको यह बता सकते हैं कि आप उधर सरहद के उस पार नहीं देख सकते, आपको देखना पड़ेगा सरहद के इस पार और यह अच्छा वक्त है क्योंकि लोग रिज़िलिऐंट हो रहे हैं वहां से, पाकिस्तान का जो रिग चुनाव हुआ उससे खासकर के, लेकिन जब हम एटॉनमी की बात करते हैं जो उसके तो तीन रीज़न है, कश्मीर वैली के साथ-साथ जम्मू है, लद्दाख है, उनके साथ इंसाफ होना चाहिए, बैलेंस होना चाहिए, उनका जो रीज़नल एटॉनमी का मामला है, हमें उसको भी ध्यान में रखना चाहिए।

आखिर में मैं यह कहूंगा कि हमारे गुजराल साहब, फॉरेन अफेयर्स मिनिस्टर हैं, हमारे हाउस के लीडर हैं, यहां आज है नहीं, लेकिन जो आफर्स पाकिस्तान की तरफ से, चाहे जैसे भी हो, लिप सर्विस ही को, लेकिन दिया गया, फिर यहां से भी जो जेस्चर दिखाए जा रहे हैं, तो इंडो-पाक डायलॉग ओपन करने की बात है, हर मामले में, वह कश्मीर सिर्फ नहीं, पूरे हिन्दुस्तान, पूरे सब-कांटीनेंट, हमारे सार्क कंट्रीज़ के जो मुल्क हैं, उनके अंदर थोड़ा आपसी भाईचारा और बढ़ना चाहिए, तालमेल बैठना चाहिए लेकिन इसके लिए कश्मीर एक मुद्दा बना हुआ है इंडो-पाक मामले में। तो अगर यह डायलॉग शुरू होता है, इसलिए भी और सही वक्त है कि अगर हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के अंदर डायलॉग बनते हैं और आपस में बातचीत बढ़ती है, हमारे दोनों के रिलेशन्स अगर बढ़ते हैं तो हम इस पाकिस्तान के मामले से निबट सकते हैं, जो कश्मीर में मदाखलत या परेशानी हो रही है, उसको इससे हम निबटा पाएंगे।

तो मैं और ज्यादा वक्त न लेते हुए केवल एक-दो बातें कहना चाहता हूं कि प्राइम मिनिस्टर साहब ने कल जो ऐलान किया कि सितम्बर के अंदर असैम्बली इलेक्शन प्रोसैस को हम कम्प्लीट करेंगे, मैं उसका स्वागत करता हूं। कमिटमेंट जो है सी०एम०पी० का मैक्सिमम् एटॉनमी के बारे में, मैं उसका स्वागत करता हूं लेकिन यह मांग करता हूं कि असेम्बली चुनाव का प्रोसैस शुरू करते वक्त सरकार इस बात को ध्यान में लाए कि क्या एटॉनमी होगी, कैसी होगी, उसके थोड़े वर्क को आप खोल दें। सिर्फ जिल्द दिखाने से काम चलने वाला नहीं है, जहां जिल्द को हटाकर के कागज़ को खोलकर के अंदर जो वर्क है, वह पढ़ने का वक्त आया है ताकि उनको पता चले कि हम क्या चाह रहे हैं। वहां के लोगों के अंदर जो कांफिडेंस बिल्डिंग जो मैज़र्स है, उसको थोड़ा ठीक से लिया जाए, जो जेस्चर्स प्राइम मिनिस्टर ने दिखाया है, चाहे वहां जाकर के हो, फ्लड रिलीफ के बारे में हो या वहां से मिनिस्टर आफ स्टेट फार होम अफेयर्स करके हो, उसको और भी आगे बढ़ाने की जरूरत है और वह पोलिटिकल वातावरण, जम्हूरी माहौल बन सकता है अगर हम और कोई फाउल नहीं करें तो। इससे पहले मैंने यह बात इसलिए कही फाउल करने की कि कई बार ऐसा हुआ कि माहौल थोड़ा अच्छा, सुधर रहा था लेकिन कुछ लोग ऐसे है, हमारे मुल्क में भी है बाहर भी हैं, जो यह नहीं चाहते कि कश्मीर का माहौल ठीक हो जाए। वह तो साजिश करते रहते हैं, हम कहीं इस साजिश का शिकार न हो जाए। शुक्रिया।

†[श्री मोहम्मद सलीम "पेशमी मंत्रालय": मैडम वाइस चेयरमैन - मैं कल इस सिलसिले में अपनी बात रख रहा था माननीय मुख्यमंत्री साहब]

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

پچھلے کئی سالوں سے ایک طرف تو جو لوگ وہاں کے حالات بگاڑنا چاہتے ہیں وہ تو بگاڑتے ہی رہتے ہیں اور وہاں اگر کچھ ایسا ماحول بنتا ہے تو اسوقت حالات تو بگاڑنے کیلئے نہ صرف سرحد پار کے لوگ بلکہ سرحد کے اندر کے لوگ بھی۔ جو کچھ ایسے لوگ ہیں کچھ ایسا منتر تیار کرتے رہتے ہیں۔ کچھ ایسا سوال آکھڑا ہو جاتا ہے کہ ہم وہاں کے لوگ پھر سے شک کے شکار ہو جاتے ہیں کہ ہمیں کہاں تک انصاف ملنے والا ہے کہاں تک ہمیں جمہوریت ملنے والی ہے۔ اسلئے کوئی ایسی بات نہیں ہونی چاہئے۔ ابھی ایک شخص حکومت کی طرف سے جو ہے انھوں نے کہہ دیا کہ کیا ہے کیسے ہے۔ ایسا نہیں کہنا چاہئے۔ جب آپ میکسیمم آٹونومی کی بات کہہ رہے ہیں تو اسکا آپکو تھوڑا سا خلاصہ کر دینا چاہئے۔ ہماری یہ مانگ ہے کہ حکومت اس بات کا خلاصہ کرے اسمبلی چناؤ سے پہلے تاکہ ایک سیاسی ماحول تیار ہو۔ بحث کا مدعا تیار ہو اور اسکے بعد لوگ جو ہیں اسمیں تھوڑا زیادہ حصہ لے سکیں۔

میڈم۔ دوسری طرف فلڈ کی وجہ سے۔ وہاں جو باڑھ آئی ہے۔ اس سے لوگوں کو پریشانی کا شکار ہونا پڑا ہے۔ کو اپنی اسیسٹمنٹ دینی تھی اور جسکی وجہ سے مجھے اپنی بات کو ان کمپلیٹ رکھنا پڑا۔

میڈم۔ میں کل ٹورزم کے بارے میں کہہ رہا تھا کیونکہ جینا صاحب یہاں تھے تو ٹورزم کے بارے میں کشمیر کی میں کچھ مثال دے رہا تھا کہ کسطرح سے وہاں بدحالی ہے۔ صرف ٹورزم کی وجہ سے نہیں ملیٹینسی کی وجہ سے نہیں سرکاری جو افسران ہیں وہاں پر وہ بھی بدحالی کیلئے ذمہ دار ہیں اور جو کام ہونا چاہئے اس سرکاری ڈیپارٹمنٹ میں وہ صحیح ڈھنگ سے نہیں ہوا۔ کیونکہ آج جینا صاحب یہاں نہیں ہیں۔ اسلئے میں ٹورزم پر نہیں بولتا۔

میڈم میں پھر واپس آرہا ہوں۔ جو میکسیمم آٹونومی کا سوال کیا گیا ہے۔ میں اس بات کو پھر دہرا رہا ہوں کہ سی۔ ایم۔ پی میں جو کمیٹمنٹ ہے اور پردھان منتری نے بھی جو بات کہی ہے۔ اسلئے سے حکومت کو چاہئے کہ اسکا خلاصہ کرے اور چناؤ سے پہلے ہی کرے۔ اسمیں کسی ایسے شخص کو ایسے کوئی اسیسٹمنٹ نہیں کرنے چاہئے جو سرکاری طرف سے ہوں۔ جسمیں سے کہ کنفیوزن بڑھے۔ جموں کشمیر کی بدنصیبی یہ ہے ہمارے ملک کی بدنصیبی یہ ہے کہ

پاکستان کی طرف دیکھ رہے تھے۔ انکو تھوڑی مایوسی ہوئی ہے۔ تو دس از دی بیسٹ ٹائم جب ہم انکو یہ بتا سکتے ہیں کہ آپ ادھر سمر حد کے پار نہیں دیکھ سکتے۔ آپکو دیکھنا پڑیگا سرحد کے اس پار اور یہ اچھا وقت ہے کیونکہ لوگ ریزیلیئنٹ ہو رہے ہیں وہاں سے پاکستان کا جو رنگ چناؤ ہوا اس سے خاص ہوگا۔ لیکن جب ہم آٹونومی کی بات کرتے ہیں تو اسکے جو تین ریزن ہیں۔ کشمیر ویلی کے ساتھ ساتھ جموں ہے لداخ ہے۔ انکے ساتھ انصاف ہونا چاہیئے بیلنس ہونا چاہیئے۔ انکا جو ریجنل آٹونومی کا معاملہ ہے۔ ہمیں اسکو بھی دھیان میں رکھنا چاہیئے۔

آخر میں میں یہ کہوں گا کہ ہمارے گجرال صاحب فارن افیئرس منسٹر ہیں۔ ہمارے ہاؤس کے لیڈر ہیں۔ یہاں آج ہیں نہیں۔ لیکن جو آفر س پاکستان کی طرف سے چلا ہے جیسے بھی ہو۔ لیٹ سروس ہی ہو۔ لیکن دیا گیا۔ پھر یہاں سے جو چیز دکھائے جا رہے ہیں تو انڈو پاک ریلیشن اوپن کرنے کی بات ہے ہر معاملے میں۔ وہ کشمیر صرف نہیں۔ پورے ہندوستان پورے سب کانٹی نینٹ۔ ہمارے "سارک" کنٹریز کے جو ملک ہیں۔ انکے اندر تھوڑا میں اس بات کو سراہتا ہوں کہ حکومت کی طرف سے ریلیف کیلئے کام کیا گیا پرائم منسٹر بھی گئے۔ لیکن وہ کافی نہیں ہے۔ ہر جگہ۔ فلڈ کہیں بھی ہوتی ہے۔ تو سینٹرل ٹیم جاتی ہے۔ اسیس کرنے کیلئے پرائم منسٹر صاحب گئے تو انکے ساتھ بہت سے آفیسر بھی گئے۔ منتری بھی گئے۔ لیکن ایک پرائم ٹیم بھیجی جانی تھی۔ جو وہاں اسیس کر سکے۔ نقصان کا جس سے صحیح معنوں میں کچھ ایسے اقدامات اٹھا سکیں کہ کسان سے وہاں کے لوگوں کو راحت ملے۔

ابھی منتری جی نے ریل بجٹ رکھا۔ ریلوے منتری جی نے کہا کہ اودھم پور تک اودھم پور سے سری نگر تک۔ جارہ مولہ تک ریل کا جو معاملہ ہے اسکو توجہ دینگے۔ اسکو تھوڑا اٹینشن سے کرنا چاہیئے۔ میں اسکی تفصیل میں ابھی نہیں جاتا۔ جب ریلوے بجٹ کے بارے میں چرچہ چلے گی تب اس سے ہم لوگ اس پر بات کرینگے۔ لیکن صحیح معنوں پر بہت سی شکایت ہے اس ریل کے کام کو اور بھی آگے بڑھانے کے معاملے میں۔ دوسری بات یہ ہے کہ کشمیر کے لوگ۔ ابکی ابھی جو پاک آکوپائیڈ کشمیر ہے وہاں جسطرح سے رک رہا چناؤ وہاں کے لوگ جو امید لگائے ہوئے بیٹھے تھے

والا نہیں ہے۔ ذرا جلد کو ہٹا کر کے۔ کاغذ کو کھول کر کے اندر جو ورق ہیں وہ پڑھنے کا وقت آیا ہے تاکہ انکو پتہ چلے کہ ہم کیا چاہ رہے ہیں۔ وہاں کے لوگوں کے اندر جو کانفیڈنس بلڈنگ جو میزرس ہے اسکو تھوڑا ٹھیک سے لیا جائے جو جیسچر پرائم منسٹر نے دکھایا ہے چاہے وہاں جائز کے ہو۔ فلڈ ریلیف کے بارے میں ہو یا وہاں سے منسٹر آف اسٹیٹ فار ہوم افیئرس میں کرنے ہو اسکو اور بھی آگے بڑھانے کی ضرورت ہے اور وہ پولیٹیکل وِل تاورن۔ جمہوری ماحول بن سکتا ہے اگر ہم اوور کی فاؤل نہ کریں تو۔ اس سے پہلے میں نے یہ بات اسلئے بھی فاؤل کرنے کی کہ کئی بار ایسا ہوا کہ ماحول تھوڑا اچھا سدھر رہا تھا لیکن کچھ لوگ ایسے ہیں ہمارے ملک میں بھی ہیں باہر بھی ہیں جو یہ نہیں چاہتے کہ کشمیر کا ماحول ٹھیک ہو جائے۔ وہ تو سازش کرتے رہتے ہیں۔ ہم کہیں اس سازش کا شکار نہ ہو جائیں۔ شکریہ۔

"ختم شد"

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया (बिहार): उपसभापाल ध्यक्ष महोदया, मैं प्रधान मंत्री द्वारा परिनियत संकल्प जो सदन के सामने रखा गया है, उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं।

آپ سبھا کا چاہ اور بڑھنا چاہیئے۔ تاکہ میل بیٹھنا چاہیئے لیکن اسکے لئے کشمیر ایک مدعا بنا ہوا ہے۔ اندرونی معاملہ میں تو اگر یہ ڈائیلاگ شروع ہوتا ہے۔ اسلئے بھی اور صحیح وقت ہے کہ اگر ھندوستان اور پاکستان کے اندر ڈائیلاگ بنتے ہیں اور آپسی میں بات چیت بڑھتی ہے ہمارے دونوں ریلیشنس اگر بڑھتے ہیں تو ہم اس پاکستان کے معاملے سے نپٹ سکتے ہیں۔ جو کشمیر میں مداخلت یا پریشانی ہو رہی ہے اس سے ہم نپٹا پائینگے۔

تو میں اور زیادہ وقت نہ لیتے ہوئے۔ لیکن ایک دو باتیں اور کہنا چاہتا ہوں کہ پرائم منسٹر صاحب نے کل جو اعلان کیا کہ ستمبر کے اندر اسمبلی الیکشن پروسس کو ہم کمپلیٹ کرینگے۔ میں اسکا سوالگت کرتا ہوں۔ کمٹمینٹ جو ہے سی۔ ایم۔ بی کا میکسیمم ایٹانومی کے بارے میں میں اسکا سوالگت کرتا ہوں لیکن یہ مانگ کرتا ہوں کہ اسمبلی چناؤ کا پروسیس شروع کرتے وقت سرکار اس بات کو دھیان میں لائے کہ کیا ایٹانومی ہوگی۔ کیسی ہوگی اسکے تھوڑے ورق کو آپ کھول دیتی۔ صرف جلد دکھانے سے کام چلنے

उपसभाध्यक्ष महोदया, आज कश्मीर के बारे में इस संकल्प के माध्यम से एक तरफ तो राष्ट्रपति शासन के समय को हम और 6 महीने के लिए बढ़ा रहे हैं और दूसरी तरफ हम वहां लोकशाही को कायम करने के लिए कदम भी उठा रहे हैं। ऐसे कदम उठाने की सबसे बड़ी पहल हमारी सरकार ने की थी, जिसका फल यह हुआ कि आज लोक सभा में 6 संसद सदस्य जम्मू-कश्मीर से जो आते थे, जो बहुत दिनों से अपने अधिकारों से वंचित थे, उनको अपने अधिकार वापिस मिले हैं और वह आज लोक सभा में भारत के और सदस्यों के साथ बैठकर देश के प्रति, देश के विकास के प्रति विचार कर रहे हैं। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है और इस उपलब्धि का जो फल है उसके लिए अगर किसी को सराहा जाना चाहिए तो वह जम्मू-कश्मीर की जनता को सराहा जाना चाहिए कि उन्होंने हिम्मत की और ए०के० 47 व ए०के० 57 की नोक पर, ग्रेनाइट और रॉकेट लॉचं की नोक पर, अपनी जान की बाजी लगाकर वे घर से निकलकर पोलिंग बूथ पर पहुंचे और वहां उन्होंने अपने मनपसंद प्रतिनिधि चुने और उनको लोक सभा में भेजा। यह उनकी जीत है। बुलेट और बैलट के बीच की लड़ाई में यह बैलट की जीत है। इस पर बैलट की जीत को देखकर पाकिस्तान ईर्ष्या में पागल हो गया है और पाकिस्तान ने अपनी आई०एस०आई० की गतिविधियां फिर से जम्मू-कश्मीर में शुरू कर दी हैं और उसका पहला परिचय उस दिन मिला जब बेनजीर ने कहा कि हमने पहला उपहार इस देश के प्रधानमंत्री को दिया है। जिस दिन प्रधानमंत्री वहां गए और वापस लौटे, उसी दिन बटाकोट विलेज में बिहार के जो मजदूर उस इलाके में कार्य कर रहे थे, वहां 10 मजदूरों को अलग करके उन्हें गोलियों से उड़ा दिया गया। महोदया, यह दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था फिर से वहां पैदा करने की कोशिश की जा रही है। इसलिए हमारी सरकार को और देश के हरेक राजनीतिक दल को बिना किसी प्रतिद्वंदिता के एकजुट होकर वहां किस तरह से लोकशाही कायम हो सकती है, इसका रास्ता ढूंढना चाहिए।

वहां जो भी मसला है वह पाक आकुपाइड कश्मीर का है और पाक आकुपाइड कश्मीर को खाली कराकर हम एक्चुअल लाईन ऑफ कंट्रोल वहां तक ले जाएं, यह सबसे बड़ा मसला है। इसका फैसला भी पाक आकुपाइड कश्मीर की जनता समय-समय पर वहां की हुकूमत के खिलाफ जेहाद करके करती रहती है। अब देखने की बात यह है कि हमारे कार्यकलाप उनको कितना आकर्षित कर सकते हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदया, अगर आप कश्मीर जाएं तो आप पाएंगी कि अगर वहां कोई आदमी अच्छा भारतवासी भी है तो उसके मुंह से एक बात निकलती है कि हमारे लिए दिल्ली बहुत दूर है, इस्लामाबाद नज़दीक लगता है। क्यों लगता है? क्योंकि जब कोई दुःख की या तकलीफ की घड़ी आती है तो इस्लामाबाद से रिएक्शन पहले आता है, दिल्ली से देर में आता है। दिल्ली को तुरंत रिऐक्ट करना चाहिए। दिल्ली को तुरंत उनकी मदद करने के लिए उपस्थित रहना चाहिए। महोदया, वहां की जनता की हालत तो कभी-कभी एक तरफ डिच और दूसरी तरफ डेविल जैसी हो जाती है। जैसे गेहूं के साथ घुन भी पिस जाता है उसी तरह इन लोगों पर एक तरफ जो आतंकवादियों का दबाव और दूसरी तरफ हमारे सुरक्षाकर्मियों का दबाव रहता है।

उपसभाध्यक्ष महोदया, यह बड़े गौरव की बात है कि बड़ा संभलकर हमारे सुरक्षा सैनिकों ने, हमारी आर्मी ने, हमारे बी०एस०एफ० के जवानों ने बड़ी समझ बूझ कर परिचय देते हुए लोगों में सेंस ऑफ सिक्योरिटी पैदा की जिससे लोग घर से बाहर आकर कम से कम बैलट-बॉक्स तक पहुंच सके। यह उनकी दक्षता का परिचायक है।

उपसभाध्यक्ष महोदया, सेंस ऑफ नेशनेलिज्म वहां के लोगों में भी है। बार-बार विभिन्न राजनीतिक दल आरोप और प्रत्यारोप करते हैं कि वे नेशनेलिस्ट नहीं हैं। यह बात गलत है। कश्मीर के लोग राष्ट्रवादी हैं और वे भी चाहते है कि जैसे माहौल में सारे भारत के लोग रह रहे हैं, वैसे माहौल में वे भी रहें। पर उनकी जो जोग्रोफिकल या टोपोग्रोफिकल कंडीशन है, उसमें उनके सामने बहुत सी मजबूरियां आ जाती है जिसके कारण वे चुप रहते हैं। चुप रहने का कारण यह नहीं है कि वे भारतवासी नहीं हैं। वे पूरे भारतवासी हैं पर जो नया कन्फ्यूजन राजनीतिक दल खड़ा कर देते हैं, कभी कोई दल 370 को विदड्रा करने की बात करता है और कभी कोई दल और ऑटोनॉमी देने की बात करता है। यह दोनों सपनों के सौदागर है। यहे दोनों सपने दे रहे हैं। न तो वहां से धारा 370 विदड्रा हो सकती है और न ही इससे ज्यादा आटॉनोमी किसी को दी जा सकती है। क्योंकि अगर आटॉनोमी की बात करते हैं तो हमारा देश जहां इतने राज्य हैं विभिन्न-विभिन्न भाषाओं के, विभिन्न-विभिन्न संस्कारों के, विभिन्न-विभिन्न संस्कृतियों के तथा यह सब एक साथ रह कर भारत कहलाते हैं, वह भारत टुकड़े- टुकडे हो जाएगा। उस भारत को एक रखने के लिए कन्या कुमारी से लेकर कश्मीर तक, कच्छ से लेकर कोहिमा तक एक बात करने की जरूरत है। पर जिओग्राफिकल कंडीशन

देने के लिए जो कहीं धारा 370 लगा हुआ है, कहीं 371ए लगा हुआ है, कहीं 371बी लगा हुआ है। ऐसा कहीं हिमाचल प्रदेश में भी है, अरूणाचल प्रदेश में भी है, नागालैंड में भी है, मिजोरम में भी है। इस पर जो कुप्रचार होता है सारे देश में यह बड़ा दुभाग्यपूर्ण है। महोदया, मैं पार्लियामेंट के एक डेलीगेशन में कश्मीर गया था और वहां मैंने गवर्नर के पूरे सैक्रेटरिएट के सामने जितने उनके सचिव हैं और हमारे साथ में हर दल के सदस्य थे, वहां मैंने उनसे प्रश्न किया कि नीचे तराई के इलाके में यह प्रचार किया जाता है कुछ राजनीतिक दलों द्वारा कि जम्मू कश्मीर में आठ आने प्रति लीटर केरोसिन तेल मिलता है या एक रुपए के०जी० चीनी मिलती है या बारह आने के०जी० चावल मिलता है। इसमें क्या सच्चाई है? तो उन्होंने जवाब दिया कि दिल्ली का जो रेट है या आपको दिल्ली में जिस रेट पर सामान मिलता है उस रेट में हम भी यही खरीदते है। यह सुनी-सुनाई बातें है, जैसी आपने सुनी, हमने भी सुनी है लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। तो मेरे एक राजनयिक बंधु प्रतिवाद करने लगे कि आप ऐसी बातें क्यों उठाते हैं। मैंने उनको कहा, क्योंकि आप इसका कुप्रचार करते हैं, इस कुप्रचार को रोकने की जरूरत है। जब तक हम कश्मीर के लोगों के मन में सुरक्षा की भावना नहीं जगाएंगे तब तक हम जितना भी दे दें वह कम है। वह नहीं लागू कर सकेंगे। हमें सबसे पहले उनके मन में सुरक्षा की भावना जगानी पड़ेगी और वह जगानी है वहां के सुरक्षा कर्मियों से, वहां के अधिकारियों से मदद लेकर, वहां के लोगों के साथ मिल जुलकर।

कल प्रधानमंत्री महोदय यह संकल्प प्रस्तुत करते हुए कह रहे थे कि सारे विश्व में प्रचार किया जा रहा है कि कश्मीर में मेंडेट लो है। पर उन्होंने बता दिया कि कहीं 70 फीसदी वोट हुआ है, कहीं 65 फीसदी वोट हुआ है, कहीं 51 फीसदी वोट हुआ है। 50 फीसदी से नीचे कहीं हुआ ही नहीं है। इस पर अगर मेंडेट लो कहा जाता है तो फिर क्या है। महोदया इन चीजों को मद्दे नजर रखते हुए हमें सबसे पहले ध्यान रखने की जरूरते है कि वहां बेरोजगारी जो इतने दिन पैदा हुई । वहां जितने शिकारें थे वह पानी में खड़े-खड़े सड़ गए हैं। वहां कोई टूरिस्ट जाता नहीं है—हिन्दुस्तानी टूरिस्ट या विदेशी टूरिस्ट। कुछ विदेशी टूरिस्ट हिम्मत करके जाते भी है लेकिन किडनेपिंग होने के बाद उन्होंने भी जाना बंद कर दिया। विदेशी टूरिस्ट और भारतीय टूरिस्ट दोनों के लिए वह एक अच्छी जगह है। जहां से वह पैसा कमाते थे। उनके शिकारे लेक पर खड़े-खड़े सड़ रहे है। आज उनको जिस चीज की जरूरत है वह दिलवाएं। वहां एम्प्लोयमेंट की जरूरत है।

उपसभाध्यक्ष महोदया, आज तक यह परम्परा रही कि हम बोर्डर स्टेट्स में बड़े कारखाने नहीं लगाते रहे हैं। बड़े कारखाने इसलिए नहीं लगाते रहे कि हमको हर पड़ोसी देश जो हमारा दुश्मन है, वह बम से हमला करके इस बड़े कारखाने को तहस-नहस कर सकता है। किन्तु पाकिस्तान में जो मिसाइल लगी हुई है वह रिमोट कंट्रोल से चलती है और वह पाकिस्तान से चलाकर सीधा मद्रास में लगे कारखाने को भी उड़ा सकती है। वहां से बटन दबा कर हैदराबाद और बंगलौर में जो कारखाने लगे हुए हैं उनको भी उड़ा सकती हैं। कलकत्ता के कारखाने को भी उड़ा सकती है। अब जब इन मिसाइल का सामना करने के लिए हमारे भारतवर्ष के सारे कारखाने खतरे में पड़ हुए हैं तो क्या हम बड़े कारखाने लगाना बंद कर देंगे। तो हमें वहां बड़े-बड़े कारखाने लगाकर तथा वहां के रॉ-मेटीरियल का उपयोग करके वहां के बेरोजगार लोगों को रोजगार देने की कोशिश करनी चाहिए। मैं समझता हूं कि आतंकवाद के पीछे यह हमारे खाली हाथ है। जब हाथ खाली रहते हैं तो an idle man's mind is a devil's work-shop की बात है। जब खाली हाथ रहते हैं तो उन हाथों में ग्रेनेड आ जाता है, उन हाथों में ए०के० 47 आ जाती है। उन हाथों में जब आप देश के निर्माण करने के औजार पकड़ा देंगे तब उन हाथों में कोई भी ग्रेनेड या ए०के० 47 पकड़ाने की हिम्मत नहीं करेगा।

महोदया, मौजूदा हालत में वहां जो फ्लड आया है, उससे भी ग्रसित हैं लोग और उसके लिए जो रिलीफ पहुंचना चाहिए, वह अब तक नहीं पहुंच सका है। उसमें द्रुत गति लाने की ज़रूरत है। साथ-साथ अभी जम्मू के पूरे बॉर्डर पर जो हमारा जम्मू का किसान, तराई का किसान बॉर्डर तक खेती करता था, इस बार रोपाई के टाइम वह बॉर्डर के नज़दीक नहीं जा सका क्योंकि पता नहीं, पाकिस्तान ने शायद यह सोच लिया है कि यह सरकार एक कमज़ोर सरकार है और इसी सोच में जिस दिन से यह सरकार बनी है, उस दिन से यहां गोलीबारी हो रही है। पूरे इंटरनेशनल बॉर्डर पर, लाइन ऑफ कंट्रोल का जो है, वहां पर बराबर रेंजर्स वर्सेज बी०एस०एफ० की गोलीबारी चल रही है।

उपसभाध्यक्ष महोदया, आज भोजनावकाश के पहले भी मैंने यह मुद्दा उठाया कि सियाचिन ग्लेशियर में गोलीबारी चल रही है और मैं यह कह रहा हूं कि जम्मू

के पूरे बॉर्डर में छम्ब तक गोलीबारी चल रही है धड़ाधड़। हमारा किसान, हमारी तराई का किसान वहां पर जा कर रोपाई नहीं कर पा रहा है। जो हम सोच रहे थे कि जिस तरह से पंजाब के बॉर्डर पर हमने बारबेड वायर लगाई है, उसी तरह से बारबेड वायर हम उस तराई के इलाके में भी लगा लें, वह संभव नहीं हो पा रहा है क्योंकि उसकी भनक उनको लग गई है और गोलियां चला रहे हैं। तो इसका मुहंतोड़ जवाब देकर हमें अपनी ज़मीन की, अपने किसान की सुरक्षा करने की ज़रूरत है क्योंकि किसान के मन में असुरक्षा की भावना जाग रही है। महोदया, उसको रोकने की ज़रूरत है।

महोदया, इतिहास साक्षी है कि जब मुगलों का अत्याचार हुआ कश्मीर के उच्चकुलीन पंडितों के ऊपर और जब जनेऊ जबरदस्ती उतारे जाने लगे, तिलक पोछे जाने लगे और उनकी बोदियां काटी जाने लगीं तो वे हमारे सिख धर्म के नौवें गुरू गुरू तेग बहादुर के दरबार में आए, आनन्दपुर साहब में आए और गुज़ारिश की। गुरू तेग बहादुर ने आकर सीसगंज में जो कत्लगाह थी मुगलों की औरंगज़ेब बादशाह के ज़माने में, यहां पर अपनी लाइफ का बलिदान दिया। किस लिए? जनेऊ तिलक और चुटिया की रक्षा के लिए। पिछले दस सालों से हर वर्ष मैं देखता हूं कि कश्मीरी पंडितों का एक टोला हर बैसाखी के दिन आनन्दपुर साहब जाता है और अरदास करता है कि हमें हमारे जो धार्मिक अधिकार हैं, वापस दिलाए जाएं, हमारे धार्मिक अधिकारों की रक्षा की जाए, हमें हमारी सरज़मीन वापस दिलाई जाए। आज वे पंडित कश्मीर में वापस नहीं जा सकते हैं। कश्मीर की जो प्रॉब्लम है, उसको तो सॉल्व करना ही है किंतु वहां के जो माइग्रेंट्स हैं, जो सैकड़ों-हजारों वर्षों से रह रहे है अपना घर-बार छोड़ कर, अपनी मातृभूमि को छोड़ कर, दिल्ली में आज वे लोग मांगने आते हैं कि मुझे कपड़ा दो, मुझे रहने को जगह दो। वे पहाड़ों के रहने वाले लोग इस गरमी में जब यहां रहते हैं, आप जाकर उन माइग्रेंट्स को देखिए, उनकी हालत क्या है, उनके बच्चों की हालत क्या है? उनके बुजुगों की हालत क्या है? वे हर साल आनन्दपुर साहब और सीसगंज गुरूद्वारे में मत्था टेक कर अरदास करते हैं पर आज भारत में कोई नहीं उनकी अरदास सुनने वाला जो उनकी बात सुन कर उनकी इस प्रॉब्लम को समाप्त कर सके। तो मेरी आपके माध्यम से गुज़ारिश है कि सभी दल, सभी पार्टियां मिल कर इस पर निर्णय करें। हम इसको राजनीतिक मुद्दा न बनाएं। हम बनाएं कि यह राष्ट्रीय मुद्दा है और राष्ट्र की इस प्रॉब्लम को किस तरह हम सॉल्व कर सकते है, उसका रास्ता ढूंढें और इनको अपनी मातृभूमि पर कैसे हम रिहैबिलिटेट कर सकते हैं, वह रास्ता ढूंढने की ज़रूरत है।

महोदया, अभी कुछ कनफ्यूज़न ऑटोनामी के बारे में,

जिस तरह भाजपा 370 का कनफ्यूज़न खड़ा करती है, उसी तरह ऑटोनामी का भी एक कनफ्यूज़न खड़ा कर दिया गया है।.....**(व्यवधान)**

श्री सतीश अग्रवाल (राजस्थान): बी॰जे॰पी॰ कनफ्यूज़न पैदा नहीं करती है।

(Interruptions)

SHRI SATISH AGARWAL: We are very clear in our mind for the last 40 years.

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: मैं कनफ्यूज़ हो रहा हूं। .....**(व्यवधान)**

Hindu Mahasabha. No. no. Nothing to do with Hindu Mahasabha .....*(Interruptions)*

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: हमारी सरकार के एक राज्य मंत्री जी ने शपथ लेने के साथ-साथ ही कश्मीर पर कुछ बयानबाज़ी शुरू की।

3.00 P.M.

हर सरकार में इंटैलीजेंस ऐजेंसी होती है। जिस तरह से आई॰एस॰आई॰ काम करती है, सी॰आई॰ए॰ काम करती है, एफ॰आई॰ काम करती है, उसी तरह से हमारे यहां रा॰ काम करती है, आई॰बी॰ काम करती है। सरकारी ऐजेंसियां किसी चीज़ को दबाने के लिए कांटे से कांटा निकालती है। कांटे का प्रयोग किया जाता है। लोहे को काटने के लिए लोहे की ज़रूरत पड़ती है और कुछ लोह प्रयोग इसमें भी किया जा रहा था जो चारदीवारी के अंदर बंद रहना चाहिए था, उसका खुलासा किसी राज्य मंत्री को नहीं करना चाहिए था। पर इन राज्य मंत्री ने पता नहीं किस उल्लास में जाकर उसका खुलासा कर दिया और कहना शुरू कर दिया कि यह क्रिमिनल है और यह राज्य सरकार की विभिन्न ऐजेंसियों और केन्द्र सरकार की विभिन्न ऐजेंसियों द्वारा प्रयोग किये जा रहे हैं। यह कहना दुर्भाग्यपूर्ण है। महोदया, ऐसी चीज़ बता देने से बहुत सारा नुकसान होता है और वह नुकसान सहने के लिए हम अभी इस पोज़ीशन में नहीं हैं। आज जब हम कश्मीर को इस दौर में ला रहे हैं, जहां हम शान्ति क्रायम कर रहे हैं, उस वक्त इसका खुलासा हो जाए तो

वह नुकसानदेय है। पर दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे राज्य मंत्री ने उसका खुलासा किया है। दूसरा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग सैल्यूट मार रहे हैं। पर यह तो बता दिया जाए कि उस राज्य मंत्री के पास वह विभाग है भी कि नहीं। अगर हमारे गृह मंत्री महोदय बता दें कि इंटरनल सैक्योरिटी उनके पास है तब तो सारा देश उनको सैल्यूट मारे पर हमें जहां तक पता है, उनका काम है राजभाषा देखना, स्वतंत्रता सैनानियों की पेंशन के बारे में देखना और ज्यादा से ज्यादा सी०पी०ओ० जो उनको मिलता है, उसमें सिर्फ एक डिपार्टमैंट दिया गया है, सी०आई०ए०स०एफ० देखना।

श्री रंजन प्रसाद यादव (बिहार) मंत्री हैं, इसलिए सैल्यूट मार रहे हैं।

श्री एस०एस० अहलुवालिया: मंत्री जी को सैल्यूट मारिए, ठीक है पर ऐक्सपोज़ करना तो नुकसानदेय है। जब आप लोग इधर बैठते थे तो सीक्रेट फाइल तो जरूर मिल जाती थी पर सीक्रेट का पर्दाफाश करने से राष्ट्र को नुकसान होता है। ऐसा नहीं करना चाहिए।

श्री सतीश अग्रवाल: गोपनीयता की शपथ लेते हैं, पर सीक्रेट नहीं रखते।

श्री एस०एस० अहलुवालिया: जी हां, शपथ लेकर भी खुलाशा करते हैं। महोदया, मैंने कल अखबार में पढ़ा कि 19 तारीख तक चुनाव की घोषणा हो जाएगी, इलैक्शन कमीशन डिसीज़न लेगा। सदन को अभी तक इसकी कोई खबर नहीं है। एक चीज़ का सामना करने की जरूरत है। महोदया, जो गलती हमारी सरकार ने कश्मीर के संबंध में की या जो अच्छे काम किए अथवा गलत किए, मैं कहना चाहता हूं कि अच्छे कामों को तो आप अपनाइए, पर जो बुरे काम किए, गलत काम किए, उन्हें न अपनाइए। मैं एक बात कहना चाहूंगा कि कश्मीरी युवक, जिस किसी से भी मैं मिला हूं वे कहते हैं कि दिल्ली से इम्पोजीशन मत करिए। दिल्ली से नेता चुनकर हमारे पास मत भेजिए और अगर दिल्ली से मुख्य मंत्री चुनकर भेजेंगे तो बगावत होगी। इसलिए दिल्ली से मुख्यमंत्री चुनकर मत भेजिए। कोई मोहम्मद, कोई अली, कोई अब्दुल्ला, कोई शाह, कोई पंडित या कोई मट्टू— यहां से नाम मत भेजिए। वहां सर-ए-जमीन से कोई चुनकर आए, जिसको जनता का सपोर्ट हो, वह वहां पर राज करे तो मैं समझता हूं कि वह सिर्फ वहां की जनता के हक के लिए नहीं, कश्मीर के हक के लिए नहीं, बल्कि मादरे वतन हिन्दुस्तान के हक के लिए काम करेगा और तभी हम वहां की प्रॉब्लम को खत्म करने में सफल होंगे। यही कहकर मैं इस परिनियत संकल्प का समर्थन करता हूं।

श्री गया सिंह (बिहार): महोदया, कल प्रधानमंत्री जी ने कश्मीर के संबंध में जो चर्चा की है और जो संकल्प दोहराया है, मैं आम तौर से इस संकल्प में जिन बातों की चर्चा की है, उनसे सहमत हूं। इस मौके पर मैं एक-दो बातें सदन के समक्ष रखना चाहता हूं। मैं इससे सहमत हूं कि चुनाव के पहले कश्मीर में इस तरह का माहौल बने कि वहां के लोगों के अंदर, खासकर नौजवानों में देश के बारे में बाहर के लोगों ने जो भ्रम पैदा किया है, उसको हम कैसे दूर करें और कैसे हम उस में विश्वास पैदा करें? जिससे काश्मीर की जो अभी स्थिति है उसमें सुधार करा सकें। हम जो विधान सभा के चुनाव वहां चाहते हैं उसमें उनका मेक्सिमम पार्टीशिपेशन लोक सभा चुनाव में जितना हुआ है, उससे ज्यादा हो सके। इसके लिए हमारा सुझाव है कि विधान सभा चुनाव के पहले, चूंकि वहां पंचायत का भी अभी चुनाव नहीं हुआ है, और छोटे-छोटे शहर हैं, उनमें म्युनिसिपल्टीज का चुनाव नहीं हुआ है, इस तरह के जो काम हमें केन्द्रीय सरकार से कराने चाहिए थे, पिछले सालों में हमने कुछ नहीं किया। वहां जो विकास के काम गवर्नर के एडवाइजर के माध्यम से या नौकरशाह के माध्यम से हो रहे हैं, नीचे तक के गांवों में वह चीज नहीं पहुंची है। इसलिए चुनाव की घोषणा के पहले भारत सरकार जम्मू-काश्मीर के गांवों तक कुछ ऐसे विकास के कामों को ले जायेगी तो उससे हमारे नौजवानों और पिछड़े हुये लोगों का मोटीवेशन होगा और उनकी भारत सरकार तथा देश के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी। अतः हम समझते हैं कि विधान सभा चुनाव में हम उनका विश्वास जीत सकते हैं। इसलिए एक सुझाव तो हमारा यह है।

दूसरा सुझाव है कि कल ही इस सदन में माननीय सदस्य धारा 370 की चर्चा कर रहे थे। मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि जब हम सभी लोगों का यह विचार है कि काश्मीर हमारा अभिन्न अंग है तो काश्मीर की जमीन ही सिर्फ हमारी नहीं है वहां के निवासियों को भी हम अपनायें और उनमें विश्वास पैदा करें तथा उनको भड़काने की कोशिश नहीं करें कि धारा 370 को उठा लेंगे। यह भावना पैदा करके कुछ ऐसा प्रचार हम वहां करते हैं। पाकिस्तान और पाकिस्तान रेडियो से हमारे नौजवानों को भ्रमित करने का कार्य किया जा रहा है। हमारे देश के कुछ लोग भी विचारों को तोड़-मरोड़कर उनके बीच में भ्रम पैदा कर रहे हैं। वहां पर ऐसा प्रचार किया जा रहा है कि अगर तुम हिन्दुस्तान से अलग नहीं बनोगे तो

तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता है और फिर यह धारा 370 एक मामूली सुविधा है वह भी खत्म होगी और उसके बाद तुम हिन्दुस्तान के एक बंधुवा बनकर रहोगे। यह प्रचार करने में हमारे विदेशियों को मौका मिलता है। साथ ही साथ जो डिसप्लेसड वहां से हुये हैं, उस डिसप्लेसमेंट के साथ यह बात सही है कि उनके साथ वहां आतंकवादियों ने इस तरह से किया है कि उससे वे अभी तक पीड़ित हैं और उनके अन्दर अभी वहां जाने का विश्वास नहीं है। जो हमारे डिसप्लेसड् हैं उनको भी काश्मीर के प्रति मोह है, वहां के लोगों के प्रति मोह है और वहां जाना चाहते हैं। इसलिए हम ऐसा वातावरण वहां पर बनायें जिससे डिसप्लेसड होकर गये हिन्दू वापस आयें और वहां जो मुसलमान हैं, उनकी जो पुरानी परम्परा थी, उनकी संस्कृति थी, उनके अन्दर जो भाई-चारा था, यह जो आजादी के बाद फर्क किया है उसको दूर करने के लिए हमारी ओर से प्रयास विधान सभा चुनाव से पहले होना चाहिए। ऐसी स्थिति वहां हो कि दो-तीन महीने में हमारे डिसप्लेसड वहां जाकर अपने घरों में रहें और उनकी जो क्षतिपूर्ति करने की जरूरत हो तो उसके लिए भारत सरकार को अलग से अरेंजमेंट करना चाहिए। इससे न केवल हिन्दुस्तान को बल्कि हम दुनिया को विश्वास में ले सकते हैं, इस बात के लिए हम लोगों को विश्वास दे सकते है कि काश्मीर जो भारत का एक अंग है वह वहां जाकर के अपने क्षेत्र में वोट दें। लोक सभा के चुनाव में कुछ हद तक इसको सफलता मिली है लेकिन अगर वह यहां बैलेट देते हैं तो उससे विदेशियों को गलत प्रचार करने का मौका मिलता है और हम भी यह सुझाव देना चाहते है कि जिस तरह से कल प्रधान मंत्री जी ने कहा और जो संकल्प उन्होंने दोहराया है उससे हमें भरोसा है कि आज से पहले कई बार प्रेसीडेंट रूल को एक्सटेंट करने के समय यह विश्वास दिया गया था इस हाउस को कि बस छह महीने के अंन्दर कोई न कोई रास्ता चुनाव का हो जायेगा, लेकिन हमें भरोसा है कि इस बार छह महीने नहीं लगेंगे और छह महीने के अन्दर ही चुनाव हो जायेगा। इस संबंध में जो कुछ कदम उठाने की जरूरत है उस ओर सरकार को तत्काल ध्यान देना चाहिए और तमाम पोलिटीकल पार्टीज को बिना भेदभाव के अच्छा वातावरण बनाना चाहिए। सबसे हमारी अपील होगी कि जिनकी जितनी भी शक्ति है उसको लेकर उन क्षेत्रों में राजनीति प्रचार की प्रक्रिया शुरू की जाये और वहां के लोगों से मिला जाये।

वहां के लोगों से मिला जाये। सिर्फ दिल्ली से प्रस्ताव पास करने से उनके अन्दर हमारे प्रति उतना भरोसा होने वाला नहीं है। हम यह भी कहेंगे कि हमारे नये गृह मंत्री को मंत्री की हैसियत से पूरी जानकारी होनी चाहिए। इसलिए गृह मंत्री को पर्लियामेंट के दोनों हाउस के मेम्बर्स को, वहां जाकर विभिन्न पार्टियों के मेम्बर्स के साथ बैठक करनी चाहिए। जो वहां के राजनीतिक दलों के जनप्रतिनिधि हैं, उनके साथ अगर बैठक हो और उनके विचारों को सुनकर चुनाव की घोषणा के पहले कोड आफ कन्डेक्ट लागू होने के पहले मेलजोल करके, उनमें विश्वास पैदा करके, विकास के कुछ कार्य करके, चुनाव कराये जाएं तो हम समझते हैं कि एक नया माहौल बनेगा। हम सभी हिन्दुस्तान की तमाम पॉलिटीकल पार्टीज दोनों हाउस के अन्दर हैं, वे अगर इस बात का संकल्प करें कि कश्मीर हमारा ही अंग नहीं है, कश्मीर में रहने वाले किसी धर्म, वे किसी भी कौम के लोग हों, वे सभी हमारा हिस्सा हैं, इस विश्वास के साथ कुछ समय पहले हमारी भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने सिर्फ 13 रोज के वक्त राष्ट्रपति भाषण में 370 को छोड़ दिया था, उसी प्रकार अगले चुनाव तक भी वे कम से कम इस प्रचार को छोड़ दें तभी हम समझते हैं कि माहौल बनेगा। जब धीरे-धीरे वे रियलाइज करेंगे कि 40 साल पुरानी चीजों को रिव्यू करके इस बात का अगर विचार करें तो हम समझते हैं कि माहौल बनाने में काफी सहयोग मिलेगा।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Thank you. Mr. Vayalar Ravi.

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam, Mr. Sibtey Razi will speak from my party.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आपका नाम उनके बाद दिया हुआ है, 6 नं० पर है।

SYED SIBTEY RAZI (Uttar Pradesh): I will take his place, if you permitme.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE); It is mutual. Please go ahead.

श्री सतीश अग्रवाल: आपके आसन्न होने पर हाउस स्मूथली चलता है। उसमें कोई दिक्कत नहीं कि पहले कौन बोले, बाद में कौन बोले। आप सबको एडजेस्ट करके चलती हैं। यही डिबेट होनी है, दूसरी कोई होनी नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): Thank you for the compliment.

SYED SIBTEY RAZI: I also join him, Madam.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): Thank you.

सैयद सिब्ते रज़ी: मैडम, अभी हमारे कई योग्य मित्रों ने, अभी कश्मीर में जो चुनाव सम्पन्न हुए हैं, संतुष्टी प्रकट की है। मैं भी अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं। जम्मू एंड कश्मीर में जो चुनाव हुए हैं यकीननतौर पर, निश्चिततौर पर यह एक नई दिशा है। उस माहौल में जहां आतंकवाद कश्मीर में ऐसा आया था कि अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुका था, हालात असाधारण थे। सात साल पहले एक ऐसी गम्भीर परिस्थिति की शुरूआत हुई थी, जिसमें पूरी घाटी को और जम्मू में भी मैं समझता हूं कि एक आग के दरिया से पूरी वैली को निकलना पड़ा था। हमारे देश के इस खित्ते को, इस क्षेत्र को निकलना पड़ा था।

शुरू में जब पिछली सरकार ने इस बात का फैसला किया कि वहां चुनाव होने चाहिएं तो सब तो मैं नहीं कहूंगा, लेकिन बहुत सारी जो हमारी राजनीतिक पार्टियां हैं उन्होंने इसका विरोध इसलिए किया था कि वहां असाधारण परिस्थितियां हैं, गैर मामूली हालात हैं और ऐसे अगर गैर मामूली हालात में इलैक्शन कराने के लिए कंड्युसिवनैस होनी चाहिए, वह नहीं है लेकिन उसके बावजूद पिछली सरकार ने इस बात का फैसला किया कि लोकतंत्र के अन्दर, लोकशाही के अन्दर, लोकप्रिय सरकार के अन्दर कोई विकल्प नहीं है। हमेशा-हमेशा के लिए और इसलिए बड़ी कटिबद्धता के साथ बड़े डिटरमिनेशन के साथ वहां चुनाव का निर्णय लिया गया और चुनाव की घोषणा हुई।

प्रारम्भ में हमारे दोस्त कहते थे कि चुनाव के लिए नुमाइन्दे आगे नहीं बढ़ेंगे, कैंडीडेट्स आगे नहीं आयेंगे, लेकिन आप जानते हैं कि पूरे खित्ते में, जम्मू व कश्मीर में तथा लद्दाख में केवल 6 सीटें हमारी संसद के लिए आती हैं। मैडम आप यह भी जानती हैं कि उन 6 सीटों के लिए लगभग 140 लोगों ने अपने पर्चे दाखिल किये है।

एक-एक सीट के लिए दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह लोग बड़े उत्साह के साथ, बड़े जोश के साथ आगे बढ़े। यह कोई मामूली बात नहीं है। असाधारण परिस्थितियों में जहां जान जाने का खतरा हो और बहुत से ऐसे मिलिटेंट थे, उग्रवादी थे, आतंकवादी थे, जिन्होंने यह चेतावनी दे रखी थी कि अगर कोई भी अपना नामांकन-पत्र दाखिल करने के लिए आगे बढ़ेगा तो हो सकता है कि उसे अपनी जान से भी हाथ धोना पड़े। लेकिन वहां के राजनैतिक कार्यकर्ताओं ने, सभी पार्टियों के राजनैतिक कार्यकर्ताओं ने बंदूक की, आतंकवादियों की इस चुनौती को स्वीकारा और जब चुनाव का वक्त आया तो 110 लोगों ने इस चुनाव के अंदर उम्मीदवार के रूप में भाग लिया, जिनमें से 6 लोग वहां से जीतकर आए। मैं इस बात को कहूंगा कि पिछले सात सालों से लोक सभा कश्मीर के मामले में कोई जुबान नहीं रखती थी लेकिन इस चुनाव के जरिए कश्मीर को जुबान मिल गयी है। अपनी समस्याओं को कहने के लिए, अपने हालात को देश के सामने रखने के लिए जुबान मिल गयी है। इसीलिए, मैं समझता हूं कि यह एक नई शुरूआत है और नई दिशा है। इन सात वर्षों के अंदर पिछले दो साल सुधार के साथ या सुधार की तरफ तेजी से बढ़ते हुए चरण इसे कहा जा सकता है। वहां आतंकवाद में कमी आई है और हताहतों की संख्या कम हुई है। अभी भी हमें अखबारों और अन्य सूचनाओं के जरिए पता चलता रहता है कि आतंकवादियों ने हमारे कुछ शहरियों को मारा, उनकी जान ली। लेकिन इसी के साथ-साथ आतंकवादियों का भी बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है और उनके हौसले पस्त हुए हैं। वह जोश-खरोश जो उनको मिसगाइड करके पैदा किया गया था, अब वह समाप्त हो गया है। हमें खुशी है, मुझे भी वहां कई मर्तबा जाने का मौका मिला है, अब वे लोग जो उस हिस्से के रहने वाले हैं, वह मां-बाप जिन्होंने अपने बच्चों को वहां जन्म दिया है लेकिन जो किसी किस्म की गुमराही की वजह से अपने बेटों को, अपने नौजवान बच्चों को सरहद के उस पार ट्रेनिंग लेने के लिए भेजते थे, आज उन्होंने इस बात का फैसला किया है कि इसके सिवाय मायूसी के, सिवाय हताश होने के, सिवाय बलिदान देने के कुछ नहीं मिलना है। इसीलिए पाकिस्तान वहां के सन आफ स्वायल, जो बच्चे वहां पैदा हुए हैं, जो उस हिस्से से ताल्लुक रखते हैं, उनको ट्रेनिंग देने के लिए वह अपनी साजिश रचने में कामयाब नहीं हो रहा है जब कि आज से 5-6 साल पहले वह कामयाब हो गया था। इसीलिए आज भाड़े के सैनिकों को खतरा उस इलाके के अंदर हो गया है। आप जानती हैं मोहतरमा कि पिछले चुनाव के जमाने में यह जर्बदस्त चुनौती, जब संसद के चुनाव हो रहे थे, भाड़े के, किराये के सिपाहियों के मार्फत पाकिस्तान की ओर से भेजी गई थी कि वह पूरी तरह से इसके अंदर दखलन्दाजी करेंगे और हमारी चुनाव प्रक्रिया में किसी तरह की गड़बड़ी करेंगे। मैं मानता हूं कि हमारी

सुरक्षा की जो फोर्सेज थी, उन्होंने बहुत अच्छा काम किया और बड़ी तत्परता के साथ वह वहां डटे रहे। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि वहां की जनता, वहां की आवाम, वहां के लोग बहुत बड़ी तादाद में निकले और उन्होंने कहा कि अब हमें इस जलन को खत्म करना है, आग और खून का जो यह नाटक हो रहा है, जो खेल हो रहा है, इसको समाप्त करना है और एक बड़ी तादाद के अंदर वह बाहर आए। अब कहा यह जाता है कि वह बड़ी तादाद में आए लेकिन इधर उधर पैरा-मिलेटरी फोर्सेज और फौज के लोग भी दिखाई दिए। निश्चित रूप से आज साधारण परिस्थितियों में भी, चाहे बिहार में चुनाव हों, चाहे उत्तर प्रदेश में चुनाव हों और चाहे भारत के किसी भी प्रदेश में हों, बिना ला एंड आर्डर इन्फोर्सिंग एजेंसीज की मदद से चुनाव संभव नहीं हो सकता। मैं समझता हूं कि हर देश में ऐसी परिस्थिति होती है और इसको बनाये रखने के लिए लोकतांत्रिक देशों के अंदर भी यह ला एंड आर्डर इन्फोर्सिंग एजेंसीज मदद करती हैं। बिल्कुल इसी तरह से कश्मीर के अंदर भी हुआ। मैं कहना चाहता हूं कि इस संबंध में प्रशासन ने बड़ा अच्छा किया है। प्रशासन की भी हमें तारीफ करनी चाहिए। उन्होंने बड़ी ही दिलचस्पी से उन हालात का मुकाबला किया। जम्मू और कश्मीर की पुलिस, जिसके बारे में हमारे भी मन में शायद कहीं न कहीं शुबहा था, शुबहा के शिकार हो गए थे कि शायद वह इतनी तत्परता से ड्यूटी नहीं कर रही है, वह अपना कर्तव्य निवारण नहीं कर रही है, उस पुलिस ने भी अच्छा परफारमेंस दिया। कई मौके ऐसे आए कि जो आतंकवादी जिन्होंने दिल्ली के अंदर कई तरह की दहशतें फैलाई, उनका उन्होंने सुराग लगाया और उनका जमकर मुकाबला करके उनका पर्दा-फाश किया।

इसलिए वहां का जो स्थानीय प्रशासन था उसके अन्दर भी काफी चुस्ती आई और यह सारी चीज़ें जो हो रही हैं निश्चित रूप से पाकिस्तान को अच्छा नहीं लग रहा है। आज जितनी व्याकुलता है, जितने लोग उत्साहित है, यह विधान सभा के चुनावों में इस चुनाव के बाद जो संसद के चुनाव हुए, यदि आज आप जा कर के देखें तो निश्चित रूप से पूर्ण रूप से पूरा माहौल तो नहीं बदला है लेकिन माहौल के अन्दर काफी तबदीली आई है क्योंकि इससे परिवर्तन की नयी दिशा मिली है। आज कश्मीर के आवाम को खासतौर पर इस बात का आभास हो गया है कि उनको आज़ादी की बात कह कर संघर्ष के ऊपर उतारा गया था और जिस देश से आज़ादी के लिए ज्यादा से ज्यादा तबलीग की जा रही थी, उनको ज्यादा से ज्यादा इनसाइट करने की कोशिश की जा रही थी उस देश के अन्दर ही आज़ादी तो क्या मानव अधिकारों की जो आज़ादी है वह भी पूरी तरह से सुरक्षित है या नहीं। आज पाकिस्तान के अन्दर, कराची के अन्दर अगर आप देखें महाजिर जो यहां से गये थे आज वह किस हालत में रहते हैं और उसी देश के रहने वाले के आधार पर, रिफ्यूजीस के नाम के ऊपर एक दूसरे का खून बहा रहे हैं। मुझे तो दुख होता है जो लोग मज़हब की बात करते हैं, धर्म की बात करते हैं, कश्मीर के अन्दर भी उन्होंने मज़हब और धर्म की बात कह कर लोगों में जोशो-खरोश पैदा किया, वो लोग जो एक ही धर्म के अबलम्बी हैं, एक दूसरे का कत्ल करते हैं, एक दूसरे को मार देते हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों ने भी कश्मीर के आवाम को सोचने पर मजबूर किया है। इस देश के अन्दर, उस खित्ते के अन्दर जो आज़ादी की बात करते हैं वह भी शायद मुमकिन नहीं हो पाएगा और पाकिस्तान जिस तरह से वक्तन-फ्वक्तन उकसाता रहता है उससे भी उनका किसी तरह से भला होने वाला नहीं है। मैं एक बात और अर्ज़ करना चाहूंगा क्योंकि हमारी जो दूसरी राजनीतिक पार्टियां हैं विशेष तौर पर भारतीय जनता पार्टी उसने कई मर्तबा कहा है 370 जो है वहां आतंकवाद का एक ज़रिया है। इस तरह की बात कही गई है जम्मू कश्मीर के बारे में। मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत नहीं हूं क्योंकि 370 ने ही मुख्य रूप से तो नहीं कहा जाएगा लेकिन बहुत ज्यादा तरीके से कश्मीर को हमारे इस खित्ते से जोड़ कर रखा है। जो एक्सेशन का डाकुमेंट था उसके अन्दर इस बात के ऊपर स्पष्ट रूप से हमारे जो नेता था उन्होंने इस बात का आश्वासन दिया था कि उनका जो खसूसी करेक्टर है, उनकी जो संस्कृति है, उनकी जो भाषा है उनकी जो खुद मुख्त्यारी है जिसके बारे में उन्होंने वायदे लिये थे, उनसे ही 370 की भरपाई होती है। मैं समझता हूं 370 के बारे में बार बार बात कर के जब भी समस्या का समाधान या निराकरण होने की बात होने लगती है तो एक बार फिर शक और शुबहे का माहौल पैदा होने लगता है। मैं अपने पूर्व वक्ता से पूरी तरह से मुत्तफिक हूं कि हमें इस इश्यु के ऊपर जो बहुत ही संवेदनशील इश्यु है बहुत ज्यादा समझदारी से और देश हित को मद्दे नज़र रखते हुए, देश की अखण्डता और एकता को मद्दे नज़र रखते हुए अपने विचार प्रकट करने चाहिएं। मैं समझता हूं आज आटोनामी का जो सवाल है यह हमारे नेताओं का सवाल, ज्यादा है, जनता का सवाल कम है। स्वायतता का प्रश्न बार बार जो लोग उठाते हैं वह बड़े नेता उठाते हैं, निश्चित रूप से यह उनका सवाल है जिसका हल

होना चाहिए लेकिन कश्मीर की वादियों के अन्दर जाइये और श्रीनगर में न ठहरिये, कश्मीर के दूसरे इलाकों में चले जाइये जो देहात के इलाके कहलाते हैं, ग्रामीण अंचल कहलाते हैं, वहां जनता की समस्या स्वायतता की समस्या नहीं है, वहां की जनता की समस्या आतंक की समस्या है, दहशतगर्दी की समस्या है, रोटी की समस्या है, रोज़गार की समस्या है, कारोबार की समस्या है, सूखते हुए बागों को नयी ज़िन्दगी देने की समस्या है, ट्यूरिज्म की समस्या है। इन समस्याओं का हम निराकरण कर सकें और आर्थिक विचार धारा के बारे में समझ सकें जिससे जल्दी से जल्दी उनके रोज़गार पूरे हो सकें। रोज़गार का जहां तक सवाल आता है, मुझे भी राज्य मंत्री की हैसियत से काम करने का मौका मिला है, आज हमें सोचना पड़ेगा जम्मू के अन्दर जा कर, कश्मीर के अन्दर जा कर, हम सुरक्षा बलों की नियुक्तियां करते हैं, चयन करते हैं।

तो हमें यह ख्याल करना चाहिए कि जम्मू में हम कर रहे हैं तो जम्मू के इलाके के ही लोग होने चाहिएं। यदि हम उधमपुर के इलाके में कर रहे हैं और वहां पर हरियाणा का कोई नौजवान चुन लिया जाता है, उसका सिलैक्शन हो जाता है तो इससे हार्ट बर्निंग बढ़ती है इसलिए उन इलाकों के लिए हमें खास तौर पर यह जो आल इंडिया कांसैप्ट है अपने बल के अंदर अपने सिपाही चुनने का उसके बारे में सोचना चाहिए और वरीयता लोकल लोगों को देनी चाहिए। यह काश्मीर का ही सवाल नहीं है इस तरह का सवाल भारत के हमारे दूसरे इलाकों के अंदर जो क्षेत्रीय बैलेंस है हमारी फोर्सेस में रहने का उस पर भी मैं समझता हूं कि यदि हम विचार करें तो इससे काफी फर्क पड़ सकता है। कई महीनों से 6 हमारे जो विदेशी पर्यटक थे वे आतंक का शिकार हो रहे हैं और अभी तक यह पता नहीं चला है। कभी अख़बार में से पता चलता है इनको मार डाला गया, कभी पता चलता है कि नहीं, वह अभी ठीक हैं, सुरक्षित हैं। मैं माननीय गृह मंत्री जी से लेटेस्ट पोजीशन जानना चाहूंगा कि आखिर उन होस्टेजज़ की पोजीशन क्या है? कई हमारे जो माननीय सदस्य थे उन्होंने वहां ट्यूरिज्म के बढ़ावे की बात कही है, लेकिन निश्चित रूप से हमारे पर्यटक जो मुख्य रूप से विदेशों से आते हैं, विदेश से क्या, हमारे देश के पर्यटक भी वहां नहीं जाना पसंद कर रहे हैं। क्योंकि आदमी जाता है तफरी के लिए, मनोरंजन के लिए, तब्दील-ए-आबोहवा के लिए, लेकिन जब उसको इस बात का डर हो कि पता नहीं किस वक्त वह किडनैप कर लिए जायेंगे, पता नहीं किस वक्त वे उठा लाए जायेंगे, पता नहीं किस वक्त किस तरफ से गोली आएगी और उनकी जिन्दगी खत्म हो जाएगी तो निश्चित रूप से इस इंडस्ट्री के ऊपर असर पड़ता है। मेरा अनुरोध है कि यह देखने की कोशिश की जाए कि उन होस्टेज़ज को किस परिस्थिति में रखा गया है? आया वे जिंदा हैं तो उनको छुड़ाने का क्या प्रयास किया जा रहा है? लेकिन इसी के साथ-साथ मैं मंत्री जी से इस सवाल के साथ अन्तर्राष्ट्रीय जो हमारी कॉमिटी है और जो हमारे बड़े-बड़े देश हैं, जिनके पाकिस्तान से बहुत अच्छे ताल्लुकात हैं उनसे भी गुजारिश करना चाहूंगा कि वहां की जनता और वहां की सरकार पाकिस्तान पर दबाव डाले कि वह इन 6 जो बंदी हैं, जो होस्टेज हैं, उनको छुड़ाने के लिए अपना जो उसका रोल हो सकता है वह पूरी तरह से अदा करें, क्योंकि इस मामले के अन्दर हमारे राष्ट्रीय हित भी हैं और अन्तर्राष्ट्रीय हित भी इसके अंदर निहित हैं। इसलिए इसके ऊपर भी हमें कोशिश करनी चाहिए और मैं समझता हूं कि वर्ल्ड की जो कॉमिटी है, जो हमारी अन्तर्राष्ट्रीय कॉमिटी है, हमारी जो अन्तर्राष्ट्रीय पोलिटी है, उसके ऊपर भी इसका कुछ कुप्रभाव पड़ रहा है।

मैं एक बात और माननीय गृह मंत्री जी से पूछना चाहूंगा कि कई मर्तबे कोशिश की गई कि काश्मीर के मुद्दे को द्विपक्षीय वार्ता से, त्रिपक्षीय वार्ता या बाहर की ताकत के जरिए, इसमें एक साजिश की सूरत में, उसको इंटरमीडियरी बनाकर, उसके ऊपर विचार-विमर्श किया जाए। अभी मिसेज भुट्टो ने भी कुछ दिन पहले, हफ्ता भर पहले लाहौर में एक प्रैस कांफ्रेंस को एड्रैस करते हुए कुछ इस तरह का इशारा किया है। हम उसके अंदर यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहते हैं, एक तो काश्मीर हमारा अभिन्न अंग है, लेकिन अगर किसी मसले के ऊपर किसी देश को किसी प्रकार का भ्रम है, कोई बात उससे करनी है तो यह द्विपक्षीय वार्ता हो सकती है, इसमें तीन पक्षीय वार्ता या किसी की साजिशी या किसी के इंटरमीडियरी होने का कोई सवाल नहीं उठता है। पिछली सरकार ने भी इस संबंध में अपनी नीति पूरे तौर से घोषित की थी, आशा करते हैं मौजूदा सरकार भी उसी नीति पर चलेगी और सारी दुनिया को यह बात देगी कि काश्मीर हमारा अपना अभिन्न अंग है। यदि इस मामले में कोई डिसप्यूट है, पाकिस्तान इसके ऊपर किसी तरह का डिसप्यूट बनाता है या किसी तरह का सवाल उठाता है तो जैसा कि प्रधान मंत्री ने पाकिस्तान में नए प्रधान मंत्री के होने पर बात-चीत करने की तजवीज़ रखी है हमारे प्रधान मंत्री ने भी उनकी इस तजवीज़ का वैलकम किया है तो वह बात संभव हो सकती है। लेकिन कोई तीसरी ताकत चाहे दुनिया की कितनी ही

बड़ी ताकत हो, क्योंकि हम देख रहे हैं कि पिछले कई सालों से इस बात की कोशिश की जा रही है काश्मीर को इंटरनेशनलाइज करके अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अखाड़ा बनाया जाए। भारत के लोग इस बात को कभी पसंद नहीं करेंगे और इस मामले में आपका मत जो है कई मर्तबा इस हाउस के जरिए और अपनी इंडिविज्युअल कैपेसिटी में भी वह व्यक्त कर चुके हैं।

लास्ट में एक बात कहना चाहूंगा फॉरेन मिलिटेंट जो थे, जो आतंकवादी थे, जिन्होंने काफी हताहत भी की थी और वह मिसगाइड हो गए थे, गुमराह हो गए थे। उन में कितना सेंस प्रिवेल हुआ? भारत के ढांचे के अंदर उन्होंने बातचीत शुरू की है और इस सिलसिले में पूर्व गृह मंत्री से भी कुछ मिलिटेंट्स मिले थे। मैं माननीय गृह मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि इस समय उस बातचीत की क्या स्थिति है? क्योंकि समस्या का अगर कोई भी स्थाई हल ढूंढना चाहते हैं तो वह बातचीत के ही जरिए हो सकता है। इस सिलसिले में जो पहल हुई थी, उस की क्या स्थिति है? महोदय, "रेनेगेट्स" के बारे में बार-बार आता है कि वे हथियारबंद हैं, उन के हथियार ले लिए जाने चाहिए। मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहूंगा कि उन को रेनेगेट्स कहना भी उचित बात नहीं है। वह रिफॉर्म्ड मिलिटेंट्स" हैं। हमारे देश की जो मुख्य धारा है, जो हमारी राष्ट्रीय धारा है, उस से वे अपने को जोड़ चुके हैं। इसलिए उन के मामले में कोई भावुकता से किसी दवाब में आकर फैसला नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वह एक आतंकवादी ग्रुप को छोड़कर भारत की शांतिवादी व्यवस्था में या मेनस्ट्रीम में शामिल हो गए हैं, लेकिन वह आतंकवादियों का निशाना बने हुए हैं और किसी वक्त भी अगर आतंकवादी-आतंकवादियों में यह फॉर्मर आतंकवादियों में या प्रजेंट आतंकवादियों में लड़ाई होती है तो निश्चित रूप से उन की जान को खतरा है। इसलिए इस सिलसिले में जो भी कदम उठाए जाएं वह बहुत सोच-समझकर उठाए जाने चाहिए। जनता उन को रिजेक्ट कर चुकी है क्योंकि कई मिलिटेंट्स के नुमाईदे भी पिछले चुनाव में लड़े हैं, लेकिन उस चुनाव में जनता ने उन में से एक को भी समर्थन नहीं दिया है। आज उन का मनोबल टूट रहा है आज जो लोग बाहर से मिलिटेंसी के जरिए हमारे उस प्रदेश में डिस्टर्बेंस पैदा करना चाहते हैं, उन का मनोबल गिर गया है। महोदया, आज हड़तालों की बात रोज आती है कि आज श्रीनगर बंद है लेकिन श्रीनगर के अलावा भी काश्मीर बहुत बड़ा है। उस का इलाका काफी फैला हुआ है, लेकिन और देही इलाकों में और कस्बात में और शहरों में इस बात की कामयाबी नहीं होती। तो श्रीनगर में एक गढ़ बना हुआ है। उस में अंतर्राष्ट्रीय ताकतें उन को मदद करती हैं-पैसे से मदद करती रहती हैं और "मोरल-बूस्टिंग" करती रहती हैं, लेकिन आज मिलिटेंट्स ने खुद अपने अंदर सवाल करना शुरू कर दिया है कि वह लोग जिन के पास कुछ नहीं है, आज वह करोड़पति बन गए हैं उन की लाशों पर चलकर जो काश्मीरी आवाम की हैं। तो एक चुनौती का माहौल शुरू हो गया है कि हम उस सूरत को अपने देश के हित में किस तरह इस्तेमाल कर सकते हैं, मिलिटेंट्स की कमर और किस तरह कमजोर कर सकते हैं। महोदया, इस में कोई शक नहीं कि मिलिटेंसी एक ऐसी वबा है जो वक्ती तौर पर ऐसा लगता है कि खत्म हो गयी है, लेकिन सदा-सदा खत्म होने के लिए उस को काफी वक्त लगता है। इसलिए हमें "काम्प्लीसेंसी" का शिकार नहीं होना चाहिए। हमारा दुश्मन बहुत होशियार है। हमारा दुश्मन बहुत कीनापरवर है, हमारा दुश्मन बहुत मक्कार है, इसलिए हमें हर होशियारी के साथ इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि हम उस की किसी किस्म की साजिश का शिकार न हो जाएं।

महोदया, आज रेलवे बजट आया है जिस में वहां की रेलवेज के बारे में कहा गया है, लेकिन जब तक काश्मीर को, वैली को रेलवे से पूरी तरह से नहीं जोड़ दिया जाएगा, पूर्णरूप से जो हमारी राष्ट्रीय एकता का जो प्रवाह है, उससे काश्मीर नहीं जुड़ पाएगा। जब कश्मीर रेल के जरिए जुड़ जाएगा, वैली रेल के जरिए जुड़ जाएगी तो वहां के बागान के फल आसानी से यहां भेजे जा सकते हैं। आज फल नीचे उतरते हैं तो बीच में बर्फबारी हो जाती है, आवागमन के साधन अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। ऐसी सूरत में वह लोग अपने को बिल्कुल अलग-थलग समझने लगते हैं। महोदया, वहां के हालात को सामान्य बनाने में मैं समझता हूं कि रेलवे के कार्यक्रम को तेज करने से भी काफी सहारा मिलेगा। महोदया, कश्मीर को साधारण रूप में मैं उस वक्त मानूंगा जब वहां मुकम्मल शांति मानूंगा जो कि एक संसद सदस्य की हैसियत से मैं महसूस करता हूं, एक भारतीय नागरिक की हैसियत से महसूस करता हूं, एक हिंदुस्तानी शहरी की हैसियत से महसूस करता हूं कि हमारा वह कश्मीर जिसे कि हम "जन्नत निशां" कहते हैं, वह कश्मीर उसी वक्त पूरा हो पाएगा जब वहां से हमारे जो लोग कश्मीर को छोड़कर आए हैं वह वापिस चले जाएं। चाहे वे पंडितों की सूरत में हों, लेकिन मैं उन्हें पंडितों की सूरत में नहीं मानता हूं। मैं सिर्फ यह

मानता हूं कि वह हमारे देश के एक उच्च नागरिक है और हालात की मजबूरी की वजह से अपने घरों को छोड़कर चाहे वह जम्मू में हों, चाहे कहीं अन्य हों- वह जब तक वापिस नहीं चले जाते, अव्यवस्थित लोग व्यवस्थित होकर अपने वतन वापिस नहीं चले जाते मैं समझता हूं कि कश्मीर की समस्या जिसे हम कहते हैं कि कश्मीर शांतिमय हो गया है, वह संभव नहीं हो पाएगा।

महोदया, मैं समझता हूं कि उस रास्ते पर हम बढ़ गए हैं और वहां जो चुनाव हो रहे हैं, उस में स्वायत्तता का प्रश्न निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण है, लेकिन बात किस से की जाए? कोई कहता है कि सन् 1952 चाहिए, कोई कहता है सन् 1948 चाहिए और कोई कहता है कि हमें यह चाहिए, लेकिन जनता जैसे मैंने कहा जो चाहती है, वह बिल्कुल उस के भिन्न है।

चुनाव से जो विधानसभा बनेगी, उसमें चुने हुए लोग आएंगे, उनके जरिए मंत्रणा होगी और मंत्रणा होने के बाद, मैं समझता हूं, एक नया वाद शुरू होगा। यह जो राजनैतिक बात करते हैं, बड़े नेता तरह तरह की बात करते हैं, ऐसा लगता है कि कश्मीर की सारी आवाम जो है वह भारतीय संघीय ढांचे से अलग है। मैं समझता हूं कि यह एक भ्रम फैलाने की बात है।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): सिब्ते रज़ी जी, प्लीज वाइंड अप कीजिए।

सैयद सिब्ते रज़ी: मैं खतम कर रहा हूं मैडम। अंत में, मैं एक बात कहना चाहूंगा। डोडा में या और मुकाम के ऊपर जो हमारे लोगों को मारा जाता है, उसके बारे में थी सरकार को, खासतौर पर जो यह ऊधमपुर का इलाक़ा है, उसमें हमारे जो भाई मारे जाते है, उनके लिए विशेष सुरक्षा का इंतजाम किया जाना चाहिए। हमें कश्मीर के मामलात को समझना चाहिए।

मैडम, अभी कश्मीर में जो इलेक्शन हुए हैं या हमारी कश्मीर की जो नीति है, मैं कहूंगा कि दुनियां के बहुत से देश आज उसको एण्डोरस् कर रहे हैं। ब्रिटेन के अखबारों ने तो इस कश्मीर के इलेक्शन के बाद जो टीका-टिप्पणी की है, वह हमारे देश के हिसाब से सही नहीं है, लेकिन वहां के फारेन मिनिस्टर के खिलाफ वहां के जो कुछ स्थाई पाकिस्तान के रहने वाले हैं लोग लंदन के अंदर, उन्होंने प्रदर्शन करके यह साबित कर दिया है कि सही बात वह सुनना नहीं चाहते। यकीनी तौर पर कश्मीर एक ऐसा सवाल है, जो हल होने की तरफ बढ़ चुका है।

अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि यह जो अरसा है कश्मीर में चुनाव का, यह तीन हफ्ते से कम करके दो हफ्ते किया जाए और वहां की कैमपेनिंग जो है उसका समय कम किया जाए। जाहिर है कि यह काम इलेक्शन कमीशन का होगा, लेकिन मैं समझता हूं कि वहां यह जो विधानसभा चुनाव होंगे यह काफी बड़े चुनाव होंगे, काफी लोग वहां चुनाव में लड़ेंगे। इसलिए बेहतर यही होगा कि कैमपेनिंग का समय जो है वह कम किया जाए। पिछली बार एक कंस्टीट्यून्सी में तो कैमपेनिंग का समय करीब करीब दो महीने रखा गया। ऊधमपुर की जो कंस्टीट्यून्सी है उसके अंदर कैमपेनिंग दो महीने चला। खुशी की बात है कि कोई बड़ी हताहत नहीं हुई, लेकिन हमें अब रिस्क नहीं लेना चाहिए, किसी कांपलीसेन्सी का शिकार नहीं होना चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा रखे गए इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। धन्यवाद।

†[| Transliteration in Arabic Script.

۷۰ لوگوں نے اپنے پرچے داخل کئے ہیں۔ ایک سیٹ کیلئے دس دس پندرہ پندرہ لوگ بڑے اتساہ کے ساتھ۔ بڑے جوش کے ساتھ آگے بڑھے۔ یہ کوئی معمولی بات نہیں ہے۔ اسادھارن پرستھیتیوں میں جہاں جان جانے کا خطرہ ہو اور بہت سے ایسے ملیٹینٹ تھے۔ اگرواری تھے۔ آتنکوادی تھے۔ جنھوں نے یہ چیتاونی دے رکھی تھی کہ اگر کوئی بھی اپنا نامانکن پترداخل کرنے کیلئے آگے بڑھیگا تو ہو سکتا ہے کہ اسے اپنی جان سے بھی ہاتھ دھونا پڑے۔ لیکن وہاں راج نیتک کارپکرتاؤں نے۔ سبھی پارٹیوں کے کارپکرتاؤں نے بندوق کی۔ آتنکوادیوں کی اس چنوتی کو قبول کیا اور جب چناؤ کا وقت آیا تو ۷۰ لوگوں نے اس چناؤ کے اندر امیدوار کے روپ میں بھاگ لیا۔ جنمیں سے چھ لوگ وہاں سے جیت کر آئے۔ میں اس بات کو کہہ رہا تھا کہ پچھلے سات سالوں سے لوگ سمجھا کشمیر کے معاملے میں کوئی زبان نہیں رکھتی تھی۔ لیکن اس چناؤ کے ذریعے کشمیر کو زبان مل گئی ہے۔ اپنی سمسیاؤں کو کہنے کیلئے۔ یا اپنے حالات کو دیش کے سامنے رکھنے کیلئے زبان مل گئی ہے۔ اسی لئے میں سمجھتا ہوں کہ یہ ایک نئی شروعات

دیش کے اس حصے کو۔ اس چیپٹر کو نکالنا پڑا تھا۔

شروع میں جب پچھلی سرکار نے اس بات کا فیصلہ کیا کہ وہاں چناؤ ہونے چاہئے تو سب تو میں نہیں کہوں گا۔ لیکن بہت ساری جو ہماری راج نیتک پارٹیاں ہیں انھوں نے اسکا وروودھ اسلئے کیا تھا کہ وہ اسادھارن پرستھیتیاں ہیں غیر معمولی حالات ہیں۔ اور ایسے اگر غیر معمولی حالات میں الیکشن کرانے کیلئے لکڈیو نہیں ہونی چاہئے وہ نہیں ہے لیکن اسکے باوجود پچھلی سرکار نے اس بات کا فیصلہ کیا کہ لوک تنتر کے اندر لوک شاہی کے اندر لوک پریئے سرکار کے اندر کوئی وکلپ نہیں ہے۔ ہمیشہ ہمیشہ کیلئے اور اسلئے بڑی کٹھنائی کے ساتھ بڑے ڈیٹرمینیشن کے ساتھ چناؤ کا نرنے لیا گیا اور چناؤ کی گھوشنا ہوئی۔

پرارمبھ میں ہمارے دوست کہتے تھے کہ چناؤ کیلئے نامانکن آگے نہیں بڑھینگے لکڈیڈیشس آگے نہیں آئینگے۔ لیکن آپ جانتے ہیں کہ پورے خطے میں۔ جموں و کشمیر میں اور لداخ میں صرف چھ سیٹیں ہماری سنسد کیلئے آتی ہیں۔ میڈم آپ یہ بھی جانتی ہیں کہ ان چھ سیٹوں کیلئے لگ بھگ

سے "سن آف سوائل" جو بچے وہاں پیدا ہوئے ہیں۔ جو اس حصے سے تعلق رکھتے ہیں انکو ٹریننگ دینے کیلئے وہ اپنی سازش رچنے میں کامیاب نہیں ہو رہا ہے جبکہ آج سے ۵-۶ سال پہلے وہ کامیاب ہو گیا تھا۔ اسی لئے آج عباؤ سے کے سینکڑوں کو خطرہ اس علاقے میں ہو گیا ہے۔ آپ جانتے ہیں محترمہ بچھلے چناؤ کے زمانے میں یہ زبردست چنوتی۔ جب سنسد کے چناؤ ہو رہے تھے۔ ہمارے کے کرایے کے سپاہیوں کی معرفت پاکستان کی طرف سے بھیجی گئی تھی کہ وہ پوری طرح سے اسکے اندر دخل اندازی کریں گے اور "ہماری چناؤ پرکریہ میں" کسی طرح کی گڑبڑ کریں گے۔ میں مانتا ہوں کہ ہماری سرکشا کی جو فورسیز تھیں انھوں نے بہت اچھا کام کیا اور بڑی تیزتا کے ساتھ وہ وہاں پہنچ گئے رہے لیکن سب سے بڑی بات یہ ہے کہ وہاں کی جنتا۔ وہاں کا عوام وہاں کے لوگ بہت بڑی تعداد میں نکلے اور انھوں نے کہا کہ اب ہمیں اس چلن کو ختم کرنا ہے۔ آگ اور خون کا جو کھیل ہو رہا ہے اسکو ختم کرنا ہے اور ایک بڑی تعداد کے اندر وہ باہر آئے۔ اب کہا یہ جاتا ہے کہ وہ بڑی

ہے اور نئی دشا ہے۔ ان سات ورشوں کے اندر پچھلے دو سال سدبھاؤ کے ساتھ یا سدبھاؤ کی طرف تیزی سے بڑھتے ہوئے چرن اسے کہا جا سکتا ہے۔ وہاں آتنکواد میں کمی آئی ہے اور دہشتگردوں کی سنکھیا کم ہوئی ہے۔ ابھی بھی ہمیں اخباروں اور دیگر اطلاعات کے ذریعے پتہ چلتا رہتا ہے کہ آتنکوادیوں نے ہمارے کچھ نہتھیوں کو مارا۔ ان کی جان لی۔ لیکن اسی کے ساتھ ساتھ آتنکوادیوں کا بھی بہت زیادہ نقصان ہوا ہے اور ان کے حوصلے پست ہوئے ہیں۔ وہ جوش اور خروش جو انکو "مس گائڈڈ" کر کے پیدا کیا گیا تھا اب وہ ختم ہو گیا ہے۔ ہمیں خوشی ہے۔ مجھے بھی وہاں کئی مرتبہ جانے کا موقع ملا ہے۔ اب وہ لوگ جو اس حصے کے رہنے والے ہیں۔ وہ ماں باپ جنھوں نے اپنے بچوں کو وہاں جنم دیا ہے لیکن جو کسی گمراہی کی وجہ سے اپنے بیٹوں کو۔ اپنے نوجوان بچوں کو سرحد کے اس پار ٹریننگ لینے کیلئے بھیجتے تھے آج انھوں نے اس بات کا فیصلہ کیا ہے کہ اس سے سنورے گا یو سی کے سنورے "تہاش ہونے کے" سنورے بلیدان دینے کے کچھ نہیں ملتا ہے اس لئے پاکستان وہاں

آتنکوادی جنھوں نے دلی کے انور کئی طرح کی دھمکیاں پھیلا رکھی جنکا انھوں نے سراغ لگایا - انکا انھوں نے مقابلہ کرکے انکا پردہ فاش کیا - اسلئے وہاں کا جو مقامی انتظامیہ تھا اسکے اندر کے اندر اگر آپ دیکھیں مہاجر جو یہاں سے گئے تھے آج وہ کس حالت میں رہتے ہیں اور اسی دیش کے رہنے والے کے آدھار پر ریفیوجیز کے نام کے اوپر ایک دوسرے بھی کافی چیزیں آئی اور یہ ساری چیزیں جو ہو رہی ہیں - نشچت روپ سے پاکستان کو اچھا نہیں لگ رہا ہے - آج جتنی ویا کلتا ہے جتنے لوگ انساحت ہیں - یہ ودھان سبھا کے چناؤ میں اس چناؤ کے بعد بھی سنسد کے چناؤ ہوئے اگر آج آپ جا کے دیکھیں تو نشچت روپ سے پورن روپ سے پورا ماحول نہیں بدلا ہے لیکن ماحول کے اندر کافی تبدیلی آئی ہے کیونکہ اس سے پہلے جن کی نئی دشا ملی ہے آج کشمیر کے عوام کو خاص طور پر اس بات کا احساس ہو گیا ہے کہ انکو آزادی کی بات کہہ کر دھوکہ دیا گیا تھا اور جو دیش سے آزادی کیلئے زیادہ سے زیادہ تبلیغ کی جا رہی تھی - انکو زیادہ سے زیادہ ان سبھی کی آزادی ہے وہ بھی پوری طرح سے محفوظ ہے یا نہیں - آج پاکستان کے اندر کراچی کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے - اس دیش کے اندر ہی آزادی تو کیا انسانی حقوق

تعداد میں آئے لیکن ادھر پیرا ملٹری فورسز اور فوج کے لوگ بھی دکھائی دیئے - نشچت روپ سے آج سادھارن پرسنتھیوں میں بھی - چاہے بہار میں یہ چناؤ ہوں چاہے اتر پردیش میں چناؤ ہوں اور چاہے بھارت میں کسی پردیش میں ہوں بنا لاء اینڈ آرڈر اور انفورسمنٹ ایجنسیز کی مدد سے چناؤ سمپنن نہیں ہو سکتا میں میں سمجھتا ہوں کہ ہر دیش میں ایسی ہی ستھتی ہوتی ہے اور اسکو بنائے رکھنے کیلئے لوگ تانترک دیشوں کے اندر بھی یہ لاء اینڈ آرڈر اور انفورسمنٹ ایجنسیز مدد کرتی ہیں - بالکل اسی طرح سے کشمیر کے اندر بھی ہوا - میں کہنا چاہتا ہوں کہ اس سمبندھ میں انتظامیہ نے بڑا اچھا کیا ہے - پرشاسن کی بھی ہمیں تعریف کرنی چاہئے - انھوں نے بڑی ہی دلچسپی سے ان حالات کا مقابلہ کیا - جموں اور کشمیر کی پولیس جسکے بارے میں ہمارے بھی من میں شاید کہیں نہ کہیں شبہ تھا شبہ کے شکار ہو گئے تھے - کہ شاید وہ اتنی تتپرتا سے ڈیوٹی نہیں کر رہی ہے - وہ اپنے فرض کو نبھا نہیں رہی ہے - اس پولیس نے بھی اچھا پرفارمنس دیا - کئی موقع ایسے آئے کہ وہ

اس خط سے جوڑ کر دیکھا ہے۔ جو ایکسیشن کا ڈاکومینٹ تھا اسکے اندر اس بات کے اوپر سیسٹ روپ سے ہمارے جو نیتا تھا انھوں نے اس بات کا آشوا سن دیا تھا۔ کہ انکا جو خصوص کریکٹر ہے۔ انکی جو سنسکرتی ہے۔ انکی جو بھاشا ہے انکی جو خود مختیاری ہے جسکے بارے میں انھوں نے وعدے کئے تھے۔ ان سے ہی ۳۷۰ کی بھرپائی ہوتی ہے۔

میں سمجھتا ہوں کہ ۳۷۰ کے بارے میں بار بار بات کرنے جب بھی مسئلے کا حل ہونے کی بات ہونے لگتی ہے تو ایک بار پھر شک و شبہ کا ماحول پیدا ہونے لگتا ہے۔ میں اپنے پورو ولکتا سے متفق ہوں کہ ہمیں اس ایشو کے اوپر جو بہت ہی سمویدن شیل ایشو ہے بہت زیادہ سمجھداری سے اور دیش ہت کو مدِ نظر رکھتے ہوئے دیش کی اکھنڈتا اور ایکتا کو مدِ نظر رکھتے ہوئے اپنے وچار پرکٹ کرنے چاہیئے۔ میں سمجھتا ہوں کہ آج جو آتنکوادی کا سوال ہے یہ ہمارے نیتاؤں کا سوال زیادہ ہے۔ جنتا کا کم ہے سوا ئنتا کا سوال بار بار جو اٹھاتے ہیں۔ وہ بڑے نیتا اٹھاتے ہیں۔ یقینی طور پر یہ انکا سوال ہے جسکا حل ہونا چاہیئے۔ کا خون بہا رہے ہیں۔ مجھے تو دکھ ہوتا ہے جو لوگ مذہب کی بات کرتے ہیں۔ دھرم کی بات کرتے ہیں۔ کشمیر کے اندر بھی انھوں نے مذہب اور دھرم کی بات کہکر لوگوں میں جوش و خروش پیدا کیا۔ وہ لوگ جو ایک دھرم کے ماننے والے ہیں۔ ایک دوسرے کا قتل کرتے ہیں ایک دوسرے کو مار دیتے ہیں۔ اس پرکار کی سپر سنستھیوں نے بھی کشمیر کی عوام کو سوچنے پر مجبور کیا ہے اس دیش کے اندر۔ اس شبد کے اندر جو آزادی کی بات کرتے ہیں۔ وہ بھی شاید ممکن نہیں ہو پائیگا۔ اور پاکستان جس طرح سے وقتاً فوقتاً اکساتا رہتا ہے اس سے بھی انکا کسطرح سے بھلا ہونے والا نہیں ہے۔ میں ایک بات اور عرض کرنا چاہوں گا کیونکہ ہماری جو دوسری راجنیتک پارٹیاں ہیں خاص طور پر بھارتیہ جنتا پارٹی اس نے کئی مرتبہ کہا ہے ۳۷۰ جو ہے وہاں آتنکواد کا ایک کارن ہے۔ اس طرح کی بات کہی گئی ہے جموں کشمیر کے بارے میں۔ میں اس بات سے پوری طرح سے سہمت نہیں ہوں۔ کیونکہ ۳۷۰ نے ہی ملکے روپ سے تو نہیں کہا جائیگا لیکن بہت زیادہ طریقے پر کشمیر کو ہمارے

کا کوئی نوجوان چن لیا جاتا ہے اسکا سلیکشن ہو جاتا ہے تو اس سے "تھارڈ برتھ" بڑھتی ہے۔ اسلئے ان علاقوں کے لئے ہمیں خاص طور پر یہ جو آل انڈیا کانسیپٹ ہے اپنے بل کے اندر۔ اپنے سیاہی چننے کا اسکے بارے میں سوچنا چاہیئے۔ ترجیح مقامی لوگوں کو دینی چاہیئے۔ یہ کشمیر کا ہی سوال نہیں ہے اسلح کا سوال بھارت کے ہمارے دوسرے علاقوں کے اندر جو علاحدگی کی آواز ہے ہماری فورسیز میں رہنے کا اس پر بھی میں سمجھتا ہوں کہ اگر ہم غور کریں تو کافی فرق پڑ سکتا ہے۔ کئی مہینوں سے ہمارے جو غیر ملکی سیاح تھے آتنک کا شکار ہو رہے ہیں۔ اور ابھی تک یہ پتہ نہیں چلا ہے۔ کبھی اخبار سے یہ پتہ چلتا ہے کہ انکو مار ڈالا گیا کبھی یہ پتہ چلتا ہے کہ نہیں ابھی وہ ٹھیک ہیں محفوظ ہیں۔ میں مانتیہ گرہ منتری جی سے "لیٹیسٹ پوزیشن"۔ جاننا چاہونگا کہ آخر ان "ہوسٹیجز" کی پوزیشن کیا ہے۔ کئی ہمارے جو ملینے سوئٹ تھے انھوں نے وہاں لوٹ مار کی بات بھی ہے۔ لیکن یقینی طور پر ہمارے جو سیاح ہیں خاص طور پر غیر ممالک سے آتے ہیں۔ غیر ممالک سے کیا۔ ہمارے دیش کے سیاح بھی وہاں جانا پسند نہیں کر رہے ہیں۔ آدی لیکن کشمیر کی وادیوں کے اندر جایئے اور سری نگر میں نہ ٹھہریئے کشمیر کے دوسرے علاقوں میں چلے جایئے جو دیہات کے علاقے کہلاتے ہیں "گراموں انچل" کہلاتے ہیں۔ وہاں جنتا کی سمسیا "سوا یتنا" کی سمسیا نہیں ہے۔ وہاں کی جنتا کی سمسیا آتنک کی سمسیا ہے۔ دہشت گردی کی سمسیا ہے۔ روٹی کی سمسیا ہے۔ روزگار کی سمسیا ہے۔ کاروبار کی سمسیا ہے سوکھتے ہوئے باغوں کی سمسیا ہے سوکھتے ہوئے باغوں کو نئی زندگی دینے کی سمسیا ہے۔ ٹورزم کی سمسیا ہے۔ ان سمسیاؤں کا ہم نراکرن کر سکیں اور آتنک وچار دھارا کے بارے میں سوچ سکیں۔ جس سے جلدی سے جلدی انکے روفگار پورے ہو سکیں۔ روزگار کا جہاں تک سوال آتا ہے۔ مجھے بھی راجیہ منتری کی حیثیت سے کام کرنے کا موقع ملا ہے۔ آج ہمیں سوچنا پڑیگا۔ جموں کے اندر جاکر۔ کشمیر کے اندر جاکر ہم سرکشا بلوں کی نیو لکیاں کرتے ہیں۔ چین کرتے ہیں۔ تو ہمیں یہ خیال کرنا چاہیئے کہ جموں میں ہم کر رہے ہیں تو جموں کے علاقے کے ہی لوگ ہونے چاہیئے اگر ہم اودھم پور کے علاقے میں کر رہے ہیں اور وہاں پر ہمارا

اسکے اوپر ہمیں کوشش کرنی چاہیئے اور
میں سمجھتا ہوں کہ وہ لڑائی جو کامیٹی ہے
جو ہماری انٹرنیشنل کامیٹی ہے ہماری
جو انٹرنیشنل پولیٹی ہے اسکے اوپر بھی
اسکا کچھ برا بھاؤ پڑ رہا ہے۔

میں ایک اور مائنارٹی گروپ منتری جی
سے پوچھنا چاہونگا کہ کئی مرتبہ کوشش
کی گئی کہ کشمیر کے مدے پر دو طرفہ بات
چیت سے۔ سمجھوتہ فریقی بات چیت یا
باہری طاقت کے ذریعے اسمیں ایک ساورش
کی صورت میں۔ اسکو انٹرنیشنلائز کا بنا کر
اسکے اوپر وچار وِمرش کیا جائے۔ ابھی
مسز بھٹو نے بھی کچھ دن پہلے۔ ہفتہ بھر
پہلے لاہور میں ایک پریس کانفرنس کے
ایڈریس کرتے ہوئے کچھ اس طرح کا اشارہ
کیا ہے۔ ہم اسکے اندر بات بالکل اسپشٹ
کر دینا چاہتے ہیں ایک تو کشمیر ہمارا
اٹوٹ حصہ ہے لیکن اگر کسی مسئلے
کے اوپر کسی دیش کو کسی طرح کا بھرم
ہے۔ کوئی بات اس سے کرنی ہے۔ تو یہ
دو طرفہ بات چیت ہو سکتی ہے۔ اسمیں
سمجھوتہ فریقی بات چیت ہو سکتی ہے۔
یا کسی کی ساورش یا کسی کے انٹرمیڈیری
ہونے کا کوئی سوال نہیں اٹھتا ہے۔ پچھلی
جاتا ہے تفریح کیلئے۔ ضرورتیں کیلئے۔ تبدیلی
آب و ہوا کیلئے۔ لیکن اسکو اس بات کا
خدشہ ہو کہ پتہ نہیں کس وقت وہ اغوا
کر لئے جائینگے۔ پتہ نہیں کس وقت وہ
اٹھا لے جائینگے۔ پتہ نہیں کس وقت
کس طرف سے گولی آئیگی۔ اور انکی
زندگی ختم ہو جائیگی تو یقینی طور پر اس
انڈسٹری کے اوپر اثر پڑتا ہے۔ میرا نظریہ
ہے کہ یہ دیکھنے کی کوشش کی جائے کہ ان
سو سیٹیجر کو کس پرستھتی میں رکھا گیا ہے
آیا وہ زندہ ہیں تو انکو چھڑانے کا کیا پریاس
کیا جا رہا ہے۔ لیکن اس کے ساتھ ساتھ میں
منتری جی سے اس سوال کے ساتھ انٹرنیشنل
جو ہماری کامیٹی ہے اور جو ہمارے بڑے
بڑے دیش ہیں۔ جنکے پاکستان سے بہت
اچھے تعلقات ہیں۔ ان سے بھی گزارش
کرنا چاہونگا کہ وہاں کی جنتا اور وہاں
کی سرکار پاکستان پر دباؤ ڈالے کہ وہ
ان ۶ جو بھوگی ہیں۔ جو ہوسٹیجز ہیں
انکو چھڑانے کیلئے اپنا جو اسکا رول
ہو سکتا ہے۔ وہ پوری طرح سے ادا
کریں۔ کیونکہ اس معاملے کے اندر ہمارے
راشٹریہ ہت بھی ہیں اور انٹرنیشنل
ہت بھی اسکے اندر نہیت ہیں۔ اسلئے

سرکار نے بھی اس سلسلے میں اپنی پالیسی کا پورے طور سے اعلان کر دیا تھا۔ آشا کرتے ہیں۔ کہ موجودہ سرکار بھی اسی پالیسی پر چلیگی۔ اور ساری دنیا کو یہ بتا دیگی کہ کشمیر ہمارا اٹوٹ حصہ ہے۔ اگر اس معاملے میں کوئی سپیوشن ہے پاکستان اسکے اوپر کسی طرح کا سپیوٹ بناتا ہے یا کسی طرح کا سوال اٹھاتا ہے تو جیسا کہ پردھان منتری نے پاکستان کے نئے پردھان منتری کے ہونے پر بات چیت کرنے کی نئی تجویز رکھی ہے۔ ہمارے پردھان منتری نے بھی اس تجویز کا وِلکم کیا ہے تو وہ بات ممکن ہو سکتی ہے۔ لیکن کوئی تیسری طاقت چاہے دنیا کی کتنی ہی بڑی طاقت ہو۔ کیونکہ ہم دیکھ رہے ہیں کہ پچھلے کئی سالوں سے اس بات کی کوشش کی جا رہی ہے کہ کشمیر کو انٹرنیشنلائز کر کے بین الاقوامی سیاست کا اکھاڑہ بنایا جائے۔ بھارت کے لوگ اس بات کو کبھی پسند نہیں کرینگے۔ اور اس معاملے میں آپکا مت جو بھی ہو کسی سرتیہ اس ھاؤس کے ذریعے اور اپنی انڈی ویجول کیپیسٹی میں بھی وہ ظاہر کر چکے ہیں۔ لاسٹ میں ایک بات کہنا چاہتا ہوں فارن ملیٹنٹ جو تھے۔ جو آتنکوادی تھے۔ جنہوں نے کافی ھتاھت بھی کی تھی اور وہ مس گائڈڈ ہو گئے تھے۔ مگراہ ہو گئے تھے۔ ان میں کتنا سینس پیدا ہوا۔ بھارت کے خلاف کے اندر انھوں نے بات چیت شروع کی ہے اور اس سلسلہ میں سابق وزیر داخلہ سے بھی کچھ ملیٹنٹ ملے تھے۔ میں آنریبل وزیر داخلہ صاحب سے جاننا چاہونگا کہ اس وقت اس بات چیت کی کیا پوزیشن ہے۔ کیونکہ مسئلہ کا اگر کوئی بھی مستقل حل ڈھونڈنا چاہتے ہیں تو وہ بات چیت کے ذریعے ہو سکتا ہے۔ اس سلسلہ میں جو پہل ہوئی تھی۔ اسکی کیا اسٹیٹس ہے۔ مہودیہ "رینے گیشن" کے بارے میں بار بار آجاتا ہے کہ وہ ھتیار بند ہیں ان کے ھتیار رکھے جانے چاہیئے۔ میں پیشٹ روپ سے کہنا چاہونگا کہ انکو رینے گیشن کہنا بھی ٹھیک نہیں ہے۔ وہ "ریبلز اور ملیٹنٹ" ہیں۔ ہمارے دیش کی جو ملٹری دھارا ہے۔ جو ہماری قومی دھارا ہے۔ اس سے وہ اپنے کو جوڑ چکے ہیں۔ اسلئے انکے معاملے میں کوئی بھاونا سے کسی دباؤ میں آکر فیصلہ نہیں کیا جانا چاہیئے کیونکہ وہ ایک آتنکوادی گروپ

میں ایک گروپ بنا ہوا ہے۔ اس میں انتہا پسند
قسم کے لوگ انکو مدد کرتی رہتی ہیں۔ پیسے
سے مدد کرتی رہتی ہیں اور مورل مدد
کرتی رہتی ہیں۔ لیکن آج ملیٹینٹس نے خود
اپنے اندر سوال کرنا شروع کر دیا ہے کہ وہ
لوگ جن کے پاس کچھ نہیں ہے۔ آج وہ کروڑ
پتی بن گئے ہیں انکی لاشوں پر چلکر جو
کشمیری عوام کی ہیں۔ تو ایک چنوتی کا
ماحول شروع ہو گیا ہے۔ کہ ہم اس صورت
کو اپنے دیش کے حق میں کس طرح سے
استعمال کر سکتے ہیں۔ ملیٹینٹس کی کمر
اور کس طرح سے کمزور کر سکتے ہیں۔ مہودیہ
اس میں کوئی شک نہیں کہ ملیٹینسی ایک
ایسی وبا ہے جو وقتی طور پر ایسا لگتا
ہے کہ ختم ہو گئی ہے۔ لیکن مستقل طور پر
ختم ہونے کیلئے اسکو کافی وقت لگتا ہے
اسلئے ہمیں "کامیابی مینسی" کا شکار نہیں
ہونا چاہئے۔ ہمارا دشمن بہت ہوشیار
ہے۔ ہمارا دشمن بہت کیشہ پرور ہے۔
ہمارا دشمن بہت مکار ہے۔ اسلئے ہمیں
ہوشیاری کے ساتھ اس بات کی کوشش
کرنی چاہئے کہ ہم اسکی کسی قسم کی سازش
کا شکار نہ ہو جائیں۔

مہودیہ۔ آج ریلوے بجٹ آیا ہے۔
کو چھوڑ کر بھارت کی شانتی و ویوستھا
میں یا مین اسٹریم میں شامل ہو گئے ہیں
لیکن وہ آتنکوادیوں کا نشانہ بنے ہوئے
ہیں۔ اور کسی وقت بھی اگر آتنکوادی یا
آتنکوادیوں میں یا فارمر آتنکوادیوں
میں یا پرزینٹ آتنکوادیوں میں لڑائی
ہوتی ہے تو نشچت روپ سے ان کی جان
کو خطرہ ہے۔ اسلئے اس سلسلہ میں
جو بھی قدم اٹھائے جائیں وہ بہت سوچ
سمجھ کر اٹھائے جانے چاہئے۔ جتنا انکو
ریہیبلیٹ کر چکی ہے۔ کیونکہ کئی ملیٹینٹس
کے نمائندے بھی پچھلے چناؤ میں لڑے
ہیں۔ لیکن اس چناؤ میں جنتا نے ان
میں سے ایک کو بھی ممبر منتخب نہیں دیا ہے۔
آج انکا مومینٹم ٹوٹ رہا ہے۔ آج جو لوگ
باہر سے ملیٹینٹس کے ذریعے ہمارے اس
پردیش میں ڈسٹربینس پیدا کرنا چاہتے
ہیں انکا مومینٹم گر گیا ہے۔ مہودے آج
ہڑتالیوں کی بات روزآنہ ہوتی ہے۔ کہ آج
سری نگر بند ہے۔ لیکن سری نگر کے علاوہ
بھی کشمیر بہت بڑا ہے۔ اسکا علاقہ کافی
پھیلا ہوا ہے۔ لیکن اور دیہی علاقوں
میں اور قصبات میں اور شہروں میں
اس بات کی کامیابی نہیں ہوتی تو سری نگر

جائیں۔ چاہے وہ پنڈتوں کی صورت میں ہو لیکن میں انھیں پنڈتوں کی صورتوں میں نہیں مانتا ہوں۔ میں صرف یہ مانتا ہوں کہ وہ ہمارے دیش کے اونچے ناگرک ہیں۔ اور حالات کی مجبوری کی وجہ سے اپنے گھروں کو چھوڑ کر چاہے وہ جموں میں ہوں۔ چاہے کہیں ہوں۔ وہ جب تک واپس نہیں چلے جاتے۔ اور یہ سمجھ لوگ جب تک وہ سمجھ ہو کر اپنے وطن واپس نہیں چلے جاتے میں سمجھتا ہوں کہ کشمیر کی سمسیا جسے ہم کہتے ہیں کہ کشمیر شانت ہو گیا وہ سمسیا ہو نہیں ہو پائیگا۔

مہودیہ میں سمجھتا ہوں کہ اس راستے پر ہم بڑھ گئے ہیں اور وہاں جو چناؤ ہو رہے ہیں۔ اس میں سواتنتا کا سوال یقینی طور پر اہم ہے۔ لیکن بات کسی سے کی جائے۔ کوئی کہتا ہے کہ سنہ ۱۹۵۲ چاہیئے۔ کوئی کہتا ہے سنہ ۱۹۷۸ چاہیئے کہ اور کوئی کہتا ہے کہ ہمیں یہ چاہیئے۔ لیکن جنتا جسے میں نے کہا جو چاہتی ہے وہ بالکل اس سے مختلف ہے۔

چناؤ سے جو ودھان سبھا بنیگی۔ اسمیں چنے ہوئے لوگ آئینگے۔ انکے ذریعے بات چیت ہو گی۔ اور بات چیت ہونے جسمیں وہاں کی ریلویز کے بارے میں کہا گیا ہے۔ لیکن جب تک کشمیر کو۔ وہاں کی ریلوے سے پوری طرح سے نہیں جوڑ دیا جائیگا پورن روپ سے جو ہماری راشٹریہ ایکتا کا جو پرولہ ہے۔ اس سے کشمیر نہیں جڑ پائیگا۔ جب کشمیر ریل کے ذریعے جڑ جائیگا۔ وہاں ریل کے ذریعے جڑ جائینگے تو وہاں کے باغوں کے پھل آسانی سے یہاں بھیجے جا سکتے ہیں۔ آج پھل نیچے اترتے ہیں تو بیچ میں برفباری ہو جاتی ہے آواگمن کے سادھن استوویست ہو جاتے ہیں۔ ایسی صورت میں وہ لوگ اپنے کو بالکل الگ الگ سمجھنے لگتے ہیں مہودیہ وہاں کے حالات بہتر بنانے میں میں سمجھتا ہوں کہ ریلوے کے کارے کرم کو تیز کرنے سے بھی کافی سہارا ملیگا۔ مہودیہ کشمیر کو سادھارن روپ میں میں اسوقت مانونگا جب وہاں مکمل شانتی مانونگا۔ جو کہ ایک ممبر پارلیمنٹ کی حیثیت میں محسوس کرتا ہوں۔ ایک ہندوستانی شہری کی حیثیت سے محسوس کرتا ہوں۔ کہ ہمارا وہ کشمیر جسے ہم "جنت نشان" کہتے ہیں۔ وہ کشمیر اسوقت پورا ہو پائیگا جب وہاں سے ہمارے جو لوگ کشمیر کو چھوڑ کر آئے ہیں۔ وہ واپس چلے

بو جو ٹیکا ئیشن کی ہے وہ ہمارے دیش کے حساب سے صحیح نہیں ہے۔ لیکن وہاں کے فارن منسٹر کے خلاف وہاں کے جو بچے اسٹوڈنٹ پاکستانی کے رہنے والے ہیں۔ لوگ لندن کے اندر۔ انھوں نے پروٹسٹ کرکے یہ ثابت کر دیا ہے کہ صحیح بات وہ سننا نہیں چاہتے۔ یقینی طور پر کشمیر ایک ایسا سوال ہے جو حل ہونے کی طرف بڑھ چکا ہے۔

آخر میں میں یہ کہنا چاہوں گا کہ یہ جو عرصہ ہے کشمیر میں چناؤ کا۔ یہ تین ہفتے سے کم کرکے دو ہفتے کیا جائے اور وہاں کی کیمپیننگ جو ہے اسکا سمے کم کیا جائے۔ ظاہر ہے کہ یہ کام الیکشن کمیشن کا ہوگا۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ وہاں جو یہ وادیاں سمجھا جاتا ہے کہ یہ کافی بڑے چناؤ ہوں گے۔ کافی لوگ وہاں چناؤ لڑیں گے۔ اسلئے بہتر یہی ہوگا کہ کیمپیننگ کا وقت جو وہ کم کیا جائے۔ پچھلی بار ایک کانسٹی ٹیونسی میں تو کیمپیننگ کا وقت قریب دو مہینے رکھا گیا۔ اور ہم پوری جو کانسٹی ٹیونسی ہے اسکے اندر کیمپیننگ دو مہینے چلا۔ خوشی کی بات ہے کہ کوئی بڑی حادثات نہیں ہوئی۔ لیکن ہمیں رسک نہیں لینا

کے بعد۔ میں سمجھتا ہوں کہ ایک نیا دور شروع ہوگا۔ یہ جو راجنیتک بات کرتے ہیں بڑے نیتا طرح طرح کی بات کرتے ہیں۔ ایسا لگتا ہے کہ کشمیر کی ساری عوام جو ہے وہ بھارت میں سنگھیہ ڈھانچے سے الگ ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ ایک بھرم پھیلانے کی بات ہے۔

اب سبھاادھیکش "کماری سروج کھاپرڈے" سبط رضی جی۔ پلیز وائنڈ اپ کیجئے۔

سید سبط رضی: میں ختم کر رہا ہوں۔

میڈم۔ انت میں۔ میں ایک بات کہنا چاہوں گا ڈوڈا میں یا اور مقام پر جو ہمارے لوگوں کو مارا جاتا ہے۔ اسکے بارے میں بھی سرکار کو خاص طور پر جو یہ اودھم پور کا علاقہ ہے اسمیں ہمارے جو بھائی مارے جاتے ہیں انکے لئے خاص حفاظت کا انتظام کیا جانا چاہیے ہمیں کشمیر کے معاملات کو سمجھنا چاہئے۔

میڈم ابھی کشمیر میں جو الیکشن ہوئے ہیں۔ یا ہمارے کشمیر کی جو پالیسی ہے میں کہہ سکتا کہ دنیا کے بہت سے دیش آج اسکے اندر دلچسپی کر رہے ہیں۔ برٹین کے اخباروں نے تو اس کشمیر کے الیکشن کے

چاہیئے - کسی کامیں سینسی" کا شکار نہیں
ہونا چاہیئے -
انہی الفاظ کے ساتھ میں آنریبل
وزیر اعظم کے ذریعے رکھی گئی اس تجویز
کی تائید کرتا ہوں - شکریہ - ختم شد"

SHRI R. MARGABANDU (Tamil Nadu): Madam Vice-Chairperson, first of all I would like to state something about the imposition of article 356 and also about article 370. Now article 370 is a temporary provision in respect of Jammu and Kashmir. That provision was introduced in 1952, nearly forty-four years have passed now. The Jammu and Kashmir issue is being dealt separately and it is given all special privileges. I feel, Madam, it is high time that article 370 got to be repealed and it should not be treated as a separate category State and no privileges should be extended to it. When you are saying that Jammu and Kashmir is a part and parcel of India, why should there be a separate Act? Why should there be a separate accord? Why should there be special privileges for a part of India? This is our view. So, this article 370 has to be deleted.

Madam, this is for extension of President's rule under article 356 in Jammu and Kashmir for a period of six months. I am happy that the Prime Minister has come forward with a statement that elections would be conducted in the month of September or even earlier. But what I am suggesting is that at least this Government should keep up this promise of conducting elections within six months. It was more than a decade ago that the Assembly elections were conducted there. We have not been able to control terrorism in Jammu and Kashmir for the last ten years and as a result of which common people are very much affected and routine life has been disturbed. These sorts of things should not be allowed. Strict action should be taken to control terrorist activities.

At the same time, the AIADMK party is of the strong view that article 356 of the Constitution is a draconian law on the statute. It should be deleted. It should be removed from the statute. I would like to quote a few lines of the framer of the Constitution, Dr. Ambedkar, regarding article 356. Dr. Ambedkar said:

> "It would be a dead letter on the statute. It should be the last resort. It should be exercised sparingly when all corrections fail. Warning should be given to hold elections. If both fail, then alone article 356 should be resorted to."

India has a federal set-up consisting of the Centre and State Governments each by itself independent and, at the same time, inter-dependent.

Sarkaria very often says, "It is misused and it is against the basic principles of federalism." This article is misused and abused by the Centre even on the slightest provocation which could result in the destruction of provincial autonomy. It becomes a victim of political opportunism. The use of this article by the Centre is hanging like Damocles' sword over the heads of State Governments. Whenever there is a State Government of any Opposition party, that State Government is dismissed. From 1951 onwards, with the dismissal of the Punjab Government, State Governments have been dismissed more than a hundred times including the mass dismissal of the Congress-ruled State Governments by the Janata Party. The State Government of Tamil Nadu was dismissed four times. M.G.R. Government was dismissed in the year 1980. But what happened? M.G.R. returned to power with unshakable majority. Very often State Govenments are dismissed on the reports of Governors of the respective States who act as spies of the State Governments. The Governor is nominated by the President whereas. Chief Ministers and Councils of ministers are elected representatives. The Governor acts on the advice of the Council of Ministers, but, at the same time, he can

misuse his power and dismiss the State Government which enjoys absolute majority.

Several instances can be quoted about the mass dismissal of BJP Governments in Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Himachal Pradesh and Rajasthan for no fault of theirs. Similarly, when the Janata Party came to power at the Centre, the Janata Party Government dismissed all the Congress-run State Governments and also other State Governments. The dismissal of the Uttar Pradesh Government of Shri Kalyan Singh was challenged in the High Court. The High Court also held that the dismissal of the Uttar Pradesh Government was unlawful.

A uniform standard is not followed for invoking article 356. In Andhra Pradesh, Chandra Babu Naidu, was asked to prove his majority in the Assembly. But this yardstick was not followed in Uttar Pradesh when the BJP wanted to form a Government after the dismissal of the Mayawati Government.

A Commission was constituted under the chairmanship of Justice Sarkaria. The Sarkaria Commission submitted a report regarding the Centre-State relationship. But that report was not taken up for discussion by any Government at the Centre. The policy of the Centre is to see that State Governments are kept as slaves under the Central Government.

The post of Governor must be abolished. Governor is appointed by the President and he has to act on the advice of the Council of Ministers. Statutorily, Governor has no discretionary powers. So the post of Governor is redundant. In some cases Governors do not hesitate to misuse their powers and they dismiss the Council of Ministers nothwithstanding the fact that the Council of Ministers enjoys full confidence of the legislature. In order to avoid such misuse of power, the post of Governor should be abolished and Chief Ministers should be vested with executive powers. Very often, Governors are appointed by the Centre without any consultation with the State Chief Ministers. Whenever there is a confrontation between a Governor and a State Chief Minister, even welfare legislations are not carried through. So Chief Ministers should be given more powers. Before the appointment of Governors, Chief Ministers should be consulted. Chief Ministers must have their say in these matters. So article 356 is a draconian law and it should be abrogated. That is the view of our AIADMK party. With these words, I conclude.

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam Chairperson, I support the Resolution moved by the Prime Minister as the intention is to conduct elections in Kashmir. The process for holding elections was started by the previous Government and this Government will continue with it. The most important aspect of this Resolution is that it intends to install a democratic Government, an elected Government in Jammu and Kashmir. While we are discussing this matter, we know that there is some kind of threat to this process from outside the country. An attempt is being made to subvert the whole process. I was listening to the hon. BJP Member, Shri Chaturvedi who was trying to distort the history of this nation and the history of how Kashmir became a part of this country. The BJP is very vocal when it comes to discussing article 370. Now, my friends in the AIADMK, are also against article 370. I do not know what provoked them. But I would like to say that this special provision which has been made in the Constitution is not just for Kashmir. Part 21 of the Constitution says: 'Temporary, transitional and special provisions.' Under aricle 371, some other States have also been included. The Eastern States—Nagaland, Mizoram, Assam, Andhra Pradesh, Maharashtra and Gujarat have also been included. Hon. Members speak highly about Shri Ambedkar and others who drafted the Constitution of this great country. But they forget that these provisions, that is, article 356 and 370 were included by them. Why are you forgetting

this fact? I do not want to deal with article 356 now. With regard to article 370, an impression has been created that this special status has been given only to Kashmir. This provision has been extended to some other States also. The question is, why? It is because of the peculiar circumstances faced by a State at a certain time. What is the history of Kashmir? If one goes through the books on Kashmir, one will be able to understand the turmoil that Kashmir went through at that time. Even today, we have Pakistan-occupied-Kashmir. We have the Peace Keeping Force in some areas. So, Kashmir is not like Kerala, or Tamil Nadu or Andhra Pradesh. It is something special and this we have to take into account while discussing Kashmir. While discussing the seven Eastern States of the country—the seven sisters—we take into account their sentiments, their culture and their religion. Our country is a vast country. We have different languages and different religions. But we have to live toghether. Therefore, the Constitution must be flexible. Article 370 reflects the flexibility of the Constitution and the Indian nationalism. You can occupy the land, but not its people. But the question here is that the people of the land should be able to live together.

The question here before us today is whether you want the people together. Yes, we want the people also with us. Madam, what is the history? Of course, I do not want to go into the past. Many things can be said about autonomy. I don't want to discuss about autonomy. Autonomy is a very beautiful word. But many people do not understand the full meaning of autonomy. The map of India was redrawn by this Parliament. It was Travancore-Cochin. Now we call the State 'Kerala'. So is the case with Hyderabad. The whole thing was redrawn by the Parliament. It is not that the State of Kerala or West Bengal or Andhra Pradesh together that made Parliamnent. No.

Kanyakumari was a part of our State. But it was taken away. Okay, let them take it...*(Interruptions)*

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): You are still fighting for it.

SHRI VAYALAR RAVI: I don't want it. Likewise, Karnataka has taken away some of our portion of Kasargod. The point that I am making is that it is not the States which made the Union, but it is the Union which made the States. We must understand this basic difference. That is why we, in the Congress (I), believe in nationalism. The strength of India is nationalism. That nationalism was created by the freedom movement and that freedom movement created this country.

Speaking about Kashmir, Sheikh Abdullah was one of the greatest men of this country. He led the movement. He was a part and parcel of the national freedom movement. Of course, unfortunate things have happened in between. I would want to give credit to our former Prime Minister, Smt. Indira Gandhi. She found a political solution. That political solution was to enter into an agreement with Mr. Baig. With the success of that agreement, Sheikh Abdullah became Chief Minister with the support of the Congress (I). He continued as one Chief Minister till his death. That was a political solution. About what happened at the later stages, I don't want to get into any controversy. Today, the question before us is whether we want a political solution or a solution with a democratic approach to provoking the people of Kashmir. Unfortunately, the BJP has taken a decesion to provoke them not because of the love for the people of Kashmir. They are not speaking about the people of Kashmir. They are speaking for the people of the rest of India. You are speaking about the rest of India and not about the people of Kashmir because you think that by attacking the people of Kashmir and by

attacking the provisions of the Constitution of Kashmir and the situation in Kashmir, you can get an electoral mileage...*(Interruptions)*

SHRI SATISH AGARWAL: It is not correct.

SHRI VAYALAR RAVI: You cannot disagree with me. I appeal to you to look at the Kashmir issue with a broader perspective, with a national perspective. Unfortunately, Pakistan is obsessed with Kashmir. At every international forum, everywhere, they have raised this issue. I don't want to discuss about it nor is it fair on my part to name or anybody who is bent upon creating tension in the sub-continent. It will not make a gain for anybody. It will not make a gain for Pakistan or Bangladesh or India. We want peace in the sub-continent. This sub-continent must be a land of peace. Unfortunately, Pakistan is trying to create all kinds of problems, using every international forum to flare up anger, to flare up passion and to create more tension and terrorism in this area. So, Madam, gun aloneis not the solution. A democratic Government, of course, is the solution. And that solution is there at our doorstep. When that solution is there at our doorstep, it is the duty of every Indian to see to it that Kashmir remains a part and parcel of this nation undoubtedly. We should not forget the history. We should not forget the historical facts of the incorporation of Article 370. We should not forget what happened in the past. It is for us to think of the future. That future is the making of a peaceful Kashmir, a beautiful Kashmir and bringing the people of Kashmir into the mainstream of the Indian nation. So, let us create such atmosphere by this election rather than provoking that section of the people. With these words, I support this Resolution.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Thank you, Mr. Ravi, for being brief.

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR (NOMINATED): Madam, I stand up to support the Resolution. At the same time, I would like to caution the Government also and the caution is on the point that we have recently held the Lok Sabha elections in Jammu and Kashmir. Every one of us was surprised at the percentage of polling that took place there. But I think we have to realise that there is a conflict going on in Jammu and Kashmir—a conflict of hatred. When the terrorist movement was started demanding more autonomy for Kashmir...*(interruption)*...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Silence please Mr. Ravi, please be silent.

SHRI VAYALAR RAVI: I am sorry, Madam.

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR: Madam, when the terrorist movement was started demanding more autonomy for Kashmir, there was an all-round sympathy for those who started the movement. Later on, as events took place, an unconfirmed report indicated that the terrorists who committed the atrocities in the area did not belong to that area. It was said that nearly two lakh women were raped by the so-called terrorists. All these things were not reported. You would not be able to find them out unless you go to the grass-root level, meet people to find out why they turned against violence. If we could do this, we will find out he cause. That is what I am trying to place before this house. Thus, the level of hatred towards terrorists has increased today. It has increased to such an extent that today they want to come back. It is not that they are coming back on their own. It is some compulsion which is bringing them back. In this changing situation, what are we going to offer, an offer in the sense of its potentiality? On the one hand, the people of Jammu and Kashmir are being terrorised by the militants and on the other hand the

710Lsc. 9-A

people of Jammu and Kashmir were not happy with either the present Government or the previous Government. This is the situation in which we find ourselves today. In this situation, what have we to do? Should we make an attempt to change the hearts of the people? Should we attempt to change the attitude of the people? These things had already taken place. The question now is a security question. It is the security interest which has changed them. When the situation has changed thus, our first duty would be, our first priority would be, to demonstrate that we are able to protect them. That is the basic issue. My appeal to the Government would, therefore, be that this change which came out of compulsion—today it is this compulsion—should be transformed into a change of attitude, a change of heart.

Whenever there is a discussion on Kashmir, whenever there is a mention about Kashmir that we are doing something for Kashmir, what I hear from the common man of Jammu and Kashmir is that we have been singled out. He asks: Are we separate from this country? Why we are being treated separately? Why cannot we be treated in the same way as the rest of the people? Why should we be singled out? Why should we be paid special attention? This they feel is the discriminatory attitude of the Government which has been going on for long. Yesterday the hon. Prime Minister made a statement on the question of autonomy for Kashmir. He said: Let the representatives of the people decide on the autonomy issue.

4.00 P.M.

I think, Sir, this is a very dangerous proposition that is coming up, dangeropus in the sense that I consider Jammu and Kashmir a part of India and if any issue of autonomy is to be discussed, it is the Parliament which has to discuss it. It should not be left to the sweet will of every State Assembly to discuss the issue of autonomy. It is not only Jammu and Kashmir which is asking for autonomy, there are other States also which are clamouring for autonomy, and if in respect of other States also the question of autonomy is to be decided and if there are different dimensions of the question of autonomy, then we will be faced with the question as to how and in which way we should solve it. The demands will be of different nature. This Parliament will not have any chance the either to deliberate upon it or to think of any solution. Therefore, it will be my request to the hon. Prime Minister that autonomy is needed in some aspects, I do agree with it...

SHRI SOM PAL (Uttar Pradesh) Madam, to put the record strainght I will speak just one or two sentences, with your kind permission.

The statement which Mr. Ambedkar is referring to—I have understood it properly—purported to say that the issue of autonomy will be discussed after the Assembly elections. It has never said that it will be decided by the elected Assembly. It will be discussed after the elections so that it is amply clear to everybody concerned that autonomy is not pre-condition for the elections. Thank you.

Yesterday what was said was, let the Assembly be formed and let the Assembly discuss the issue of autonomy. It is the Assembly which is going to discuss it; is what I have an objection to.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Is it clear now, Mr. Som pal?

SHRI SOM PAL: No, Madam. I again repeat the argument. You see, the Assembly also can discuss the autonomy, but it has to be discussed with the Assembly when it is elected and naturally by the Central Government and, so, it has got to come before the Parliament. It cannot be done in spite of the Parliament. It has never been said.

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR: My learned friend, I won't refer to Article 370. But Article 370 gives a special reference and special preference to Jammu and Kashmir. If that Assembly passes any Resolution or comes forward with a proposal, I don't think that this Parliament will have, at least, to differ with it. And, if this Parliament differs with that Resolution or whatever form in which they are doing it, I don't know what situation we are going to face. Think over it. Deliberate over it. That is what my suggestion is.

Therefore, Madam, it is very good, and I appreciate the Government stand, that the Assembly elections will be held. But at the same time...

SHRI V. NARAYANASAMY: But you are not appreciating the previous Government's stand.

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR: I have said so earlier. I have appreciated it earlier. At the same time, Madam, I would like to draw your attention to another aspect also on Jammu and Kashmir. That is regarding its economy.

Many people had fears that during the 7-8 years of turmoil in Jammu and Kashmir, the economy would be hampered. But on the other hand, what do we see? The tourism has been affected but the common life has not been affected. The common man economy is going on as it is. One of the reasons for the economy to be in a better position, I find, is that the people of Jammu and Kashmir have moved on to other States. They have moved on to other parts of India. They have established their own contacts. They have opened their new shops. And, in this way, they have developed the economy. Once the Assembly comes into existence, I would like the Central Government to take upon itself the duty to see that those middlemen who were looting the people of Kashmir, are not allowed tomorrow to enter into Kashmir whereby we again have a situation where development of Kashmir does not take place and the whole blame comes on the Centre. Madam, even after seven years of termoil in Jammu and Kashmir, we did not find the common man complaining. Everybody had said that if tourism is affected, the economy of Jammu and Kashmir will collapse, but on the other hand, the economy of Jammu and Kashmir has prospered. Therefore, my humble request to the Government is that it is necessary to change the attitude of the people of Jammu and Kashmir. We should be able to change the attitude of the people of Jammu and Kashmir. Today they are far away from the terrorists—as I said, neither with us also. We have to join them and if we have to join them, then let us treat them as Indians and not as separate Jammu and Kashmir, as we are treating. With these words, I conclude.

श्री मूल चन्द मीणा (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदया, प्रधान मंत्री श्री देवैगोड़ा साहब ने जम्मू-काश्मीर में राष्ट्रपति शासन की अवधि छह महीने बढ़ाने का जो संकल्प पेश किया है, सारा हाउस इसका समर्थन कर रहा है और उसके साथ में भी समर्थन करता हूं। राष्ट्रपति शासन लागू करने की आवश्यकता ही क्यों पड़ती है? ऐसी स्थिति क्यों पैदा हुई? मैडम, मैं यह बताना चाहता हूं कि देश की आजादी के साथ ही देश के संविधान को और देश की आजादी को नुकसान करने की कुछ शक्तियां देश के अन्दर थीं और कुछ बाहरी शक्तियां थीं जो हमारी आजादी का और हमारे देश का स्वरूप था उसको बदलना चाहती थीं। इस देश के अन्दर जम्मू-काश्मीर भी एक राज्य है। लेकिन इस देश के अन्दर कई ऐसी साम्प्रदायिक शक्तियां और कई आतंककारी ग्रुप रहे हैं जो किसी न किसी राज्य में हमेशा यह अपना काम करती रही हैं जिससे कि यह देश टूटे तथा देश से राज्य अलग हो जायें। कुछ दिन पहले इस देश के अन्दर साम्प्रदायिक शक्तियों ने देश के माहौल को झकझोर दिया। चाहे वह अयोध्या की बात हो, चाहे हिन्दू-मुसलमान की बात करके इस देश को तोड़ने की बात हो। कुछ शक्तियों ने ऐसे काम किये थे जिससे दंगों के अन्दर दो-तीन हजार आदमियों को अपनी जान से जाना पड़ा, जिनका इससे कुछ लेना-देना नहीं था। गरीब और निर्दोष लोगों को अपनी जान से हाथ धोना

पड़ा और इस देश के अन्दर एक ऐसा वातावरण पैदा किया कि हिन्दुस्तान के अन्दर विभिन्न प्रकार के सम्प्रदाय के लोगों में देश बंट जाये, देश के टुकड़े हो जायें, इस प्रकार की बातें चल रही हैं देश में। देश में मण्डल की बात चला कर देश के अन्दर नौजवान छात्रों को जलने के लिए, आन्दोलन करने के लिए प्रोत्साहित किया। कुछ शक्तियां बाहरी शक्तियां हैं जो इस देश के अन्दर आतंकवाद फैलाकर, प्रशिक्षण दे कर के भाड़े के आतंकवादियों को देश के अन्दर भेजकर देश के टुकड़े कराना चाहती हैं। पंजाब के अन्दर पाकिस्तान के द्वारा कुछ सिख भाइयों को बहकाया गया कि आपके लिए अलग स्वतंत्र सिख राज्य हो। इस प्रकार की भावना पैदा कर के 10 साल तक पंजाब को जलाए रखा, पंजाब के आर्थिक विकास को रोका गया, सामाजिक जो सिस्टम था पंजाब का उसको खराब किया गया। लेकिन इस देश में शासन करने वाली सरकार ने पंजाब के आतंकवाद को समाप्त करके....। फिर राष्ट्र की धारा के अन्दर पंजाब को जोड़ा उसी प्रकार से हमारे पड़ोसी देशों में हम पाकिस्तान का नाम लें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पाकिस्तान जैसे देश ने हमारे देश के अन्दर शांति को अशांति में बदलने के लिए कोई कसर नहीं-छोड़ी है। चाहे पंजाब की बात लें, चाहे जम्मू-कश्मीर की बात लें। आज जम्मू कश्मीर के अन्दर जम्मू कश्मीर के आदमी को 90 से अपनी आजादी को छोड़कर अपनी सुरक्षा की स्थिति ऐसी पैदा कर दी है कि वहां हर आदमी सुरक्षित नहीं है। लोगों की भावना हिन्दुस्तान के साथ रहने की है जम्मू कश्मीर के लोगों की। लेकिन कुछ भाड़े के आतंकवादी इस प्रकार का वातावरण पैदा कर रहे हैं कि शांतिप्रिय लोगों को आतंकवाद के नाम पर ऐसा माहौल पैदा करके निर्दोष लोगों की हत्यायें करके एक ऐसा महौल पैदा करना चाहते हैं और यह बताना चाहते हैं दुनिया के देशों को कि जम्मू-कश्मीर हिन्दुस्तान का अंग नहीं रहना चाहता है। हिन्दुस्तान के साथ नहीं रहना चाहते हैं जम्मू कश्मीर के लोग। इस प्रकार की बात करते हैं। पाकिस्तान में कई बार जम्मू कश्मीर का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाया गया, लेकिन उसको मुंह की खानी पड़ी। हमारे देश की इस सरकार ने जो जम्मू कश्मीर की भावना को बार-बार दुनिया के देशों को बताया। अभी हुए हाल के लोक सभा चुनावों ने साबित कर दिया उस सरकार की बात को कि जितनी परसेन्टेज से वहां चुनाव हुए, शांतिप्रिय वातावरण में चुनाव हुए। इससे ज्यादा हिंसा तो बिहार में चुनावों में हो जाती है। जम्मू कश्मीर में बड़े शांतिप्रिय तरीके से चुनाव हुए। वहां के लोग चाहते हैं कि लोकतंत्र में, इस प्रकार का कुठाराघात, आतंकवादियों के कारण हुआ। वहां लोकतंत्र पुनः बहाल हो और प्रधान मंत्री जी सितम्बर के अन्दर विधान सभा के चुनाव कराने की बात कहते हैं, अच्छी बात है। पंजाब के अन्दर भी चुनाव कराये गये परन्तु कई ऐसी शक्तियों ने चुनाव में भाग नहीं लिया जो आतंकवाद को बढ़ाना चाहती हैं, लेकिन प्रजातंत्र, लोकतंत्र लागू हुआ, विधान सभा बनी, उसके बाद पंजाब में जो आतंकवाद का महौल था वह ठंडा हुआ, वह समाप्त हुआ। आज वहां कोई अशांति नहीं। केवल लोग आजादी चाहते हैं इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि 6 महीने की अवधि इसलिए बढ़ाई जा रही है कि सितम्बर का महीना चुनाव का है। अवधि समाप्त हो रही है तो इस अवधि को बढ़ाये जाने में सदस्य विरोध नहीं करते हैं। जो काम सरकार करने जा रही है कि वहां विधान सभा चुनाव करायेगी और जम्मू कश्मीर के अन्दर 90 के पहले जो स्थिति थी, जो भाईचारा था, किसी प्रकार का भेदभाव लोगों में नहीं था, वही वतावरण वहां पैदा हो और देश की आजादी के साथ किसी प्रकार का खिलवाड़ आतंकवादियों द्वारा नहीं किया जायेगा। देश की प्रमुख धारा के साथ जम्मू कश्मीर जुड़ा रहेगा, यही बात में कहना चाहूंगा।

श्री भूपेन्द्र सिंह मान (नाम निर्देशित): मैडम पिछले 6 सालों से जब की यह मसला सामने आया है जम्मू कश्मीर में राष्ट्रपति राज को बढ़ाना है, मैं इसका विरोध करता रहा हूं। मुझे लगता था कि 6 महीने में राष्ट्रपति-राज की मियाद समाप्त होने वाली है इसलिए विरोध करता था। मन में लगता था कि यह मियाद समाप्त नहीं होगी, लेकिन आज इसलिए समर्थन कर रहा हूं कि मुझे लगता है कि 6 महीने से पहले वहां चुनाव हो जायेंगे और वहां लोगों को, लोकतंत्र पर विश्वास हो जायेगा इसलिए इसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं यह देखते हुए कि आज राष्ट्रपति राज की मियाद बढ़ाना एक मजबूरी है, एक जरूरत है ताकि वहां चुनाव कराये जा सकें। इसके साथ-साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि जो यहां अभी एक मुद्दा सामने आया कि लोहे को काटने के लिए लोहे की जरूरत पड़ती है और उसके साथ यह भी विचार आता है कि मंत्री जी वहां गये और कहा कि वहां एजेंसीज काम कर रही हैं। तो इसमें खासतौर पर इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि हम एक विधान के नीचे काम कर रहे हैं। एक मंत्री ने शपथ खाई है विधान के ऊपर चलने की ना कि शपथ खाई है विधान के विरुद्ध जो काम हो रहा है उसको गुप्त रखने की। इस दिशा में अगर हम देखें तो अगर टेरोरिस्ट्स टैरोरिज्म कर रहे हैं, लोहा जल रहा है तो उस लोहे को

काटने के लिए उससे भी सख्त लोहा गैर वैधानिक नहीं होना चाहिए और नहीं हो सकता। यह विधान के अनुकूल नहीं है। टैरोरिज्म को इस तरह से कंट्रोल नहीं किया जा सकता क्योंकि स्टेट ने सौगंध खाई है और यहां पर हम सभी ने पार्लियामेंट में सौगंध खाई है कि हम विधान का सम्मान करेंगे, हम विधान के ऊपर चलेंगे। तो ह्यूमन राइट्स को बचाने के लिए यह हमारी जम्मेदारी है, हमारा दायित्व है कि हम देखें कि कहीं ह्यूमन राइट्स का वाइलेशन न हो। कोई ऐसा न करे और ना ही हम करें। अगर सरकार की कोई एजेंसी पहले से ऐसा करती रही है, इस विचारधारा के तहत कि लोहे को काटने के लिए अगर कच्चा लोहा है तो उसको काटने के लिए सख्त लोहा चाहिए। रेप होते रहे, हत्यायें होती रहीं, मर्डर होते रहे, क्या बात नहीं होती रही, यह निन्दनीय है, यह गैर वैधानिक है और इसके ऊपर कार्यवाही होनी चाहिए। अगर पंजाब में ऐसा होता रहा है और उसके कारण उस वक्त कई लोग जो बड़े बड़े ओहदों पर थे, उनके ऊपर कचहरियों में, कोर्ट में मुकदमें दर्ज करवाए, इस तरह जो वहां होता रहा है इसकी इन्कवायरी कराई जाए और अगर वहां ऐसा होता रहा है तो उन पर कार्यवाही की जाए। वहां के लोगों को लगता है, उनके मन में यह है कि वहां ऐसा हुआ है और टैरोरिज्म के कारण, टैरोरिज्म को काटने के लिए ऐसा किया गया जो कि निन्दनीय है और दुर्भाग्यपूर्ण है। आगे से ऐसा नहीं होना चाहिए। लोगों के मन में यह विश्वास होना चाहिए, सिर्फ जम्मू-कश्मीर के ही नहीं बल्कि सारे भारत के लोगों के मन में यह विश्वास होना चाहिए उनकी सरकार, जिसने विधान की शपथ खाई है, वह विधान के मुताबिक काम करेगी। उनको लगे कि सरकार वाकई मन से, दिल से इन रियल सेंस विधान को लागू कर रही है और विधान के ऊपर चल रही है।

मैडम, वहां हालत यह है कि मैं यहां दिल्ली मंडी के फ्रूट मार्केट में कभी अपने फ्रूट लेकर आता हूं और जम्मू-कश्मीर के लोग भी वहां लेकर आते हैं। हमारा डिस्ट्रिक्ट गुरूदासपुर बिल्कुल वहां से पास है। इसलिए जम्मू और कश्मीर के बहुत से लोगों से मिलने का मौका मुझे मिलता है। उनके मन में जो पीड़ा है, जो वेदना है वह मैं आपको बताना चाहता हूं। मैडम, सेब के ट्रक जब वहां से आते हैं तो रास्ते में उनको कई बार चेक किया जाता है। उन्हीं के शब्दों में कि शायद किसी और देश में जाने से पहले भी इतनी चैकिंग नहीं होती जितनी चैकिंग जम्मू-कश्मीर से दिल्ली आने वाले ट्रकों की होती है। पाकिस्तान जाने के लिए शायद इतनी चैकिंग न होती हो जितनी दिल्ली आने के लिए होती है और बहुत सारी रिश्वत ली जाती है। तो इस तरह से जो एलीवियेशन की भावना उनमें खड़ी हुई है इसको खड़ी करने का रोल किसका है, इसका सेल्फ एनालिसेसे करना बहुत जरूरी है। अगर आप कहते हैं कि हम बड़ी ताकत हैं, सरकार में ताकत है, हमारे पास इतनी बड़ी शक्ति है लेकिन इसके साथ साथ क्या आप अपनी कमजोरियों का भी सेल्फ-एनालिसेस करेंगे? किसी भी ताकत को अपना सेल्फ-एनालिसेस करके जो उसकी कमजोरी है उसको दूर करना चाहिए। पंजाब में, मिसाल के तौर पर, जो ह्यूमन राइट्स वाइलेट होते रहे, जो तमाम निन्दनीय कारनामें होते रहे, आज भी बहुत लोग इस बहकावे में आकर कि सरकार उनके ऊपर तसद्दत कर रही है तो उन्होंने सरकार का विरोध किया है।

इसी तरह से अगर हम यह कहें कि इस मुद्दे को राजनीतिक मुद्दा न बनाया जाए और इसको राजनीति से परे रख कर देखा जाए तो मैं समझता हूं यह भी एक भुलावे की बात होगी क्योंकि वास्तव में यह तो मुद्दा ही राजनीतिक है। इस मुद्दे में अन्दर की राजनीति तो बहुत छोटी है, बाहर की राजनीति बहुत बड़ी है। आज तक पाकिस्तान का हर बार नाम लिया जाता रहा है। जब-जब कश्मीर का मुद्दा आया पाकिस्तान का नाम इसमें जुड़ता ही है। पाकिस्तान के अपने अंदरूनी हालात जब खराब होते हैं तो उनको ठीक करने के लिए अपनी ताकत को बरकरार रखने के लिए कश्मीर का हौवा अपने लोगों को दिखा कर उनको चुप कर के बैठा देता है कि देखो भाई कश्मीर भेड़िया बनने वाला है। ऐसे ही जब कभी यहां भी जरूरत होती है तो कभी पंजाब को भेड़िये की शक्ल दी जाती है तो कभी कश्मीर को भेड़िये की शक्ल दी जाती है। कोई ऐसा प्रान्त नहीं है जिसके लोगों के मन में ऐसी कोई भावना हो वास्तव में हमारे मन में जो ताकत रखने वाले लोग हैं उनके सियासी मुद्दों में इतनी कमज़ोरी नहीं आनी चाहिये कि लोगों के कत्लोग़ारद, लोगों का खून खराबा कर के अपनी सियासत की ताकत को बनाए रखने के लिए उनमें जब खुदगर्ज़ी आती है तो ऐसा नहीं होना चाहिये। आप इस बात को सामने रखते हुए चुनाव करवाएं ताकि वहां के लोगों की ताकत लोगों के हाथ में जानी चाहिये, लोगों को ही गवर्न करने का अधिकार मिलना चाहिये और मुझे विश्वास है कि यह अधिकार उनको मिलेगा। इसी विश्वास के साथ मैं समर्थन कर रहा हूं। इन शब्दों के साथ मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): बहुत-बहुत धन्यवाद मान साहब। मेरे सामने दो रिक्वेस्ट

रखी हुई है। बी०जे०पी० ने भी अपना कुछ टाइम एक्सीड किया है और दूसरा समदानी जी शायद चले गये हैं, नहीं बोलना चाहेंगे, रिक्वेस्ट तो भेजी है। टाइम एक्सीड किया है इसके बावजूद आपने कहा है कि दो तीन मिनट का समय दिया जाए। मैं कोहली साहब से बोलने के लिए रिक्वेस्ट करती हूं।

श्री ओ० पी० कोहली (दिल्ली): धन्यवाद, आदरणीया उपसभाध्यक्ष महोदया, आपने मुझे बोलने का समय दिया। 18 जुलाई, 1990 को राष्ट्रपति ने जो उद्घोषणा जारी की थी उसके हिसाब से 6 महीने के लिए जम्मू और काश्मीर में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया था लेकिन छः महीने की अवधि लगातार बढ़ाई जाती रही। एक बार आज फिर से बढ़ाई जा रही है। ऐसा इसलिए हुआ कि जम्मू और काश्मीर में असामान्य परिस्थितियां बनी रहीं। चुनाव वहां नहीं हो सकते थे। आज यह दावा किया जा रहा है कि वहां पर परिस्थितियां सामान्य हो गई हैं और चुनाव के लिए अनुकूल वातावरण बना है। हो सकता है ऊपर से जम्मू और काश्मीर में परिस्थितियां कुछ सामान्य सी लगें किन्तु उसकी तह में अभी भी असामान्य परिस्थितियां और असामान्य वातावरण बना हुआ है। आतंकवादी गतिविधियां अभी भी वहां जारी हैं। निरीह और बेकसूर लोगों की हत्याएं अभी भी की जा रही हैं। आतंकवादी गतिविधियां घाटी से बाहर निकल कर डोडा और जम्मू तक विस्तारित हो गई हैं, फैल गई हैं। अभी भी वहां पर भारत विरोधी प्रदर्शन होते हैं। अभी भी जम्मू और कश्मीर से बहुत बड़ी संख्या में वहां के रहने वाले बाहर विस्थापितों के रूप में पड़े हैं। अभी भी वहां पर बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो भारत विरोधी नारे लगाते हैं, भारत विरोधी प्रदर्शन करते हैं जिनकी मानसिकता अभी भी मुख्य धारा से अलग-थलग पड़े रहने की बनी हुई है।

यह जो एलीनिएशन कहा जाता है, मुख्यधारा से अलग-थलग पड़े रहना कहा जाता है यह जो असामान्य स्थिति वहां अब भी मौजूद है, आखिर इसकी जिम्मेदारी किस पर है? इसकी जिम्मेदारी उस सरकार पर है जिसने काश्मीर के पूरे सवाल को मिसहैंडल किया, जिसने काश्मीर के पूरे सवाल पर कोई यथार्थवादी नज़रिया ही नहीं अपनाया, जिसने काश्मीर के सवाल को लगातार उलझाया । कांग्रेस की गलत नीतियों के कारण या काश्मीर के संबंध में कोई नीति ही नहीं होने के कारण काश्मीर की स्थिति जटिल हुई और वह असामान्य परिस्थिति पैदा हुई जिसकी वजह से बार-बार वहां पर राष्ट्रपति शासन की अवधि को बढ़ाना पड़ा। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव ने तो काश्मीर के सवाल को कभी गंभीरता से लिया नहीं। काश्मीर जाने की उनकी मानसिक इच्छा ही नहीं रही। अपने मंत्रियों को काश्मीर भेज दिया करते थे। कभी राजेश पायलट साहब चले जाते थे, कभी सिब्ते रजी सहाब चले जाते थे, कभी आजाद साहब को भेज दिया जाता था। कुछ लोग तो जम्मू से ही वापस हो आते थे। प्रधानमंत्री को स्वयं वहां जाकर परिस्थिति का आंकलन करने की जो जिम्मेदारी बनती थी उसको भी उन्होंने नहीं निभाया। न सिर्फ इतना ही बल्कि मंत्रियों के परस्पर विरोधी वक्तव्य परिस्थिति को उलझाते रहे। कभी चव्हाण साहब का एक वक्तव्य आता था तो कभी पायलट साहब का दूसरे दिन दूसरा वक्तव्य आ जाता था और ये विरोधी वक्तव्य एक कन्फ्यूज़न की परिस्थिति पैदा करते थे। धारा 370 के अंतर्गत बड़े पैमाने पर काश्मीर को जो आर्थिक सहायता दी जाती रही वह आर्थिक सहायता काश्मीर के विकास के काम में नहीं लगी, वह वहां के भ्रष्ट शासकों और प्रशासकों के द्वारा हज़म कर ली गई। चुनाव का वहां पर रिगिंग हुआ। घुटना टेक राजनीति को केन्द्रीय सरकार अपनाती रही। हमेशा जब भी आतंकवादी तत्वों का दबदबा बढ़ा तो सरकार की ओर से वहां राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने, उनसे बात-चीत करने, उन्हें बुलावा देने, उन्हें आमंत्रित करने की जो कमजोर नीति है अपनायी जाती रही है। इस सब का नतीजा यह हुआ कि काश्मीर में लंबे समय तक एक असामान्य स्थिति जारी रही और आज भी असामान्य स्थिति कायम है। ऊपर-ऊपर से चाहे सामान्य स्थिति होने का दावा किया जाता रहे, इतना ही नहीं, घाटी का तुष्टिकरण करने की नीति और जम्मू-काश्मीर और लद्दाख के लोगों के हितों और आकांक्षाओं की अनदेखी करने की भेदभावपूर्ण नीति को भी वहां बरता गया। उपसभाध्यक्ष महोदया, ऊपर-ऊपर से यह कहा जाता रहा कि काश्मीर भारत का अखंड और अभिन्न अंग है, लेकिन काश्मीर के बारे में केन्द्रीय सरकार जो नीतियां अपनाती रही, जो आचरण करती रही वह काश्मीर को भारत का अखंड और अभिन्न अंग इस रूप में मजबूत करने की बजाय काश्मीर को भारत से दूर करने का आचरण रहा है। धारा 370 के सवाल पर हमारे मित्र राजनीतिक नज़रिए से हमारी आलोचना करते हैं, लेकिन धारा 370 संविधान का स्थायी प्रावधान नहीं था और संविधान निर्माताओं की नज़र में भी उस समय की परिस्थितियों में उन्होंने चाहे उसकी आवश्यकता अनुभव की हो लेकिन उसके साथ ही उन्होंने यह भी अनुभव किया था कि यह अस्थायी प्रावधान है और यह धीरे-धीरे घिस जाएगा। संविधान के निर्माताओं की इस चाहत को पूरा किया जाना चाहिए।

धारा 370 समाप्त होनी चाहिए और जो धारा 370 को अनन्तकाल के लिए काश्मीर में जारी रखना चाहते है वे पोलिटीकल माइलेज़ लेना चाहते हैं। आरोप हम पर लगाया जाता है कि हम इस धारा 370 को समाप्त करने की बात को कह कर पोलिटीकल माइलेज़ लेना चाहते हैं। इतना ही नहीं है....(**व्यवधान**) कभी काश्मीर के सवाल पर काश्मीर को भारत से अलग करने, दूर रखने और उसको भारत का अखंड और अभिन्न अंग रखने की परिस्थिति को कमजोर करने के लिए समय-समय पर नई-नई बातें उछाली जाती रहीं। कभी कह दिया गया कि काश्मीर के लिए इकोनोमिक-पोलिटीकल पैकेज लाया जा रहा है।

देश की जनता को कभी नहीं बताया गया कि यह "इकॉनोमिक पॉलिटिकल पैकेज" क्या होगा? काश्मीर को क्या दिया जा रहा है? इकानोमिक पॉलिटिकल पैकेज से क्या इरादा है? इस प्रकार कानफ्यूजन और भ्रांतियां फैलाने वाले वक्तव्य समय-समय पर दिए जाते रहे हैं। कभी यह कहना किसी की ओर से कि काश्मीर में 1952 से पूर्व की स्थिति ला दी जाए। लेकिन सरकार ने इस पर अपना रवैया स्पष्ट नहीं किया कि 1952 से पूर्व की स्थिति से अर्थ क्या है? महोदया, सन् 1952 से पूर्व की स्थिति से अर्थ है कि काश्मीर का भारत से जो थोड़ा-बहुत जुड़ाव पिछले अनेक वर्षों में बना हुआ है, वह फिर कमजोर पड़ जाय और काश्मीर भारत से एक कच्चे धागे के रूप में मात्र जुड़ा रह जाय।

उपसभाध्यक्ष महोदया, इन दिनों काश्मीर के सवाल पर स्वायत्तता की बात की जा रही है, लेकिन पारिभाषित नहीं किया जा रहा है कि यह स्वायत्तता क्या होगा? इस स्वायत्तता का दायरा कितना बड़ा होगा? यह स्वायत्तता क्यों दी जाएगी? इस स्वायत्ता का उद्देश्य क्या है और इस स्वायत्तता का निर्णय कौन करेगा? क्या जम्मू-काश्मीर की विधान सभा करेगी या हमारी संसद करेगी। अभी माननीय सदस्य श्री प्रकाश अंबेडकर बोल रहे थे। वह ठीक बात कर रहे थे कि अगर संसद की प्रभुसत्ता इस देश में है तो इस का निर्णय करने का अधिकार भारतीय संसद को है, काश्मीर की विधान सभा को नहीं है। लेकिन ऐसे वक्तव्य दिए जा रहे हैं, जिम्मेदार मंत्रियों की तरफ से दिए जा रहे हैं कि जम्मू-काश्मीर की विधान सभा स्वायत्तता का निर्णय करेगी, स्वायत्तता का क्या रूप होगा, इत्यादि-इत्यादि।

महोदया, भातीय जनता पार्टी राज्यों को और अधिक अधिकार देने के पक्ष में है, लेकिन केवल एक राज्य को विशेष अधिकार देने के भेदभाव भी नति के विरुद्ध है। भारतीय जनता पार्टी चाहती है कि राज्यों के जो न्यायोचित अधिकार हैं, वह उन को प्राप्त हों और केन्द्र का जो अत्यधिक केन्द्रीयकरण है उस को कुछ कमजोर किया जाय। काश्मीर में चुनाव की बात कही जाती है। हम भी चाहते हैं कि काश्मीर में जो ब्यूरोक्रेटिक मैनेजमेंट है, वह समाप्त हो। वहां एक डेमोक्रटिक तरीके से इलेक्टेड गवर्नमेंट आए, लेकिन इस के लिए वहां पर अनुकूल परिस्थितियां बनाए जाने की भी आवश्यकता है। आज काश्मीर के 3 लाख से भी अधिक पंडित विस्थापित होकर देश के अलग-अलग भागों में पड़े हुए हैं। वह दयनीय स्थिति में रह रहे हैं, अमानवीय स्थिति में रह रहे हैं, अत्यंत कष्टपूर्ण परिस्थितियों में रह रहे हैं और हमारी वर्तमान और इस से पहले की कांग्रेस सरकार दोनों के एजेंडा में काश्मीरी विस्थापितों के काश्मीर में वापिस लौटने का आयटम ही नहीं है। जब हम काश्मीर के चुनाव की बात करते हैं तो उस के साथ ही हम को काश्मीर के इन विस्थापितों को, काश्मीर के इन पंडितों को अपने घरों को सम्मानपूर्वक वापिसी भी सुनिश्चित करनी चाहिए। यह दायित्व और यह जिम्मेदारी भी सरकार को अपने ऊपर स्वीकार करनी चाहिए। साथ में चुनावों में इन काश्मीरी पंडितों की पूर्ण भागीदारी भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। अगर चुनावों में काश्मीरी पंडितों की, काश्मीरी विस्थापितों की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित नहीं की जाती है तो उन्हें पूर्ण चुनाव नहीं कहा जाएगा। इसी के साथ इस बात की भी आवश्यकता है कि आए दिन वहां हत्याओं का सिलसिला जो अभी भी जारी है, उस को रोका जाय और शांतिपूर्ण चुनाव की परिस्थितियां पैदा की जाएं। भारतीय जनता पार्टी भी किसी राज्य में अनंतकाल के लिए राष्ट्रपति शासन लगाए जाने के पक्ष में नहीं है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी चाहती है कि चुनाव के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण अवश्य हो और जम्मू-काश्मीर में जहां तक चुनाव का सवाल है, उस के लिए भारतीय जनता पार्टी यह आवश्यक समझती है कि इन चुनावों के साथ काश्मीरी विस्थापितों की वापिसी के सवाल को भी जोड़ा जाय और चुनाव में उनकी पूर्ण भागीदारी के सवाल को भी जोड़ा जाय। आतंकवादी गतिविधियों पर कड़ा नियंत्रण रखा जाय। वहां शांतिपूर्ण परिस्थितियों का निर्माण किया जाए।

उपसभाध्यक्ष महोदया, आप ने मुझे जम्मू-कश्मीर के सवाल पर बोलने का समय दिया, आप को बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Samadaniji, are you in a mood to speak?

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI (KERALA): Yes, Madam.

THE VICE-CHAIRMAN (Miss Saroj Khaparde): I will give you five minutes.

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: I will be taking only lesser time than five minutes. Thank you.

Madam Vice-Chairman, the Government decision to conduct elections in Jammu and Kashmir is, no doubt, going to put an end to one of the major confusions faced by the country. This decision has definitely strengthened the process of bringing peace in the Valley.

The good signals from Kashmir are actually welcomed by all. After a long period of nine years, we are all happy that the Prime Minister was able to visit the Valley. Some of the extremists have come to the path of arbitration. Another healthy development was the consensus reached by almost all the political parties in the country on conducting elections in Jammu and Kashmir. That also has come as a good news. The visit of the Prime Minister is actually a milestone in the history of Kashmir. It was in 1986 that a Prime Minister was able to visit Kashmir before this. The willingness of the hon. Prime Minister to hold discussions with

And there are some cases of alleged violations of human rights by the security forces also which have been inquired into, which are being inquired into. In many cases now action has also been taken against the persons who are found to be responsible. But the situation is one which cannot be allowed to continue like this. We are all interested that peace and normalcy should return to the Valley. We fully agree with those Members who have observed that now, for the first time, a change has come over the scene. That change is due to many factors. It is a change in the positive direction. The change, as somebody here has said, is not due to our initiative so much; and not due so much to anything that we have done; but to the fact that people, ultimately, after all, are getting fed up. So many years of killing, blood-letting, destruction, rapes, murders and dislocation of economic life! There is always a limit to these things and the tolerance of people. It happened in the Punjab also. Time comes when people cry out for peace, when they cannot any longer tolerate this kind of an abnormal situation which is going on. And when that time comes, then they also turn against the very thing, against the very forces which, in the beginning, they had supported, perhaps, or sympathised with because they had appeared in the guise of their liberators.

The same thing is happening in Kashmir now. There is wide-spread disillusionment now with Pakistan. I am speaking on the basis of our information, all the intelligence reports that we have got, which say that people have now realised that all the promises and hopes which were held out to them from across the border were false. Many of them felt that one day Pakistan would arrive on the scene and rescue them from somehow from the slavery of India. This whole idea has now collapsed because they have found that nothing of the kind is going to happen. That is one thing.

Secondly, from our side, we have been making repeated attempts to interact with the people in various ways. I cannot say that this process has been absolutely perfect or anything. It could have been much better in my opinion. But, anyway, we have tried to interact with the people. Somebody here referred to the meetings we have been having with the militant groups or former militant groups. I also met a big group of these young men, very young, belonging to different militant outfits. Some of them had been arrested, imprisoned, also earlier. Later, they were released. When they came out from the jail, they received tumultuous receptions

from the people. They were warmly welcome by people. They have now—as they assured us during their talks with us—definitely decided that no solution to the Kashmir issue can be reached by depending on the gun, depending on violence. They are in a mood now for a peaceful settlement which can only be done through negotiations, through elections and so on. And these young men, Madam, I found, were very, very eager that there should be more of a response from the side of the Government; that is to say, meeting them, talking to them and listening to them. It is very easy to talk to people; it is much difficult to listen to them. It is much easy to deliver big lectures and harangues to people, but it is very difficult to listen to them. And these boys felt, on our side, we had not had, perhaps, enough patience to listen to their troubles, listen to actually what they wanted. And they want to come closer. We are not dealing with some enemy country, Madam. This is the first thing I want to say when we talk about these people. We should not, in any way, behave or imply as though they are some who are foreign to us,...some kind of representatives of some foreign power or something like that. In this way we can never fill this breach. They are our own people. If you really believe that Kashmir is a part of India, then you must also accept kashmiris as your own brothers and sisters, as your own children. They are children of mother India and they have been estranged from us because of a whole lot of unfortunate developments which have taken place and which we now want to overcome and to see that these children of our motherland return to us. We must have a kind of proper attitude towards them. this attitude has not always been there.

Now, I do not want to go into the history of article 370 and all that. I do not agree at all; we do not agree; our Government does not agree that article 370 is something which should be abrogated because as some Members here have said earlier that it is something which has promoted the feelings or the sentiments of disintegration from the very beginning. We do not agree to this idea at all. We feel that article 370 has served as a bridge, as a bridge between the people of Kashmir and the people of India and without that bridge, there would have been much worse consequences much earlier on. Please remember that this was a Muslim majority—overwhelmingly Muslim majority—I am talking about the Valley as a part of our country at a time when independence came, when the country was partitioned, when the hindu maharaja of a Muslim majority State did not want to accede to India and when the people of Kashmir, led by Sheikh Abdullah, who was a part and parcel of our own liberation movement, carried out massive movement and mobilisation for accession to India and refusal to go with Pakistan and with them, later on resisted with their own blood and their lives the attack which was made on Kashmir by the invaders from Pakistan. This is not a similar situation to what has existed in so many other States and it was a very difficult situation in which we had to devise ways and means by which we would be able to win the confidence and trust of the people and keep them with India and I think a part of that process was this question of article 370. Subsequently, many other things, many wrong things, have been done also. Many blunders were committed also, which estranged these people more and more from us. Now, somebody here has warned us correctly that, now at least, we should not try to impose from Delhi some Chief Minister on them or some kind of a system on them because if we do that, we will only be further fanning the seeds of revolt. That was the idea at that time also, and therefore, now also I can assure the House that there will be no attempt to impose from Delhi anything on the people of Kashmir. There is no question about it and that is the reason why we are saying repeatedly,

though some Members do not agree with it, that the question of the quantum of autonomy which we are talking about—nobody has disagreed with the principle of autonomy—some Members have said that it should apply to other States also. We agree with that whole exercise of autonomy for the States in India which involves the devolution of powers from the Centre to the States, reorganization of the whole system so that the federal structure is strengthened. Well, we are committed to that and that is going to come. The house can rest assured that the Government will appear before the House in due course with its proposal as to how to further concretise and implement the salutary provisions or recommendations of the Sarkaria Commission, which deal with this very question.

It is being left lying there; nothing much has been done. To implement those provisions they need to be further detailed and concretised, but they all adopt the question of giving greater autonomy to the States. This is not a question only of Kashmir. But Kashmir has a special historical background and the fact that it is sandwiched between India and Pakistan is a major fact which influences the whole situation because Pakistan is trying all the time—we know what they are trying to do—and they have continued to claim till today that Kashmir does not belong to India, it is a disputed territory and if people there are allowed to hold a plebiscite, then they will vote to go to Pakistan. And we have how many wars? Three or four wars over this whole question. Without solving the issue, it can never be solved by wars between India and Pakistan. Therefore, the question of autonomy in its relation to Kashmir is very different from the kind of Constitutional moves which are going to be set afoot for conferring greater autonomy on all the States. It is not a question only of Kashmir, but the quantum of autonomy is, of course, a controversial issue; I agree. But then we do not feel that it would be correct for the Government of India to give an impression that it should first decide what should be the quantum of autonomy and then impose that on the people of Kashmir, pre-empt their sentiments and feelings. We do not think that it would be a correct move at all. The final decision will lie with the Parliament of India, let it be quite clear. it is wrong for Members to go on saying: why should the Kashmiris sitting in their State Assembly decide about autonomy? They are not going to decide. But we have said that first of all, this elected State Assembly which will take office and which will consist of the elected representatives of the Kashmiri people should be allowed, should be invited to hold a free and fair discussion on the whole subject of autonomy; let them come forward with their suggestions, their recommendations and all that; all those things will then be considered here by the Centre, by the Governnent of India and by this sovereign Parliament. And only the parliament can take the final decision as to the contours and shape of autonomy. So, there need not be any apprehensions that we are leaving this whole matter finally to be decided by the State Assembly of Kashmir. And who knows what they may do?—that is the fear which is being expressed here. There is no reason for this apprehension, we feel, because ultimately the decision will be taken here and not there. But should we not, first of all, at least have some consideration for their views, their sentiments, their suggestions, their recommendations before we take the final decision? That is all we have said. We are not going to short circuit the whole process. We want to give them a feeling of partnership in this whole process and, therefore, that is the way we will proceed about it.

Regarding the other one or two points which have been raised, Madam, I think, I need not go into all of them. Some question was raised about continuing acts of terrorism. Yes, it is a fact, terrorism has not been completely stopped or eradicated. I do not know whether it will be completely eradicated even after the

elections. Who can say? I cannot say. I cannot forecast that. There are groups of militants functioning all over the Valley and reinforced now by foreign mercenaries because as gradually the influence of Pakistan on the local youth is going down, they are getting disillusioned. That is the reason why they are trying to import more and more foreign mercenaries, Afgans and such people, into the Valley. So, we cannot guarantee that they will never provoke any violence anywhere in that place. They may do. Our security forces have to be alert about it, no doubt. In some display areas like Doda and some of the border areas and all that, there have very critical situations developed sometimes because of the activities of these terrorists, no doubt about it.

I may also say one thing. I hope that nobody will take exception. We are now concerned about seeing as far as possible that these elections which are going to be held will be free and fair, and I feel personally that apart from the Government of India, all the major political parties who are represented in our parliament should publicly declare that we take it upon ourselves also as our responsibility to see that these coming elections will be held freely and fairly.

5.00 P.M.

But anyway recently in the Lok Sabha elections, which were held in Kashmir, Madam, there are two constituencies situated on the border of Jammu. Perhaps they fall within the Doda region. They are on the border of Jammu. In those two constituencies it was found that there was no single Hindu voter. All the voters, hundred per cent, were Muslims. Yet when the ballot boxes were opened it was found that several thousands of votes had been cast for the BJP. How could it be? So, we have made some enquiry. To the best of our knowledge *

There could be no other explanation as to how in a hundred per cent Muslim area so many hundreds of votes could be cast for the BJP. Would you not agree?

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री विष्णुकान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): क्या आप इसको ऐक्सप्लेन कर सकते हैं? आप इसके ऊपर पूरा वक्तव्य दीजिए। मैं आपकी तरह तो नहीं जानता हूं लेकिन आपने बहुत आपत्तिजनक बात कही है। आपने अपने उन कार्यकर्ताओं की नीयत पर शक किया है जो अपनी जान की बाजी लगा कर जम्मू-काश्मीर में चुनाव करवाने गये थे। जब कश्मीर का कोई भी अधिकारी चुनाव का काम करने के लिए तैयार नहीं था, जब समस्त काशमीर अधिकारियों ने न कर दिया तो जो अधिकारी वहां गये, उनके बारे में ऐसा लांछन लगाते समय और वह भी राज्य सभा में, आपको कुछ विचार करना चाहिए था। आप इस पर व्हाइट पेपर प्रकाशित कर दीजिए।

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, let the hon. Members have patience to listen to the Minister.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: इस पर आप श्वेत पत्र प्रकाशित कीजिए। आप इस तरह का आरोप नहीं लगा सकते। ..**(व्यवधान)**..

SHRI SATISH AGARWAL: This is a very serious charge... Does he mean to suggest that the Muslims are the monopoly of the Communist Party of India or the Congress Party of India? (*Interruptions*)... Are they so communal in their approach that they would not vote for us? (*Interruptions*)...Mr. Indrajit Gupta, you should have been happy that the Muslims have voted for the BJP. (*Interruptions*)...

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता (मध्यप्रदेश): आप इस तरीके से आरोप नहीं लगा सकते। क्या मुसलमान बी० जे० पी० को वोट नहीं दे सकते? ..**(व्यवधान)**.. आप खुद अलगाववादी नीतियां अपना रहे हैं।

SHRI INDRAJIT GUPTA: If I may be allowed to say... (*Interruptions*)...

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मैं गृह मंत्री से जानना चाहता हूं कि क्या बी० जे० पी० को वोट देना गुनाह है? मुझे जवाब दीजिए। ..**(व्यवधान)**..

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: यह क्या बात हुई। यह तो गलत आरोप है। ..**(व्यवधान)**..

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): May I request the hon. Members to sit down? (*Interruptions*)... May I request the hon. Members to sit down? (*Interruptions*)...

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मैं कम्यूनिस्ट पार्टी को और गृह मंत्री को चेतावनी देना चाहता हूं। यह सरासर गलत आरोप है। ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मेरा निवेदन है आप सभी से, आप बैठे जाइए। Let me restore order in the House. (*Interruptions*)... Then you speak. (*Interruptions*)... Mr. Pradhan, please sit down. (*Interruptions*)... मिस्टर प्रधान, आप जरा बैठेंगे। शास्त्री जी, मेरा निवेदन है आप सभी से, आप प्लीज़ बैठेंगे।

SHRI SATISH AGARWAL: It is a very serious question. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Please sit down.

SHRI SATISH AGARWAL: It is not a question of Shiv Sena or BJP.

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: आपको बड़ा आश्चर्य हुआ कि बी० जे० पी० को वोट क्यों मिला? आप गृह मंत्री होकर ऐसी नीति अपना रहे हैं। यह देश हित में नहीं है। मुझे बताइए, बी० जे० पी० को वोट देकर क्या गुनाह किया? आप ऐसा कहकर हिन्दु-मुसलमानों में अलगाव पैदा कर रहे हैं। ..(**व्यवधान**)..

श्री ओ० पी० कोहली: मैडम, यह आरोप जो यह लगा रहे हैं। ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मि० कोहली, आप जरा बैठेंगे। Mr. Kohli, please listen to me. (*Interruptions*)... No, please listen to me. (*Interruptions*)... No, this is not fair. (*Interruptions*)... You should not disturb the Chair like this. Please sit down. (*Interruptions*)... Please sit down. (*Interruptions*)... No. Don't go on interrupting like this. I would not allow you. (*Interruptions*)... No more arguments with me. Mr. Minister. (*Interruptions*)... शास्त्री जी, मेरा कहना है कि मैंने आपकी इतनी बातें सुनी। देखिए, मंत्री जी अपना उत्तर दे रहे हैं, उनके उत्तर के बाद आप अगर कुछ पूछना चाहे तो पूछिएगा। ..(**व्यवधान**)..

SHRI S.S. AHLUWALIA: I want to seek a piece of information, Madam. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Ahluwalia.

श्री एस० एस० अहलुवालिया: मैडम, अभी .. .. ..(**व्यवधान**).. एक मिनट ..(**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Minister, will you please yield for a minute? please sit down.

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: महोदया, अपके माध्यम से हम कहना चाहते हैं कि गृह मंत्री जी का रवैया आपत्तिजनक है। यह देश के हित में नहीं है। आप कम से कम जवाब दीजिए कि क्या हमारे सरकारी कर्मचारी जो वहां मतदान कराने गये, वह गुनाह किया? ...(**व्यवधान**)... क्या बी० जे० पी० को अगर वहां के लोगों ने वोट दिया तो गुनाह किया? ..(**व्यवधान**)..

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: जवाब दीजिए कि क्या हमारे सरकारी कर्मचारियों ने मतदान कराया तो क्या बुरा किया? यदि किसी मुसलमान ने बीजेपी को वोट दिया, कम दिया या ज्यादा दिया तो क्या बुरा किया? ..(..**व्यवधान**)..

श्री इन्द्रजीत गुप्त: यह कहा मैंने ..(**व्यवधान**)..

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: आपने यह कहा.. ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): शास्त्री जी, जहां तक मैं समझ पाई हूं मंत्री जी ने अपने उत्तर में कभी भी किसी भी पार्टी पर आरोप नहीं लगाया. ..(**व्यवधान**).. आप ख्वामाखां बीच में बोलेंगे तो यह ठीक नहीं होगा। ..(**व्यवधान**)..

श्री एस० एस० अहलुवालिया: महोदया, गृह मंत्री जी ने ..((**व्यवधान**).. महोदया, गृह मंत्री जी ने अपने जवाब में जो कुछ कहा, पता नहीं कहां भावना में बह गये और उन्होंने जो बात कही, जहां तक मुझे मालूम है कि जम्मू-काश्मीर के चुनाव के पहले दिल्ली से और राज्यों से पोलिंग अफसर ड्रा किये गये थे और उसमें कोशिश की गई थी कि मुसलमानी इलाकों के लिए मुसलमानी अफसर भेजेंगे और उसमें भी दाढ़ी वाले मुसलमानों को। यह कोशिश की गई और उनको भेजा गया तथा उनको बुलेट प्रूफ जाकेट पहना कर भेजा गया और ऐसे हालातों में चुनाव को कराया गया। मंत्री

महोदय का यह कहना कि पूरा मुसलमानी इलाका है वहां पर कुछ बीजेपी के समर्थन में बैलेट पेपर डलवाये गये हैं, वहां पर जो बाहर से अधिकारी गये थे उन पर उन्होंने शंका जाहिर की तो यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात है। यह बात इनको वापस लेनी चाहिए। यह सवाल किस की निष्ठा पर है? जो आदमी आपका सरकारी कर्मचारी है और एक तरफ ऐके-47, ग्रिनेड चल रहे हैं और वह बुलेट प्रूफ पहन कर आपके पोलिंग आफिस में बैठकर गणतंत्र की रक्षा करें उसकी निष्ठा पर गृह मंत्री शंका पैदा करें, यह उसकी निष्ठा पर बहुत बड़ा कुठाराघात है। मैं उसका प्रतिवाद करता हूं और यह बात इनको वापस लेनी चाहिए।..(..**व्यवधान**..) और दूसरी बात.) ..**व्यवधान**..)

महोदया, हिन्दुस्तान का नागरिक चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो और ईसाई हो, हिन्दुस्तान का संविधान बनाने वालों ने उनको पूर्ण अधिकार दिया है कि वह किसी भी पार्टी को वोट दें। मैं सिख हूं और हर सिख अकाली नहीं है। मैं कांग्रेस का समर्थक हूं, पर हर मुसलमान कांग्रेसी नहीं हो सकता, कम्युनिस्ट नहीं हो सकता, जनता दल नहीं हो सकता, वह और भी किसी पार्टी को चुन सकता है हर क्रिश्चियन एक ही पार्टी को सपोर्ट नहीं करेगा। आप एक बड़े सुलझे हुए पार्लियामेंट्रियन रहे हैं, आपने सारी उम्र पार्लियामेंट में ही गुजारी है, पर आपने सरकारी कर्मचारियों की निष्ठा पर शंका की है, आप रिकार्ड मंगा लें, रिकार्ड में इन्होंने कहा है कि बीजेपी को समर्थन दिया है और *

हम सारी पार्टियों को बुलाकर के गड़बड़ी नहीं करेंगे, रिगिंग नहीं करेंगे? यह बात इन्होंने उठाई है। वहां के कर्मचारियों की निष्ठा पर जो शंका पैदा की गई है वह बर्दास्त के बाहर है। इन्हें अपने शब्द वापस लेने चाहिए। ..(**व्यवधान**)..

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: उन्होंने कहा है, ऐसा किया है ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): शास्त्री जी आप इतने उत्तेजित होकर मत बोलिएगा. ..(**व्यवधान**).. सुनिए मैंने अभी टेबिल आफिस से कहा है कि ..(**व्यवधान**)..

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: कृपया आप सावधानी से, शालीनता से..(**व्यवधान**).. यह देश को तोड़ने की बात है..(**व्यवधान**).. किसी मुसलमान ने बीजेपी को वोट दिया तो क्या गुनाह किया? ..(**व्यवधान**).. आप मुसलमानों के वोट के ठेकेदार हैं ..(**व्यवधान**).. मुसलमान हमें वोट दे रहे हैं ..(**व्यवधान**)..

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री ओ॰ पी॰ कोहली: गृह मंत्री जी का.. ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): कोहली साहब क्या आप मुझे बोलने देंगे?

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: क्या आप मुसलमानों के वोट ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): गुप्ता जी, क्या आप मुझे बोलने की अनुमति देंगे?.. ..(**व्यवधान**).. सुनिये, आप सब लोग बोलते जा रहे हैं, आप चेयर को कुछ सुन नहीं रहे हैं.. दिस इस नोट फेयर। मिस्टर रवि ..(**व्यवधान**).. अग्रवाल जी. ..(**व्यवधान**)..

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: मैडम, यह रिकार्ड से एक्सपंज करने की बात है ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मैं एक्सपंज करने की बात नहीं कर रही हूं। मिस्टर अहलुवालिया मैंने एक्सपंज की बात बिल्कुल नहीं की है। अगर मंत्री जी ने इन शब्दों का प्रयोग किया है तो यह ठीक नहीं है, लेकिन किया है या नहीं यह तो हमें देखना होगा। ..(**व्यवधान**).. शास्त्री जी हमने किसी को भेजा है, उनको आने दीजिए ..(**व्यवधान**).. अगर उन्होंने कहा है।

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: टेप सुना दीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): This is not fair. (*Interruptions*). I have told an officer to go and check the records. If he has said this, then we will see what can be done. Please don't get agitated.

SHRI VAYALAR RAVI: The hon. Home Minister has made a statement which has very serious implications not only inside but even outside the House. I am not worried about what he said. What I am worried about is that allegations were made by our neighbouring countries and others that the elections in Kashmir were rigged. But that is not fair. Yesterday, the hon. Prime Minister very categorically said that the elections were free and fair. The observers from outside countries also said that the elections were

free and fair. The hon. Prime Minister was gracious enough to quote the number of votes that were cast in Kashmir. But the Home Minister has made a statement saying that the elections were rigged * I am not interested in knowing in whose favour the elections were rigged. I am not concerned about it. The hon. Home Minister further said that he had ordered an inquiry and found that the elections were rigged*

If he had ordered such an inquiry, then he must lay a copy of that report on the Table of the House. The hon. Home Minister should, otherwise, correct his statement.

SHRI JOHN F. FERNANDES: (Goa) No allegations were made anywhere in the country. Allegations came from across our borders, from our enemies. We know that the people of Pakistan are agitated that the elections were free and fair. Not a word was said about it in our Kashmir. Now, the hon. Home Minister has alleged that rigging had taken place. I do not know whether the hon. Home Minister has evidence which he can lay on the Table of the House to substantiate his statement. If not, then he should withdraw his words because these words can have severe consequences. I would appeal to the hon. Home Minister to substantiate his statement. If not, he should withdraw his words.

SHRI SATISH AGARWAL: Madam Vice-Chairperson, I have got great regard for my old esteemed colleague, Mr. Indrajit Gupta. He was with me in the Lok Sabha in 1977 and I know him since then. He is a very sober seasoned and a mature person, a through gentleman, gentlemanliness personfied. I am sorry to say that today by alleging that there was rigging of elections*

in particular areas in favour of the BJP, he has provided ammunition to the enemies of the country who have been throughout alleging that the elections in Kashmir were rigged. The Prime Minister denied it. If this statement goes on the air or in the Press or the print media, then he will be providing ammunition to the enemies of this country, whether it is America or Pakistan who have been alleging that the elections in Kashmir were rigged. We hold that the elections were free and fair and they will be free and fiar hereafter also. I think it will be in the fitness of things and he will be doing a national duty if he withdraws his statement. It should not go on record because any particular community is not a monopoly of any particular party. Thousands and lakhs of Muslims in Gujarat and Maharashtra have voted for us. It is a well-known fact. So, that is not the position. After all, they may be voting on a lesser percentage to us on account of some false propaganda. We are trying to win them over. BJP is not a Hindu party. BJP is an all-India party. It consists of all and not Hindus alone. So, it is not a Hindu party. Maybe, we lay emphasis on certain issues....(*Interruptions*)

SHRI S.S. AHLUWALIA: It may be a communal party. But every Indian has the right to vote.

SHRI SATISH AGARWAL: That is a different point. It is not a Hindu party. We are getting votes from the Muslims. Mr. Minister, just 10 days back, there ___ was a problem in a Muslim Hospital in Jaipur. I myself went to that place and donated Rs. 10 lakhs out of my MP's found to the Mohmadi hospital. So, that is not the position. I have won in Jaipur for 15 years in the Assembly elections from a Muslimdominated area, namely, Johari Bazar. I secured 40 per cent of the Muslim votes. I am more popular than any of the Congress (I) leaders among the Muslims in the Jaipur city. The perception may differ from person to person and from personality to personality. So, don't charge that the BJP is not entitled to get the Muslim vote and that you were surprised and hence made an enquiry into it. Such a statement coming from a Minister and not from the CPI General-Secretary is the reason why I am taking

*Expunged as ordered by the Chair.

exception to it. You will in the national interest, kindly do something.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): अग्रवाल जी। मैं सदन के सामने सिर्फ यह कह सकती हूं कि आपने जिन शब्दों पर आपत्ति उठाई है उन शब्दों को मैंने अधिकारियों के ध्यान में लाया है कि उनको आप चेक करिए और मुझे बताइए। मुझे लगता है कि जब तक वे यह बताने के लिए आते हैं तब तक मंत्री जी को अपना रिप्लाई हम कंटिन्यू करने के लिए बोलें। ....(**व्यवधान**)...

श्री सतीश अग्रवाल: केवल इससे काम नहीं चलेगा। ...(**व्यवधान**)... हमने सुना है, हम पागल, नहीं हैं, कोई जबर्दस्ती आपत्ति नहीं की है। हम एक मित्र के विरुद्ध कोई अनावश्यक आपत्ति नहीं करेंगे। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): अग्रवाल जी, मोहम्मद सलीम जी कुछ कहना चाहते हैं।

श्री मोहम्मद सलीम: मैडम, मैं यह समझता हूं कि अगर चुनाव की प्रक्रिया में बाद में कोई शिकायत भी मिली है, मंत्री महोदय को या मिनिस्ट्री को तो चुनाव की प्रक्रिया के दौरान, अगर वह अफसर उनके डिपार्टमेंट का ही क्यों न हो, वह इलेक्शन कमीशन के अंडर में काम करता है।

If there is any allegation concerning that, it is the duty of the Election Commissioner to look into it..

गवर्नमेंट के तरफ से, डिपार्टमेंट की तरफ से या मिनिस्ट्री की तरफ से इस प्रक्रिया में हम मदालखत नहीं कर सकते हैं। हमारा यह कहना है कि जब कि कश्मीर खास करके दुनियां में एक मुद्दा बना हुआ है और उसके इंटरनेशनल इम्पलीकेशन भी है तो हम कोई ऐसी बात न करें। यहां मामला बी०जे०पी०, कांग्रेस या सी०पी०एम० का नहीं है। सदन को ऐसा लगता है और हकीकत भी ऐसी है और हम समझते हैं कि हमारे वरिष्ठ गृह मंत्री को किसी को दुख पहुंचाने के लिए या यह यहां पर एक मुद्दा बन जाए, इसके लिए नहीं कहा और ऐसा कहना भी नहीं चाहिए। अगर वे इस संदेश को अमेंड कर लेते हैं तो यह हमारे लिए अच्छा होगा।

†میڈم - میں یہ سمجھتا ہوں کہ اگر چناؤ کی پرکریا میں بعد میں کوئی

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

شکایت بھی ملی ہے منتری مہودے کو یا منسٹری کو تو چناؤ کی پرکریا کے دوران اگر وہ افسر الکے ڈیپارٹمنٹ کا ہی کیوں نہ ہو وہ الیکشن کمیشن کے انڈر میں کام کرتا ہے۔

If there is any allegation concerning that, it is the duty of the Election Commissioner to look into it.

گورنمنٹ کی طرف سے ڈیپارٹمنٹ کی طرف سے یا منسٹری کی طرف سے اس پرکریا میں ہم مداخلت نہیں کر سکتے ہیں۔ ہمارا یہ کہنا ہے کہ جبکہ کشمیر خاص کر کے دنیا میں ایک مدا بنا ہوا ہے اور اسکے "انٹرنیشنل امپلیکیشن" بھی ہیں تو ہم کوئی ایسی بات نہ کریں یہاں معاملہ بی۔ جے۔ پی۔ کانگریس یا سی۔ پی۔ ایم۔ کا نہیں ہے۔ سدن کو ایسا لگتا ہے اور حقیقت بھی ایسی ہے اور ہم سمجھتے ہیں کہ ہمارے معزز گرہ منتری کو کسی کو دکھ پہنچانے کیلئے یا یہ یہاں پر ایک مدا بن جائے اسکے لئے نہیں کہا اور ایسا کہنا بھی نہیں چاہئے اگر وہ "سینشس کو امنڈ" کر لیتے ہیں تو یہ ہمارے لئے اچھا ہوگا۔

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मुझे ऐसा लगता है कि इन्द्रजीत गुप्त जी जो हैं वे बहुत सीनियर पोलिटीशियन है, उनकी अपनी एक रेपुटेशन है, उनकी अपनी इमेज है और यह इत्तफाक है कि वह हमारे देश के गृह मंत्री भी हैं। बातों बातों में अगर कोई चीज

अनजाने में उन्होंने कही है, अनजानेपन में अगर उन्होंने कोई बात कहीं है और अगर उससे कोई को दुख पहुंचा है। If they are feeling hurt... *(Interruptions)* प्रधान जी जब मैं बात कह रही हूं तो आपका उत्तेजित होने का क्या कारण है? ...(व्यवधान)... You don't listen and just get up. this is not fair.

अगर आपने अपने भाषण में कोई ऐसी बात कही है जिससे हमारे माननीय सदस्य उत्तेजित होकर, क्रोधित होकर बोल रहे हैं तो मुझे लगता है मैंने शायद सुना नहीं है, रिकार्ड में अगर कोई ऐसी बात हो तो वे जब उसे करके आयेंगे तब आयेंगे लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगी कि आप कह दें कि मुझ से अगर ऐसी बात कही गई हो तो आई एम वेरी सारी। इससे ये लोग खामोश हो जायेंगे और आपका बड़प्पन हो जाएगा और बात खत्म हो जाएगी। आप बात बढ़ाने के बजाए बात खत्म करने की कोशिश किजिए।

श्री इन्द्रजीत गुप्त: मेडम, अभी आपने जो सलाह दी अपनी चेयर से, इसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। चेयर की मैं इज्जत करता हूं। लेकिन मेरे किसी वक्तव्य से अगर किसी को उत्तेजना या दुख लग जाए तो मैं इसके लिए जिम्मेदार नहीं हो सकता हूं। हज़ारों बातें इस पार्लियामेंट में रोज़ चलती है जिससे किसी न किसी को दुख या अफसोस या उत्तेजना हो सकती है। क्या किया जाए? आपको सिर्फ देखना है कि क्या अनपार्लियामेंटरी है। अनपार्लियामेंटरी अगर किसी ने वक्तव्य रखा तो ज़रूर आप उस को डिलीट कर दीजिये। **(व्यवधान)**

श्री एस०एस० अहलुवालिया: यह मुद्दा पार्लियामेंटरी या अनपार्लियामेंटरी का नहीं हैं **(व्यवधान)** आपने आरोप लगाया है **(व्यवधान)**

श्री सतीश अग्रवाल: आपके वक्तव्य का मैसेज बहुत गलत जाएगा। **(व्यवधान)**

श्री इन्द्रजीत गुप्त: जो मैंने कहा वह फिर कहूंगा (व्यवधान) आपको सुनना चाहिए (व्यवधान) यह गलत बात है **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: महोदया, इस देश की जनता को पूर्ण अधिकार है **(व्यवधान)** किस को वोट डालना है, इसका निर्धारण गृह मंत्री नहीं कर सकते। किस को वोट डालना है **(व्यवधान)**

श्री राजनाथ सिंह (उत्तर प्रदेश) आपका वक्तव्य ...**(व्यवधान)**

श्री एस०एस० अहलुवालिया: कल को कोई भी कर्मचारी काम करने के लिए नहीं जाएगा। **(व्यवधान)**

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: आपको त्याग-पत्र दे देना चाहिये मंत्रिमंडल से **(व्यवधान)** अगर इनको यह विश्वास है कि कल प्रधानमंत्री ने जो कहा **(व्यवधान)** वह सही नहीं है तो इन्हें त्याग-पत्र दे देना चाहिये मंत्रिमंडल से बाहर निकल कर कहें **(व्यवधान)** यह बहुत गलत बात है **(व्यवधान)**

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मंत्रिमंडल में रहेंगे और प्रधानमंत्री की बात का खंडन करेंगे **(व्यवधान)**

प्रो० राम बख्श सिंह वर्मा (उत्तर प्रदेश): आपका वक्तव्य राष्ट्रीय हित के विरूद्ध है **(व्यवधान)**

इन्द्रजीत गुप्त: आप रिकार्ड देख रही है। **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मंत्री जी ने कहा है—

"But anyway recently in the Lok Sabha elections, which were held in Kashmir, Madam, there are two constituencies situated on the border of Jammu. Perhaps they fall within the Doda region. They are on the border of Jammu. In those two constituencies, it was found that there was not a single Hindu voter. All the voters, hundred per cent, were Muslims. Yet when the ballot boxes were opened, it was found that several thousands of votes had been cast for BJP. How could it be? So we have made some enquiry. To the best of our knowledge.*

SOME HON. MEMBERS: Shame, shame...*(Interruptions)*...

श्री राजनाथ सिंह: आप देश को तोड़ देना चाहते हैं **(व्यवधान)** देश का दूसरा बंटवारा करना चाहते हैं **(व्यवधान)**

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: आपको त्याग-पत्र दे देना चाहिये **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप बैठगे? **(व्यवधान)** मुझे पढ़ने तो दीजिये।*

There could be no other explanation as to how in a hundred per cent Muslim

*Expunged as ordered by the Chair.

area so many thousands of votes could be cast for the BJP. Would you not agree?....."

श्री एस० एस० अहलुवालिया: नहीं मैडम, यह कहां लिखा है (व्यवधान) गृह मंत्री का ऐसा बयान देना दुर्भाग्यपूर्ण है यह गलत बात है, दुर्भाग्य है और इस देश को तोड़ने वाली बात है।...(व्यवधान)

SHRI SATISH AGARWAL: The Home Minister is trying to communalise it (*Interruptions*) He should be dismissed.

SHRI RAJ NATH SINGH: Madam, he should be dismissed. (*Interruptions*).....

SHRI SATISH AGARWAL: He is trying to communalise the situation. (*Interruptions*)...

श्री विष्णुकान्त शास्त्री: नहीं-नहीं मैं नहीं मानूंगा, यह बात इनको वापस लेनी होगी। ...(व्यवधान)

श्री महेश्वर सिंह (हिमाचल प्रदेश): वह त्याग-पत्र दें। ...(व्यवधान)

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: गृह मंत्री को त्याग-पत्र देना चाहिए...(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह: तब तक हम इस सदन की कार्यवाही नहीं चलने देंगे। ...(व्यवधान)

SHRI INDRAJIT GUPTA: Madam...

SHRI SATISH AGARWAL: We don't want to hear such a persons. (*Interruptions*) He is providing ammunition to the enemies of the country. (*Interruptions*)

SHRI INDRAJIT GUPTA: Madam...

SHRI SATISH AGARWAL: We don't want to hear you.

श्री एस० एस० अहलुवालिया: महोदया, कल प्रधानमंत्री ने इस सदन के माध्यम से सारे विश्व को एक संदेश दिया कि जो भी इलैक्शन हुए जम्मू-काश्मीर में वह फेअर इलैक्शन थे। ...(व्यवधान)

श्री इन्द्रजीत गुप्त: मैंने रिगिंग की बात नहीं कही थी। ...(व्यवधान)

I have never uttered the word 'rigging'. You are the people who are saying rigging, rigging, rigging. I have never said that there was rigging.

श्री एस० एस० अहलुवालिया: आप ही के बयान पर इलैक्शन पटीशन फाइल हो सकती है ...(व्यवधान) पूरी इलैशन जो रिग्ग हुई है क्या गारंटी है उसकी...(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Ahluwalia...

SHRI INDRAJIT GUPTA: Madam.....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Minister, will you please sit down for a minute because the Leader of the House would like to speak. Yes, Gujral Saheb.

श्री एस० एस० अहलुवालिया: इनको अपने शब्द वापस लेने चाहिएं और कृपया आप ब्लैकमेल करने की कोई कोशिश न करें कि बिल को पास किया जाए, नहीं तो फिर इस सदन में बड़ी मुश्किल होगी। ...(व्यवधान)

SHRI INDRAJIT GUPTA: Madam, I only want to give a bit of information. A few days ago, there was a meeting of leaders of all the political parties called by the hon. Prime Minister to discuss this question of elections in Kashmir. All the leaders were present including the top leaders of the party of these people here. They were all present and in that meeting also I had made reference to this peculiar incident which has taken place. (*Interruptions*)...

SHRI S. S. AHLUWALIA: That is a private meeting. (*Interruptions*)...There is a difference between that meeting and this House. (*Interruptions*) There is a difference. (*Interruptions*)...

SHRI INDRAJIT GUPTA: At that time, nobody had said anything.

मैंने नहीं कहा कि रिगिंग हुई। ...(व्यवधान).... रिगिंग का सवाल तो आप ही उठा रहे हैं। ...(व्यवधान) आप क्यों कहते हैं....(व्यवधान) इतने लोगों ने वहां वोट दिया...(व्यवधान)... इसमें कोई रिगिंग नहीं है, उन्होंने अपने ख्याल से वोट दिया। डेली बोलते हैं आप रिगिंग का सवाल क्यों उठा रहे हैं। ...(व्यवधान)

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: आप ने खुद बता दिया है...(**व्यवधान**)...शंका जाहिर की है....(**व्यवधान**)...

श्री इन्द्रजीत गुप्त: मैंने नहीं कहा। आप ऐसा मत बोलिए। ...(**व्यवधान**)

...(**व्यवधान**)...

नागर विमानन मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्री (श्री सी॰ एम॰ इब्राहीम): महोदया, मैं विनती करता हूं ...(**व्यवधान**)....

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: साहब, आप क्यों विनती करेंगे....(**व्यवधान**)...आप के लीडर ऑफ द हाउस बोलें...(**व्यवधान**)...

Let the Prime Minister come ...(*Interruptions*)...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप क्यों विनती करना चाहते हो?

This is not between you and the hon. Members. This is between the Home Minister and the hon. Members. Let him say something on that ÄÄÄ(*Interruptions*)...

SHRI SATISH AGARWAL: Let the Prime Minister come and let him stand by the statement that has been made by the Union Home Minister. Let him accept it that the parliamentary elections held in Jammu and Kashmir had been rigged.*

...(**व्यवधान**)...

श्री इंद्रजीत गुप्ता: इसका क्या मीनिंग है, मैंने नहीं बताया। मीनिंग तो आप बता रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...मैंने नहीं कहा.....(**व्यवधान**).....मैंने नहीं कहा। Who said this? ...(*Interruptions*)...I don't know the meaning.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): एक मिनट गुप्ता जी ...(**व्यवधान**).....

श्री इन्द्रजीत गुप्ता: आप की धमकी से कुछ नहीं होगा ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप लोग अपनी जगह पर जाइए। ...(*Interruptions*)...

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Madam, I say it is too much. It is too much. ...(*Interruptions*)... It is too much that this House is not (...*Interruptions*)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Don't divide the House on this issue on party lines. This is not on party lines. ...(*Interruptions*)...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: You don't know ...(*Interruptions*)... you hold up the session. You are refusing to pass the Resolution. Let the whole country know...(*Interruptions*)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Let the whole country know what the Home Minister is speaking ...(*Interruptions*)...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Let the whole country know. We shall sit here. ....(*Interruptions*)....

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप लोग अपनी-अपनी जगह पर जाइए। वेल में आने का कोई फायदा नहीं है आप का।

SHRIMATI MARGARET ALVA (Karnataka): Madam, there seems to be some confusion becuase yesterday the Prime Minister initiating the discussion on this Resolution categorically stated that there had been propaganda outside the country that elections in Jammu and Kashmir had been rigged. He said and stated categorically that no rigging of any kind had taken place in Jammu and Kashmir. This is a matter of record, not of dispute because it is in this House, it is here that the Prime Minister stated this.

The other thing which he said is about free and fair elections and I quote:

> "The other thing is about free and fair elections. During the Parliament elections, some people I don't want to say 'all' — tried to talk about some omissions and commissions. This was the type of propoganda that some people tried to carry on. I found that this was a baseless allegation and these were baseless views expressed by some

of the political parties. Here I must compliment the previous Government..." so on and so forth.

I can also say that he had spoken about the massive turnout and various other things. And then he said, It was only for the purpose of convincing the international community..." That is what was said. "This is the type of propoganda which is going on outside the country." "...In this connection I would like to make the point very clear and categorically clear that there was no rigging." My point is that the Prime Minister's categorical statement — he is here also — and that of the Home Minister's which has come today are totally contradictory to each other.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): It is unfortunate. (*Interruptions*)

SHRIMATI MARGARET ALVA: There is a great deal of confusion. We have, therefore, been requesting — now that the Prime Minister is here — that the Government may clarify its position and tell us whether the Government believes that there was rigging or whether there was no rigging. (*Interruptions*)

SHRI INDRAJIT GUPTA: No. I have never said so. (*Interruptions*) SHRI S.S. AHLUWALIA: No You said so. (*Interruptions*) Please read what you have said. (*Interruptions*)

SHRIMATI MARGARET ALVA: Madam, what is the use of shouting? (*Interruptions*) I have just got the record from the Table of the House of what has been stated today by the Government. (*Interruptions*)

SHRI S.S. AHLUWALIA: They will read it and the Prime Minister will know it. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Agarwalji, my request to you and your colleagues is, will you please listen carefully by keeping quiet? The hon. Prime Minister is also here. (*Interruptions*)

SHRI SATISH AGARWAL: That is why we have kept quiet. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Please maintain peace in the House. (*Interruptions*)

SHRIMATI MARGARET ALVA: This is the record, Madam. The Prime Minister is here and I can read it again — you have just read it. The question is, there seems to be two interpretations to the elections. I believe that in the interest of this country — and of our own set of parameters of what we have said and what we believe -- that the elections were free and fair, it would be good if the record is put straight and that the Prime Minister, being the Head of the Government, clarifies the position so that there are no two opinions coming from the Government on the same subject on as sensitive a subject as elections in Kashmir.

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मैडम, यह दुबारा पढ़ा जाना चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्री महेश्वर सिंह: मैडम, इसको पढ़कर सुना दीजिए एक बार।

श्री राजनाथ सिंह: मैडम, गृहमंत्री जी ने जो कुछ कहा है, वह रिकार्ड है। ...(व्यवधान)...

SHRI INDRAJIT GUPTA: I have requested the Prime Minister...(*Interruptions*)....

SOME HON. MEMBERS: No, No. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN: No. This is not fair. (*Interruptions*)....This is not fair (*Interruptions*)...Let him complete the reply. (*Interruptions*)...Mr. Agarwal, you are a senior Member. Let the Home Minister say something (*Interruptions*)...

SHRI SATISH AGARWAL: Madam, let the statement be either handed over to hon. Prime Minister or be read out to him. (*Interruptions*)...I want to know

from the hon. Prime Minister whether he is also fo the same opinion *(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Agarwalji, I do not want to hand over the statement to Prime Minister or anybody else. If you want I can again read it out. *(Interruptions)*... I can read it out. *(Interruptions)* ...But do not behave like this in the House. Will you please sit down? *(Interruptions)*...I want order in the House. *(Interruptions)*...Do not create a problem. You all are elders sitting in this House.

एक माननीय सदस्य: पढ़ने की क्या जरूरत है? ...(व्यवधान)...

श्री एस०एस० अहलुवालिया: मैडम पढ़ लें ताकि प्रधानमंत्री जी को पता लग जाए इसके बारे में। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): Do you want me to read out the statement made today? *(Interruptions)*...

THE PRIME MINISTER (SHRI H.D. DEVE GOWDA): Respected Vice-Chairman, I was not in the House. In fact, on this particular Resolution I requested the hon. Home Minister to reply on my behalf because yesterday I was engaged in the other House to reply on the discussion on the rise in prices of petroleum products. I thought, this matter was going to be concluded yesterday and the reply had to be given by me. As I was expected in the other House to reply, I requested for the permission of this House to allow the reply to be given by the Home Minister on my behalf. While replying, it seems, he has mentioned about two constituencies where the Muslim population has voted in favour of 'A' political party or 'B' political party. I think, that is the contention. *(Interruptions)*....

SHRI S. S. AHLUWALIA: No, Sir...*(Interruptions)*...You read it first. ...*(Interruptions)*... It is not the contention. He has levelled a charge against *...*(Interruptions)*...

SHRI H. D. DEVE GOWDA: Please listen to me....*(Interruptions)*... I do not want to enter into the details of all these things. Please bear with me for a moment. You are all senior leaders. The issue before us is to see that the parliamentary elections which were held earlier should not send a wrong message to the international community. Of course, this issue was raised in the meeting of the opposition leaders and senior leaders which was held under my chairmanship...*(Interruptions)*...This issue was raised.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI SIKANDER BAKHAT): We are not concerned with that...*(Interruptions)*...

SHRI H. D. DEVE GOWDA: I have not yet completed....*(Interruptions)*...

VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Sikander Bakht Saheb, please.

SHRI H. D. DEVE GOWDA: I have not yet completed...*(Interruptions)*...I would request the Leader of the Opposition that I have not yet completed. Of course, Indrajitbabu had raised this issue. Then I told at the same platform, in the same meeting that when I visited Kashmir on 6th of this month, I had an occasion to meet all political party leaders. Not only that; I was able to hold a separate meeting with the official machinery. I took their views so far as the elections were concerned, and how the elections were held. On-the-spot information which I gathered is that there was no question of any rigging, there was no question of any complaint by any political party or even by the official machinery. And based on that, yesterday while moving the Resolution, I made a preliminary remark, preliminary submission in this House. In this connection, I would like to make it categorically clear that we should not give wrong impression to the international

*Expunged as ordered by the Chair.

community at any cost. Media writes so many things. Let me honestly speak that so many kinds of information are being planted in the media. I do not even want to attack the media. I know this. But to be fair, I must compliment the officers, I must compliment our armed forced, I must compliment all those who performed the election duty. Today again I reiterate to everyone, to all the senior Members of this august House that while approving this Resolution—because tomorrow is the last day—we should collectively send a message to the entire world community that the elections to the Assembly in Kashmir which are going to be held in the month of September, will be free and fair. there is no question of any scope of rigging. We have full confidence in the Election Commission. The Election Commission is there to conduct the elections. So, there is no question of any rigging by anybody. This is the election which is ultimately going to give some solution to the problem and peace to the Valley which the people want. The Home Minister has not visited there. I wanted to take him with me, we wanted to go together, but unfortunately he had some other engagements on that day. So through an on-the-spot study, I was able to get the information from all quarters and there was no such complaint. There are certain newspapers which have given this type of opinion...*(Interruptions)*...Kindly listen to me. I am giving you the information...*(Interruptions)*...I have gone there after nine years. I have gone there...*(Interruptions)*...I have talked to all the political parties. I am giving this august House the information on what I have noticed there during my visit.

श्री सिकन्दर बख्त: प्राईम-मिनिस्टर साहब, मुझे 2 मिनट दीजिये प्लीज...(व्यवधान)

†اشری سکندر بخت: پرائم منسٹر صاحب مجھے دو منٹ دیجئے پلیز...مداخلت...

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) सिकन्दर बख्त साहब, प्रधानमंत्री जी ने अभी अपना वक्तव्य कंपलीट नहीं किया है। उनको बोलने दीजिये। उसके बाद अगर आप कुछ पूछना चाहें तो पूछ सकते हैं।

श्री सिकन्दर बख्त: मैं प्रधान मंत्री जी की मुश्किल को आसान करना चाहता हूं क्योंकि प्रधानमंत्री जी ने काफी कोशिश करके किसी तल्ख बात का रुख मोड़ने की कोशिश की है। सवाल इशू का नहीं है। हर पार्टी ने इस चीज के सिलसिले में पूरा इत्तफाक जाहिर किया है कि वहां इलेक्शन हो जाए। कश्मीर के मामले में पूरा हिन्दुस्तान आपके साथ भी है और हर हुकूमत जो इससे पहले रही है, उसके साथ रहा है। सवाल एक्सप्रैशन का है। जो एक्सप्रैशन होम-मिनिस्टर साहब ने इस्तेमाल किया है। यह बयान पहली मर्तबा यहां नहीं आया है। मैंने टी०वी० पर भी सुना है। मैं ऐहतराम करता हूं। He is the senior most parliamentarian that we have amongst us.

वे जो चाहे कह देते हैं, जो समझ में आता है कह देते हैं। उन्होंने कहा कि मुसलमानों को बी०जे०पी० के साथ वोट करना ही नहीं चाहिये। इस किस्म की लकीर खींच रखी है। यह कोई तरीका है बात करने का? मेरा सख्ततरीन ऐतराज है। प्रधानमंत्री जी इसको बचाकर चल रहे हैं। विषय नहीं है यह। कश्मीर के मामले में पूरा मुल्क आपके साथ है। इलेक्शन के लिये किसी एक पार्टी ने भी मुखालफत नहीं की है। पर मैंने टेलीविजन पर भी सुना है होम-मिनिस्टर साहब को यह सब कहते हुये और मुझे इससे ज्यादा ऐब्सर्ड, मोहमल बेतुकी बात कोई लगी नहीं यह क्या तरीका है? ...(व्यवधान) मुसलमान बी०जे०पी० के लिये वोट नहीं कर सकता है। क्या आप इस किस्म के डिवीजन को जारी रखने में दिलचस्पी रखते हैं? These are the people who want to keep the people of this country, fragmented, the society of the country fragmented.

ये लोग हैं जो तकसीम की दीवारों को खड़ा रखना चाहते हैं और अपनी जहनियत का इजहार मुख्तलिफ वक्त पर निहायत गलत किस्म के अलफाज के साथ करते हैं। मेरा ऐतराज आपसे है ...(व्यवधान) प्रधानमंत्री जी ने जो कुछ कहा है, मुझे प्रधानमंत्री जी की बात से इत्तफाक है ...(व्यवधान)

†اشرف سلفند بخت: میں پردھان جی کی مشکل کو آسان کرنا چاہتا ہوں۔ کیونکہ پردھان منتری جی نے کافی کوشش کرکے کسی تلخ بات کا رخ موڑنے کی کوشش کی ہے۔ سوال ایشو کا نہیں ہے ہر پارٹی نے اس چیز کے سلسلے میں پورا اتفاق ظاہر کیا ہے کہ وہاں الیکشن ہو جائیں۔ کشمیر کے معاملے میں پورا ہندوستان آپکے ساتھ بھی ہے اور ہر حکومت جو اسکے پہلے رہی ہے اسکے ساتھ رہا ہے۔ سوال ایکسپریشن کا ہے۔ جو ایکسپریشن معزز منسٹر صاحب نے استعمال کیا ہے۔ یہ بیان پہلی مرتبہ یہاں نہیں آیا ہے۔ میں نے ٹی وی پر بھی سنا ہے۔ میں احترام کرتا ہوں۔

He is the seniormost parliamentarian that we have amongst us.

وہ جو چاہے کہہ دیتے ہیں۔ جو سمجھ میں آتا ہے کہہ دیتے ہیں۔ انھوں نے کہا کہ مسلمانوں کو بی۔ جے۔ پی کے ساتھ ووٹ کرنا ہی نہیں چاہیئے۔ اس قسم کی لکیر کھینچنے کی ہے یہ کوئی طریقہ ہے بات کرنے کا۔ میرا سخت ترین اعتراض ہے۔ پردھان منتری جی اسکو بچا کر چل رہے ہیں۔ وشے نہیں ہے یہ۔ کشمیر کے معاملے میں پورا ملک آپکے ساتھ ہے۔

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

الیکشن کیلئے کسی ایک پارٹی نے بھی مخالفت نہیں کی ہے۔ پر میں نے ٹیلیویژن پر بھی سنا ہے معزز منسٹر صاحب کو یہ سب کہتے ہوئے۔ اور مجھے اس سے زیادہ "ابسرڈ" "محمل" اور بے تکی بات کوئی لگی نہیں۔ یہ کیا طریقہ ہے۔۔۔ "مداخلت"۔۔۔ مسلمان بی۔ جے۔ پی کیلئے ووٹ نہیں کر سکتا ہے کیا آپ اس قسم کے ڈویژن کو جاری رکھنے میں دلچسپی رکھتے ہیں۔

These are the people who want to keep the people of this country, fragmented,

یہ لوگ ہیں جو تقسیم کی دیواروں کو کھڑا رکھنا چاہتے ہیں اور اپنی ذہنیت کا اظہار مختلف وقت پر نہایت ہی غلط قسم کے الفاظ کے ساتھ کرتے ہیں۔ میرا اعتراض آپ سے ہے۔۔۔ "مداخلت"۔۔۔ پردھان منتری جی نے جو کچھ کہا ہے۔ مجھے پردھان منتری جی کی بات سے اتفاق ہے۔ ۔۔۔ "مداخلت"۔۔۔]

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): सिकन्दर बख्त साहब, आपने जो कहना था, बहुत अच्छे शब्दों में कहा। उसके आगे बढ़कर अपना गुस्सा इतना मत बढ़ाइये कि आपको तकलीफ हो जाए। आपने जो बोला, ठीक बोला ...**(व्यवधान)**

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: महोदया। यह बात अभी एक मिनट में समाप्त हो जाती है। प्रधानमंत्री जी ने साफ लफ्जों में कहा है कि गृह मंत्री अपनी बात विदड्रा करें ...**(व्यवधान)**

श्री सिकन्दर बख्त: होम-मिनिस्टर साहब क्या कह जाते हैं, प्रधानमंत्री साहब क्या कह जाते हैं? वह उनका अंदरूनी मामला है। एक मजाक बनी हुई है यह हुकूमत जो चाहे कह जाते हैं, मैं उसमें नहीं पड़ना चाहता हूं। मगर यह हिन्दुस्तान की पूरी पोलिटी को पौल्यूटेड रखना चाहते हैं अपनी जहनियत के जरिये से, उसकी इजाजत बी०जे०पी० इनको नहीं दे सकती...**(व्यवधान)** इस बात के लिये माफी मांगिये...**(व्यवधान)** इसका मतलब क्या हुआ? हम नहीं मानेंगे, आपसे अर्ज कर देते हैं मैडम, क्योंकि निहायत काबिले ऐतराज है इनका जुमला। मैं खुद अपने कानों से टेलीविजन पर सुन चुका हूं। उसको यहां दोहराने की जरूरत नहीं है। मतलब क्या हुआ इसका?

†اشری سکندر بخت: ھوم منسٹر صاحب کیا کہہ جاتے ہیں۔ پردھان منتری صاحب کیا کہہ جاتے ہیں۔ وہ انکا اندرونی معاملہ ہے۔ ایک مذاق بنی ہوئی ہے یہ حکومت۔ جو چاہے کہہ جاتے ہیں۔ میں اسمیں نہیں پڑنا چاہتا ہوں مگر یہ ھندوستان کی پوری پوپولیٹی کو پولیوٹڈ رکھنا چاہتے ہیں اپنی ذھنیت کے ذریعہ سے۔ اسکی اجازت بی۔جے۔پی انکو نہیں دے سکتی ... "مداخلت" ... اس بات کیلئے معافی مانگئے ... "مداخلت" ... اسکا مطلب کیا ہوا۔ ہم نہیں مانیں گے۔ آپ سے عرض کر دیتے ہیں میڈم۔ کیونکہ نہایت ہی قابل اعتراض ہے انکا جملہ۔ میں خود اپنے کانوں سے ٹیلیویژن پر سن چکا ہوں۔ اسکو یہاں دوھرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ مطلب کیا ہوا اسکا۔]

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): सिकन्दर बख्त साहब, प्रधानमंत्री जे ने अपनी सरल, सादी भाषा में बहुत अच्छे तरीके से आपको स्पष्टीकरण दिया है। मुझे ऐसा लगता है कि गृह मंत्री भी अगर सरल और सादी भाषा में एक बार कह दें कि ठीक है, अगर अनजाने में कोई शब्दों का हेर-फेर हुआ होगा तो आई एम सॉरी...**(व्यवधान)**

श्री एस०एस० अहलुवालिया: मैडम, पहले वह विदड्रा करें अपने शब्द और उसके बाद रिकार्ड ऐक्सपंज किया जाए ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मैं वही कह रही हूं उनको ...**(व्यवधान)**

श्री एस०एस० अहलुवालिया: महोदय, इसको रिकार्ड से ऐक्सपंज किया जाए ताकि आने वाली पुश्तें भी अगर कश्मीर की डिबेट पर रिसर्च करने आएं तो उन्हें भी ये अलफाज़ देखने को न मिलें।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मैंने कहा है, ऐक्सपंज तो करेंगे ही ...**(व्यवधान)**

SHRI S.S. AHLUWALIA: If you don't agree, it is your wish. You are the Home Minister of this great nation. *(Interruptions)*

श्री सिकन्दर बख्त: मैं प्रधानमंत्री जी से अपील करता हूं, लीडर ऑफ दि हाऊस से भी अपील करता हूं कि इन ऐब्सर्ड अलफाज़ को सदन की कार्यवाही से निकाला जाए और होम-मिनिस्टर साहब खड़े होकर हमसे माफी मांगें। मतलब क्या है इसका?

†اشری سکندر بخت: میں پردھان منتری جی سے اپیل کرتا ہوں۔ لیڈر آف دہ ھاؤس سے بھی اپیل کرتا ہوں کہ ان "ابسرڈ" الفاظ کو سدن کی کاروائی سے نکالا جائے اور ھوم منسٹر صاحب کھڑے ہو کر ہم سے معافی مانگیں۔ مطلب کیا ہے اسکا۔]

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): सिकन्दर बख्त साहब, राज्य सभा की प्रोसीडिंग्स में जिन शब्दों का उपयोग उन्होंने किया है, उनको तो हम एक्सपंज कर ही रहे हैं, लेकिन इससे काम नहीं चलेगा। मैं तो यह कहूंगी कि गृह मंत्री जी इस पर कुछ बोल दें तो ज्यादा आसान रहेगा उनके लिए भी और आपके लिए भी। सदन की कार्रवाई चलाने में मुझे आसानी हो जाएगी, बैक लॉग नहीं रहेगा।

SHRI INDRAJIT GUPTA: I am very sorry. The hon. Prime Minister did not get an opportunity; he was not given an opportunity either to hear me or to hear the words which I have spoken. I had never said ...*(Interruptions)* If you jump up and start shouting again I will sit down. ...*(Interruptions)*. Your do not have the patience to listen to anybody. I have never made any allegation about rigging. I was categorical. I simply narrated one incident which was brought to our notice which I had also repeated in the leaders' meeting where their leaders were present. ...*(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: He has challenged the integrity of the officers. It is not a question of repeating; you are suspecting their integrity. ...*(Interruptions)*

Let the Prime Minister say whatever he wants to say, we will go by that. I have got the statement of the Prime Minister made in the House yesterday. ...*(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): A copy of the statement is with the Prime Minister.

श्री राजनाथ सिंह: जो कुछ भी रिकार्ड पर आया है वह प्रधान मंत्री जी के पास पहुंच चुका है। हम सब प्रधान मंत्री जी से केवल इतना जानना चाहते हैं कि गृह मंत्री जी के द्वारा जो भी बात इस सदन में कही गई है, क्या वह उससे सहमत हैं, क्या वह सही है। बस, हम इतना जानना चाहते हैं?

SHRI INDRAJIT GUPTA: As the hon. Members are saying, a person is within his right, as a voter — be it a Hindu or a Muslim or anybody — to vote for whomsoever he likes. Frequently, people, non-Muslims are voting for Muslims. We know that also. If they stick to that point, that is all that matters. Why do they jump up and get excited and allege rigging; ...*(Interruptions)*

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मुसलमानों ने बी०जे०पी० को वोट क्यों दिया ...**(व्यवधान)**

श्री एस०एस० अहलुवालिया: अब तो एक ही रास्ता है सोल्यूशन का। यहां पढ़कर सुनाएं। ...**(व्यवधान)** प्रधान मंत्री जी ने कल अपना वक्तव्य दिया, सारी दुनिया ने इस वक्तव्य को सुनना है और ...**(व्यवधान)**

SHRI VISHNU KANT SHASTRI: It is on record; what he had said. *(Interruptions)*

Madam Vice-Chairman, please read out what he had said. *(Interruptions)*

SHRI INDRAJIT GUPTA: Madam, the hon. Prime Minister should know that I had never alleged anything about rigging. I only referred to an incident. *(Interruptions)* Then they stood up. *(Interruptions)* Therefore, the hon. Prime Minister also, naturally, is expressing concern that the international opinion would be influenced and all that. I never said anything about rigging. *(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: You are suspecting the integrity of the officers. *(Interruptions)* When the Home Minister is suspecting the integrity of the officers, how will the polling officers perform their duties during the Assembly election? *(Interruptions)* Ho will the officials perform their duties if you are suspecting their integrity? *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Gurudas Das Gupta, do you want to say something? *(Interruptions)*

DR. B. B. DUTTA (Nominated): Madam, I want to say something. *(Interruptions)*

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Madam, let us leave it. The chapter is closed. *(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: How can we leave it? *(Interruptions)*

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: आपको पता होना चाहिए कि रिगिंग नहीं हुई और मुसलमानों ने अगर बी०जे०पी० को वोट दिया है तो यह कोई.... (व्यवधान)

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: आप इसको वापस लीजिए। आप इसको वापस लीजिए। यह नहीं चलेगा।.... (व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, kindly expunge those remarks. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): I have already expunged it. I told you many times. if you are not listening to what I say from here, what can I do? *(Interruptions)*

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मैडम गृह मंत्री जी ने गलत बयानी की है, कृपा करके वह स्वीकार कर लें... (व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): सिकन्दर बख्त साहब, मैंने एक बार नहीं अभी तक दस बार इस बात को दोहराया है कि गृह मंत्री साहब ने... (व्यवधान)... आप सुनते नहीं हो क्या करें?... (व्यवधान)...

Mr. Ahluwalia, may I speak with your permission, please. *(Interruptions)*

Shri S.S. AHLUWALIA: Madam, my submission is...

THE VICE CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): May I speak with your permission?

SHRI S.S. AHLUWALIA: My humble submission is this. You are expunging it from the record, I understand. But what is the message that we are giving? Today, we are going to pass this Resolution to extend President's rule in Jammu and Kashmir and then we are going to hold the Assembly elections. But he is casting aspersions on the integrity of the polling officers. You kindly read it.

SHRI INDRAJIT GUPTA: Which polling officers? *(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Mr. Prime Minister, kindly read it. *(Interruptions)*

If you agree with that statement, I will go by that. My point is, how are you going to get polling officers for the Assembly elections? Who will come forward to take up polling duty for the Assembly elections when you are suspecting the integrity of the polling officers who went there during the Parliament elections at the risk of their lives, with their bullet-proof jackets and facing AK-47s and grenades? This is what you have said. Madam, you are going to expunge it from the record. That is all right. But you are suspecting the integrity of the polling officers. *(Interruptions)*

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, with your permission, may I say something? *(Interruptions)* Madam, may I say something, with your permission? *(Interruptions)* I think it is enough. let us close the matter. *(Interruptions)*. You have said that you have expunged it. *(Interruptions)* Enough is enough. Let us close it. *(Interruptions)* Let us pass this Resolution immediately. The Prime Minister has spoken about it. *(Interruptions)* Let us finish it. Let us leave it there. *(Interruptions)*

SHRI SIKANDER BAKHT: Nothing of the sort. *(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, you can bulldoze a Bill. You can bulldoze the Statutory Resolution. You can pass anything in Parliament by majority. But what about your ethics, your principles? When you are suspecting your own officers, you cannot rule; you cannot rule. How can you get officers to perform polling duty? The Home Minister should withdraw his words. *(Interruptions)*

SHRI V. NARAYANASAMY: With your permission, Madam, one minute. *(Interruptions)*

Please. Let me have my say on this matter. *(Interruptions)*

All the polling officers are not angles. Let me make it very clear.

6.00 P.M.

Here and there are officers who are supporting this party and that party. This

politics is going on in this country. It is a hard fact. Some officers are supporting this party and some officers are supporting that party. All the polling officers are not angels. Therefore, let us close this chapter and let us pass the resolution. ...*(Interruptions)*...

श्री सिकंदर बख्त: सदर साहिबा, जो कुछ नारायणसामी जी ने कहा है या अहलुवालिया जी ने कहा है, मैं उसकी ताईद करता हूं लेकिन मुझे शिकायत यह है कि जो दरख्वास्त मैंने लीडर आफ दी हाऊस और प्रधान मंत्री जी से की है, उसका कोई रिऐक्शन नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि उन्होंने जो तमाम सियासी ताने-बाने को तबाह करके रख दिया है, उसके मुल्तालिक कोई रिऐक्शन होम मिनिस्टर साहब का नहीं है और उनसे मुझे किसी रिऐक्शन की उम्मीद भी नहीं है। हम चाहते हैं कि जो अल्फाज़ कहे गये हैं, वह वापिस लिए जाएं। दो अलग इशू हैं। ऑफीसर्स पर ऐस्पेर्शन एक बात है और हिन्दुस्तान के समाज को यह कहना कि मुसलमान बी०जे०पी० के वोट कर ही नहीं सकता। हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर इसरार करना कि हिन्दुस्तानी समाज मजहब के नाम पर तकसीम रहे, ताकि कुछ लोग जो कोयला सेंक रहे हैं, सेंकते रहे। पूरे हिन्दुस्तानी समाज के फौब्रिक पर ऐस्पेर्शन है। वह अल्फाज़ वापिस लिए जाने चाहिए। इस सिलसिले में माफी मांगनी चाहिए। दोनों बिल्कुल अलहदा हैं। हमारी तरफ से जो बात कही जा रही है, उसे माना जाए क्योंकि मैंने अपने कानों से इनको यह कहते हुए सुना है। मैं कहना चाहता हूं कि यह कहने का होम मिनिस्टर साहब को क्या अख्तियार है? यह तो हिन्दुस्तान के समाज को इस तरीके से जलील किया जा रहा है। इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि एक तो मैं प्रधान मंत्री जी का रिऐक्शन जानना चाहता हूं। How is he reacting to the observations made by the Home Minister? दूसरे मैं यह कहना चाहता हूं कि पूरे हिन्दुस्तान को बदनाम करने की, हिन्दुस्तानी समाज को इकट्ठा न होने देने की साजिश को खत्म होना चाहिए।

†شری سکندر بخت: صدر صاحبہ۔ جو کچھ نارائن سوامی جی نے کہا ہے یا آہلووالیہ جی نے کہا ہے۔ میں اسکی تائید کرتا ہوں۔ لیکن مجھے شکایت یہ ہے کہ جو درخواست

میں نے لیڈر آف دی ہاؤس اور پردھان منتری جی سے کی ہے اسکا کوئی ری ایکشن نہیں ہے میں جاننا چاہتا ہوں کہ انھوں نے جو تمام سیاسی تانے بانے کو تباہ کرکے رکھدیا ہے اسکے متعلق کوئی "ری ایکشن" ھوم منسٹر صاحب کا نہیں ہے اور ان سے مجھے کسی "ری ایکشن" کی امید بھی نہیں ہے۔ ہم چاہتے ہیں کہ جو الفاظ کہے گئے ہیں وہ واپس لے جائیں۔ دو الگ ایشو ہیں۔ آفیسرس پر اسپیرشن ایک بات ہے اور ھندوستان کے سماج کو یہ کہنا کہ مسلمان بی۔جے۔پی۔ کے ووٹ کر ہی نہیں سکتا۔ ھندوستان کے مسلمانوں پر اصرار کرنا کہ ھندوستانی سماج مذھب کے نام پر تقسیم رہے تاکہ کچھ لوگ جو کوئلہ سینک رہے ہیں۔ سینکتے رہیں۔ پورے ھندوستانی سماج کے "فیبرک" پر "اسپرشن" ہے۔ وہ الفاظ واپس لئے جانے چاہیں اس سلسلے میں معافی مانگنی چاہیئے۔ دونوں بالکل علیحدہ ہیں۔ ہماری طرف سے جو بات کہی جارہی ہے اسے مانا جائے۔ کیونکہ میں نے اپنے کانوں سے انھیں یہ کہتے سنا ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ یہ کہنے کا ھوم منسٹر صاحب کو کیا اختیار ہے۔ یہ تو ھندوستان کے سماج کو اس طریقہ سے ذلیل

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

کیا جا رہا ہے۔ اسلئے میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ ایک تو میں پردھان منتری جی کا ڈری ایکشن" جاننا چاہتا ہوں۔

دوسرے میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ یہ بولے ھندوستان کو بدنام کرنے کی۔ ھندوستانی سماج کو اکٹھا نہ ہونے دینے کی سازش کو ختم ہونا چاہئے۔

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SRIKANTA JENA): Madam, on this issue, the Prime Minister has already clarified.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Jena, will you please yield? ...*(Interruptions)*... Sikander Bakht Saheb, you would like to know the reaction of the Prime Minister.

SHRIMATI MARGARET ALVA: He has given it.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): The hon. Prime Minister, in the beginning, has given his own reaction. ..*(Interruptions)*... Listen. If you want something beyond that, in that case, you will have to keep quiet and listen to what the Leader of the House and the Prime Minister want to say. If you don't allow, then nobody would like to speak: the deadlock will continue.

SHRI SATISH AGARWAL: We are keeping quiet. Let the Prime Minister speak.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): Mr. Prime Minister. ...*(Interruptions)*... Mr. Pradhan, no disturbance now. Please sit down.

SHRI SATISH PRADHAN: You have not allowed me to speak.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARADE): Please sit down. Once the Prime Minister has risen to speak, we should not raise any issue. We must show that decency towards the Prime Minister. Please sit down, Mr. Pradhan, And don't make the whole thing complicated. Please sit down. Yes, Mr. Prime Minister.

SHRI H.D. DEVE GOWDA: Hon. Vice-Chairman, about the issue before the House, in no way has the hon. Home Minister said that there was rigging. I went through the copy of the speech, which is made available to me. He never said that there was any rigging. ..*(Interruptions)*..He only said, how could a particular political party get votes where there were no Hindus? I am not going to react particularly on this issue. In this country, the question of exercising of votes by non-Hindus or Hindus is their freedom. Even non-Hindus can vote to a particular political party, if they choose to do so. Our hon. Leader of Opposition and we were together in Parliament. He is in the BJP. That means, nobody can say that the BJP cannot have a Muslim leader. In this country, people have got their own choice and they can support whom they want. How can we question that? So, I would like to make my stand very clear. His impression or my impression normally is this. Normally, the impression is that your philosophy or your ideology is not going to cut much ice with secular forces and the people who believe in secular forces. That is the normal view that is expressed in the country by the electorate. But, there are special cases where non-Hindus also can work for a political party. They have got their own right. Nobody can prevent it.

In the Doda area, whether Hindus are there or Muslims are there, how they have voted, how they have exercised their franchise, how they have done it or whether any coercive method was used, all these things are not my concern.

Nobody, including the official machinery and political parties, has made any complaint when I was there on the spot. I met cross sections of the people. They said that there was no question of any such fear so far as the past election was concerned, that is, the election that was conducted for Parliament in all the six Parliament segments.

I gave the voting pattern. I gave the voting pattern in the Parliament elections in Gujarat also where there was no such terrorism. There was only 39 per cent voting. Why I gave this figure is that the international community should not think that there is something wrong in this election. The people want elections. The people want peace in the Valley. That is why we want to respond immediately to the desire of the people to conduct elections and to see that a government is formed by the people's mandate.

So, at this juncture, I want to say this to the hon. Leader of the Opposition who is a senior leader. We were there together. He chose to sit there: I chose to sit here. It was your wish. I have to sit here. .... *(Interruptions)*

Some people might have taken the decision. Let us not drag this issue too far. Narayanasamyji has said that in the official machinery also likes and dislikes are there. ...*(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: It should not come from the mouth of the Home Minister.

SHRI H. D. DEVE GOWDA: I request all of you to co-operate to pass this Resolution.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I think now here ends this matter. ...*(Interruptions)*

Mr. Shastri, please. ....*(Interruptions)*

SHRI VISHNU KANT SHASTRI: The Home Minister was wrong. He must not have said that.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Sikander Bakht Saheb, I am asking you. Will you please respond to my request now? *(Interruptions)*

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: होम मिनिस्टर साहब ने बोल दिया...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI MARGARET ALVA: Madam Vice-Chairman, you close it. ...*(Interruptions)*

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): सिकन्दर बख्त साहब, मुझे लगता है कि प्रधान मंत्री जी ने इस चेप्टर को बन्द कर दिया है आपको जवाब देकर। अगर आपकी इजाजत हो तो ...**(व्यवधान)**

SHRI VISHNU KANT SHASTRI: No. ... *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I would like to put this Statutory Resolution to vote.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: दिल्ली से अधिकारियों को वहां भेज दिया है। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I shall now put the Statutory Resolution to vote. The question is:

> "That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 18th July, 1990 under article 356 of the Constitution in relation to the State of Jammu and Kashmir, for a further periof of six months with effect from the 18th July, 1996."

The motion was adopted

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, मैं अर्ज कर रहा हूं कि मैंने इबतदा में भी यह कहा था कि हम इस बिल का समर्थन कर रहे हैं। देखिये प्रधान मंत्री जी से गुजारिश है कि आप प्रधान मंत्री है, मैं अहतराम करता हूं प्रधान मंत्री ने जितना कुछ रिगिंग के संबंध में कहा ...**(व्यवधान)**

†[ ]

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

کر رہے ہیں۔ دیکھئے پردھان منتری جی سے گزارش ہے کہ آپ پردھان منتری ہیں۔ میں احترام کرتا ہوں۔ پردھان منتری نے جتنا کچھ "ریگنگ" کے سمبندھ میں کہا ہے۔۔۔ "مداخلت"۔۔۔]

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, has the Resolution been passed? If it had been passed, then, announce it.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Gupta, please have some patience. Listen to him.

श्री सिकन्दर बख्त: मैं इस वक्त कोई बात कर रहा हूं अगर आप अहकामात करेंगे, सादिर करेंगे, हम भी कर सकते हैं, कोई दिक्कत नहीं है उसमें। मैं सिर्फ अर्ज कर रहा हूं। प्रधान मंत्री जी ने जो कुछ कहा उसके लिए शुक्रिया। प्रधान मंत्री जी ने ज्यादा जिस सवाल को डील किया वह रिगिंग का सवाल है। मेरा बुनियादी तौर पर जो सवाल है वह यह कि मुसलमान बी॰जे॰पी॰ के लिए वोट नहीं दे सकते हैं इसलिए यकीनन रिगिंग हुआ है और इस पर एतराज था। प्रधान मंत्री जी ने उस पर कम रोशनी डाली है। लिहाजा इतनी इजाजत हमें जरूर दीजिए कि हम इस हिस्से के गृह मंत्री के बयान के खिलाफ एतराज कर सकें। प्रधान मंत्री जी ने अपने गृह मंत्री को एडमोनिश नहीं किया। इस प्रकार के फिजूल स्टेटमेंट के खिलाफ हम वाक-आउट करते हैं।

(कुछ माननीय सदस्य सदन से उठकर चले गये)

†[شری سکندر بخت: میں اسوقت کوئی بات کر رہا ہوں اگر آپ احکامات کریں گے۔ صادر کریں گے۔ ہم بھی کر سکتے ہیں۔ کوئی دقت نہیں ہے اسمیں۔ میں صرف عرض کر رہا ہوں۔ پردھان منتری جی نے جو کچھ کہا اسکے لئے شکریہ۔ پردھان منتری جی نے جو زیادہ

†[]Transliteration in Arabic script.

جس سوال کو ڈیل کیا وہ "ریگنگ" کا سوال ہے۔ میرا بنیادی طور پر جو سوال ہے وہ یہ کہ مسلمان بی۔جے۔پی۔ کیلئے ووٹ نہیں دے سکتے ہیں اسلئے یقیناً "ریگنگ" ہوا ہے اور اس پر اعتراض تھا۔ پردھان منتری جی نے اس پر کم روشنی ڈالی ہے۔ لہٰذا اتنی اجازت ہمیں ضرور دیجئے کہ ہم اس حصے پر گرہ منتری جی کے بیان کے خلاف اعتراض کر سکیں۔ پردھان منتری جی نے اپنے گرہ منتری جی کو "ایڈمونش" نہیں کیا۔ اس پر کارے فضول اسٹیٹمنٹ کے خلاف ہم واک آؤٹ کرتے ہیں:

"کچھ معزز ممبران ایوان سے اٹھکر چلے گئے"]

STATEMENT BY MINISTER—

Regarding-Aircraft Accident near Kullu on 11th July, 1996

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Now, there is a statement by the Civil Aviation Minister, Shri C.M. Ibrahim regarding an aircraft accident near Kulu on the 11th July, 1996. *...(Interruptions)...*

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया (बिहार): मैडम पहले आप सबसे सहमति ले लें, हाउस चलायेंगे कि नहीं? **..(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Honourable Members, would you like to sit beyond 6 o'clock? *..(Interruptions)* ... Or would you like to sit up to 6 o'clock? *..(Interruptions)* ...Mantri Ji, will you yield for a minute? I want to take the sense of the House. Honourable Members, would you like to sit beyond 6 o'clock?